॥ श्री जिनाय नमः ॥

जिन ज्ञान प्रकाश

प्रकाशक —

जशकरण सुजानमल चिण्डालिया ।

१०।१८, आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता ।

मिलने का पता —

मुकुन्दचन्द जशकरण चिण्डालिया ।

मु० सरदारशहर (राजपुताना)

नं० १६, सीनागोग स्ट्रीट, (हमामगली) कलकत्ता के

“ओसवाल प्रेस” में

बाबू महालचन्द बयेद द्वारा मुद्रित ।

वीर निर्वाणाब्द २४५७

द्वितीयावृत्ति २०००] [मूल्य



संख्या	विषय	पृष्ठांक
१	श्री आदिनाथ स्तुति	१
२	अञ्जना सती को रास	२
३	मैणरहा सती की चोपाई	४०
४	लोंकिजी की हुण्डी	६०
५	जिन आज्ञा को चौढालियो	१५३
	श्री कालूगणि के गुणों की ढाला—	
६	गणपति गुण सागर अहो २ नाथ क्षमा घणी	१८२
७	पंचम अर्के मनहर प्रगटे भिक्षु दिनकर	१८३
८	गणनायक दीन दयालु लाल स्वामजी	१८४
६	भ्रमविध्वंसन की हुण्डी	१८५
१०	तपस्वी खुलासमलजी स्वामी को चौढालियो	२३४
११	धन्ना ऋषि की सज्झाय	२४५



मिलने का पता —

(१) मुकुन्दचन्द जशकरण चिण्डालिया।

मु० सरदारशहर (राजपुताना)

(२) जशकरण सुजानमल चिण्डालिया।

२७।३८ आरमेनियन ष्ट्रीट, कलकत्ता।


विषय-सूची

भणी सुख अति घणो, दिन दिन वधै जिम चपक वेलक ॥ स० ॥ २ ॥ अञ्जना कुमरो मोटी हुई, चिंतवी ने राय चित्त मझारक। पछै वेग प्रधान तेडावियो, कहै अञ्जना वर तणो करो रे विचारक ॥ जब एक कहै रावण ने दीजिये, एक कहै दीजे मेघ कुमारक। तै पुत्र छै राजा रावण तणो, तिणरो जीवन रूप घणो श्रीकारक ॥ म० ॥ ३ ॥ जब एक कहै तुम साभलो, वरष अठारमें मेघकुमारक। चारित्र लेसी वैराग सू, वरष छाबीस में जासी मोच मझारक ॥ तो कन्या ने सुख किहा थकी, सघलाई कर देखो मनमें विचारक। मेघ कुमार ने द्यो मती, और विचारो कोई राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी तणो राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर नामक। तेहनो पुत्र दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक ॥ अञ्जन ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पिछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मडाणक ॥ स० ॥ ५ ॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, परगट हुवो छै लोक में नामक। ते पवन कुमार पिण साभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने कहै छै आमक ॥ कहै आपा जावा रूप फेर ने, जोवा ने अञ्जना तणो रूप सिणगारक ॥ पौढै मतो करी दोनू निसया, ते आय उभा महैल तले तिण वारक ॥ स०

॥ ८ ॥ हिव पवनजी निरख के अञ्जना, प्रहस्त नीचो पाली रह्या दिट्टक। रूप म जाणे देवागणा, वाणी वाल जाण कोयल बापक। चपक वरण चतुर घणो, भाल्या जाए मयनन मनानक ॥ स० ॥ ७ ॥ अञ्जना बठी मिवासण दोन पासे घनक सखिया तथा वृन्दक। वस्त्र आभूषण घणे धर्या। शोभ रही जाणे पूनम चन्दक ॥ हिव वसत माला इम उचरे वाई ने जोग जोडो मिलो शीकारक। शेठो पवनजी जाणिये, लेहवा पामी के अञ्जना नारक ॥ स० ॥८॥ हिवे बोली मिश्रा इम उचरे पहला ता वर मन चिन्तव्यो लेहक। लेहवा पवनजी वर नहीं वरस अठारह मे चारित लेहक। माच इन्द्री न जापतो वरस कावास मे पामसी मोक्षक ॥ तिण कारण वर वत्रिया कन्या ने वर तणो आवियो टोयक ॥ स ॥ ९ ॥ हिव अञ्जना मुण इम उचरे वाद धन २ ते नर नो अवतारक। काम करणी करी काटने, वेगा जी जासी मुगति मझारक ॥ गुण गाई न तिण पुरुष ना, पवनजी मुणी ने धया अति देषक। पाती रे नार कुलखणी, मनमाहे उपनो क्रोध विशेषक ॥ स० ॥१०॥ हिवे पवनजी मन माहि चिन्तवे धा रूप नें करडो अखल वखाणक। मन माहि मेली दे मापणी, विण धोखी नहीं पक्क ठिकाणक ॥ पुरुष

पराया सूं मन करे, तो दिवे करवो कौन उपायक। जो छोड़ूं तो एहने वर घणा, परणी ने परहरूं ज्यूं टुगड़ु थायक ॥ म० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम चिन्तव तिहां पवनजी, पाछा चाल्या ताम।
आया नगरी आपरी, भोगवे सुख अभिराम ॥१२॥

॥ ढाल ॥

हिवे मात पिता अञ्जना तणा, लगन लिखावियां मोटे मंडाणक। विवाह करवा अञ्जना तणो, रतनपुरी वेग मेल्यियो जाणक ॥ महोच्छव मांडियो अति घणो, बाजे रहा तिहां ढोल निशाणक। मगल गावे छे गोरड़ी, उच्छव थाय रह्या कोड कल्याणक ॥ स० ॥ १३ ॥ हिवे राय प्रह्लाद तेडावियां, जान में आवो वडा वडा राजानक ॥ हय गय रथ सझिया घणा, नेहतया स्वजन ने दियो घणो सनमानक ॥ धन साथे दियो खरचवा, मोटे मण्डाण सिर्द्ध चाल्या जानक। सामन्त दिया साथे घणा, जोधा सुभट लिन्या सावधानक ॥स० ॥ १४ ॥ हिवे बौन्द वणाय कियो घणो, गेहणा आभूषण पहरिया ताहिक। सखियां गावे रे सोहला, देवे आशीष धीतुमती मातक ॥ लूण उतारे रे बैनड़ी,

मिटानक ॥ १६ ॥ हिवे पवनजी तोरण आविया तो हो अञ्जना ऊपर घणा रे अभावक । नाम सुण्या ही राजी नहीं, मूल नहीं मन तेहनी चावक ॥ धवल मङ्गल गाई गोरडो, पूरण सासु करे बहु भातक । पिण मन मे न भावे पवन ने, ये तो परणे रे अञ्जना बालना दाइक ॥ स० ॥ २० ॥ रूपा तणो रे मण्डप रच्या, सोवन तणो माडी तिहां वेदक । सोवन पाट मोत्या जड्यो, अञ्जना ने पवनजी बेठा छे तेहक ॥ हथ लेवे हाथ मेल्यो तिहा, नयण निहाले छे अञ्जना नारक । पिण पवन ने मूल गमे नहीं, द्वेष लागे पहिली वात विचारक ॥ स० ॥ २१ ॥ हिवे पवनजी परण ने उतय्या, कीधी पहरावणी अञ्जना ना तातक । गयवर आपिया अति घणा, ताजा तुरङ्ग दीधा विख्यातक। कनक रत्न बहु आपिया, आपो छे रूपा तणो बहु कोडक । धमत माला दामो आदि दे, पाच मे दासिया सरीखी जो डक ॥ स० ॥ २२ ॥ हिवे परणी ने रतनपुरी सचय्या, साहमो आयो तिहा प्रह्लाद रायक । अञ्जना मन हर- षित थई, सासु सुसरा ना पूजिया पायक ॥ पाच सो गाव राजा दिया, आप्या छे आभरण रतन बहु मोलक। आया छे थोद ने योन्दणी, आया छे तिहा बाजते ढोलक ॥ स० ॥ २३ ॥

यक्ष ने सूंपियें निज घर सूतक ॥ मोटा रे कुल तणों उपनो, राजा हो महिन्द्र तणों वहे नायक। पजना सूं आदर कीजियें, इम कहे केतुमती ने राय प्रह्लादक ॥ स० ॥ २७ ॥ आपरो आणो पाछो मेलियो, आवें आयो वलि घडो बोरक। पजना कहे नयी चाहियें, नेल्या आभरण अद्भुत चोरक ॥ स्वामी रे मन मान्या नहीं, पीहर आय ने सूं करुं वातक। इम कही वधव मोकल्यो टुंण धरे घणो मायन तातक ॥ स० ॥२८॥ इम बारें वरस बीच मे गया, ए कथा ऊपरें ऐतोई मवमक। हिवे रावण ने वरुण कटको थई, माहोमाहि उपना अति देषक ॥ हय गय रथ सजिया घणा पायगा वखतर शोभे शरीरक। शूरा ने सुभट सिणगारिया, चालियो कटक वाजे रण भेरक ॥ स० ॥ २६ ॥ एक तेडो रतनपुरो आवियो, प्रह्लाद राय करे जावा ने साजक। पवनजी हाथ जोडी कहे, एतो छे पिताजी इम तणो काजक ॥ तुम घर बेठा लीला करो, पुत्र जाया नो एह प्रमाणक। इम कहिने आयुधशाला सचरया, हाथ मे धनुष ने लीनो छे बाणक ॥ स० ॥ ३० ॥ पवनजी चाले रे कटक मे, मन माहे चिन्तवे पजना नारक। दूर थकी पाय लागसा, भाव कुभाव देखा एक वारक ॥ वसन्तमाला माहरी वेनडी, दही

३५ ॥ हिवे अजना कहै सुण सुन्दरी, मोने दुःख माहे दुःख उपनो आजक । माथी माहे करी पातली, सासरे पीहरे गई माहरी लाजक ॥ चारित्र लेवो मोने सिरै करणी करी सारू आतम काजक । नाम जपूं जगदीश नो, तेहसूं पामियै अविचल राजक ॥ स० ॥ ३६ ॥ हिवे नगर थकी दल सचर्यो, मारग में दूर कियो रे मलाणक । चकवो चकवी तिहां टलवले, व्यापियो तिमिर ने आथम्यो भाणक ॥ पवनजी मन्त्री ने इम कहै, अजना नो मूल न लीजिये नामक । पुरुष पराया सूं मन करे, चकवा चकवी नी परे सूकी छे नारक ॥ स० ॥ ३७ ॥ मन्त्री कहै सुणो कुंवरजी, तुमे ए थही काई आणो मन में भरमक । मोटकी सती छे अजना, अहो निशि सेवती जिन तणो धर्मक । पुरुष परायो वच्छे नहीं, वचन काजे तुमे काय करो वेपक । आ शील सरोवर झूलती, शुध किया शिव गामी जाण विशेषक ॥ स० ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी मन्त्री तणा, कोमल थयु निज चित्त ।
पवनजी मन्त्री ने कहै, सुणो हमारा मित्त ॥ १ ॥
खोटो ए कारज में कयो, सतावी निज नार ।
वचन वरा से दूहवी, करवो कवण विचार ॥ २ ॥

मी मन मे प्यारो वसे, जाणूं मलियै जाय।
लोकी लाज रहै नहीं, मन मन में सुर्भाय ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

हिवे पवनजी कहै सुणो मन्त्री, हूं कटक जाऊ छू नारी ने सतापक। पाछो जाऊ तो प्रजा हसे महेला माहे लाजे माहरो वापक ॥ मन्त्री कहे छाना आवस्या, सेडो सेनापति कहे तूं रुखवालक। घमे यावा करी ने पाछा आवस्या, तिहा लग कटक नी कीजे रुखवालक ॥ स० ॥३८॥ हिवे प्रछन्न पणे दोनूं आविया, आवी ने अञ्जना नो उघाड्यो किवाडक। वसन्तमाला तब उठने, उतावली बोलि छे गाली दो घारक ॥ कहै शूरो पुरुष गयो कटक मे, कोण रे लमट आयो दूण ठामक। प्रभाते हूं राजा ने विनवी छोडाय देसूं हूं तेहनो गामक ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रहस्त मन्त्री इम उचरे, दूहा आयो छे प्रह्लाद नो नन्दक। अञ्जना तणो छै सिर धणी, वश विद्याधर दीपक चन्दक ॥ वसन्तमाला आवी ओलख्यो, नयण निहाली ने पामी आनन्दक। किवाड खोली ने माहि लिया, वसन्तमाला वधावियो नरिन्दक ॥ स० ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

अञ्जना सती तिण अवसरे बैठी सामायिक माय ।
कर्म धर्म सभालती, रही धर्म लव ल्याय ॥
वसतमाला तिण अवसरे, हाथ जोड़ी कहे आम ।
सती रे सामायिक तिहां लगे, राजा करो विश्राम ॥१॥

॥ ढाल तेहिज देशी ॥

हिवे अञ्जना सामायिक पूरी करी हाथ जोड़ी लागे पिउ ने पायक। पवनजी कहे सू मोटी सती, लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक ॥ वचन बाणां सैं मैं दूहवी, मैं तने कीधो अभाव अगाधक। हाथ जोड़ी कहु विनती, खमज्यो सती म्हारो अपराधक ॥ स० ॥ ४२ ॥ अञ्जना माय नमी कहे, एमवा योग बोलो कांई स्वामक। जेहवी पग तणी मोचड़ी, तेहवी पुरुष ने स्त्री आपक ॥ हाथ जोड़ी ने आप उभी रही, मधुर सुहामणा बोलती बैनक। कहे प्राप्ति बिण किम पामिये, आवे पत्थर गालो ने कीधो छे मैनक ॥ स० ॥ ४३ ॥ तीन दिवस रह्या तिहां पवनजी, तिहां भाव भगति तिण कीधी विशेषक। वाय टोले बैभिने करो, षटरस भोजन आपिदा अनेकक ॥ राव भाव करे छे अञ्जना, प्रीतम सू घणी मापवी रीतक। पवनजी आनन्द पाम्या

घणा, अञ्जना सू धरो अति घणो प्रीतक ॥ स० ।४४। हिवे पवनजी माशा निसले, अञ्जना बोल्यो छे जोडोजी हायक। आशा रहे कदाच माहरे लोक माने किम माहरो बालक ॥ तिण सूं मात पिता ने जणावज्यो वाहना आभरण आप्या अहनाणक। शङ्का पडे तो देखावज्यो, मात पितादिक सहु लेसी जाणक ॥ स० ॥ ४५ ॥ हिवे वसन्तमाला ने तेडी तिहा, पवनजी देई घणो सनमानक। माहरे अञ्जना राणी मारा सिरै, प्रत्यक्ष चिन्तामण ने समानक ॥ तू कारजे जतन घणा तेहना, जिम दांत ने जीभ भेला रहे जेहक। जिम तूं अञ्जना ने भेली रहे, जिम दोनै घणो भोलावणो तेहक ॥ स० ॥ ४६ ॥ वसन्तमाला ने मायक मोती दिया, बीजाई धन दियो रे विशेषक। घणी सन्तोषी छे वचन सू, वसन्तमाला कहै हरष विशेषक ॥ प्रहस्त सखी ने इम कहे, जतन कीज्यो कुवरजी ना तेहक। कुशले वेगे वेगा पधारज्यो, म्हे वाट जोवां जाणो उमय्यो मेहक ॥ स० ॥४७॥ सीख देई अञ्जना चालतां, रथ माहि आवे यथा पुरुष टुटक। सौ पुत्र आवे छे वरुण ना, तेहने आगल रथे पाछो पुठक। टाल्यन कटक छे वरुण नो, जोरमा बाप आणे मुजे अप्पारक। तिहा सवो ताणी रीत राखज्यो, मरण भलो निश्च नहीं भलो हारक ॥

स० ॥ ४८ ॥ हिवे मोल थकी रे पाछी वली, नैणा मे छूटी छे जल तणी धारक। मैं कटुक वचन कह्यो काय ने, मूह टाको ने रोवे तिण वारक॥ वसन्तमाला पाय धीरज देवै, हिवे आयो छे सामायिया कालक। देव गुरु धर्म हियें धरो, व्रत पचखाण ये लिया सभा-लक ॥ स० ॥ ४८ ॥ हिवे अञ्जना सती तिण अवसरे, कड़ो शील पाले व्रत रसालक। कर्म धर्म सभालती, सुखे गमावे छे इण विध कालक॥ ध्यान धरे देवगुरु तणो, समार नौ जाणे छे काचौली मायक। मोल मञ्झाय गुणे थोकड़ा, इण परें अञ्जना ना दिन जायक ॥ स० ॥५०॥ हिवे उदर आधान जाणी करि, अञ्जना मन मांहि हरष अपारक। धन खरचै करै धुपटा, लौकिक दान देवै शुभकारक॥ भावना भावै उलट मने, पात सुपात देवै मुक्ति ने हेतक। उछरङ्ग मन मांहे अति घणो, दान देतौ न गिणे खेत कुखेतक॥ स० ॥ ५१ ॥ हिवे रावो राजा भणी विनवे, सांभलो विनती मांहरी आपक। अञ्जना करै धन उडावणा, इण सूं धुर लगे मदन न लौधां मिलापक॥ लोड़ी मन मांहे सार रासे घणो कटक जाता पाछो पहनौं आ-मक। आप कहो तो हुं पहने, वरदखा काजे खाक तिण ठामक॥ स० ॥ ५२ ॥ राजा दिव दौधां छे

आगन्या हिवे चितुमती आलो मोटे मगडायक। साथे सहेलियां लोधी घणी, मन माहे मान बहु आयक॥ आगे वधाउडा मेलिया, अञ्जना सुणने हरषित थायक। भाव भगति करी घणी, साहमी आय मेल्या सासु ना पायक॥ म० ॥५३॥ आदर सनमान दे अञ्जना सासु न मि गई निज घर मांयक। आसन ढोयो छे बेठवा, हाथ जोड उभी छे सनमुख आयक॥ कहे मनुष्य नो करो मीन किशवी म्हारा मनोरथ पूरिया आयक। माईंतां विना इम कुण करे, माहरी सासरे मोहर बाधी छे आजक॥ म० ॥ ५४ ॥ हिवे बहू ना चिन्ह देखी करी, चितुमती गाढो धरया मन रूपक। बहू थारा भर्त्तार परदेस गया, चिन्ह किम होसि इणपरक। तूं मोटा रे कुल तणी उपनी, बिग किया ए दोनुं पख मारक। तूं मारो सुभ आगम कहे, उदर आधान किम उदर निकाल॥ म० ॥ ५५ ॥ अञ्जना सता तिण अवसरे, आभरण पवनाय आप मुक्या पायक। कटक थी कुमर पाछा वली विरह्यो छानो न आविया तायक। तीन दिवस रह्या घर मांहरे, छान आयन छानि गया तामक। आभरण पवनाव मुद्रा सैनने, हिवे सुणी छे मुझ सासुजी आमक॥ म० ॥ ५६ ॥ बहू ना वचन कान सुण्या चितुमती गाढो कोपे छे तिहक। पूरब भव तीन

परहरो; मुझ पुत्र नै तुझ किसी सनेहक। आज लगे अणखावणो सुं आभरण चौरो गै निरमल आयक॥ बिघट्यो रे दूध काञ्जी थको, हिवै सासरा सूं परि पीहर आयक॥ स०॥५७॥ सासुरा वचन काने सुण्या, अञ्जना रे मन उपनो दाझक। पुत्र तुमारो पाछो वलै, तिहां लगे मुझ नै राखो घर माहिक॥ सासरा में सासुओं तुम राखो, कहो तो ऐठ आइ नै काढू दिन रातक। चरण कमल सूं निर रहौ, इम कलह सिहूं किम पीहर आयक॥ स०॥५८॥ केतुमती राणी क्रोधे चढी, मन दारे क्रोध सूं ठेलियो सोगक। चढ मोडो नै उभो थई धड हड धुस्रो नै चलि थयो रीसक। चलगो रहि मुझ पाख थी, जिहां लगे म्हारा नगर नी सीमक॥ तिहां लगे अञ्जना इहां रहै, जिहां लगे मुझ नै अन्न पाणी तणो नेमक॥ स०॥५९॥ वसन्तमाला नै सिंडो करो, वधव पाधनै टरो है तेहक। ते चौरा आभरण म्हारा पुत्र ना। चौर टलवाल कै छिदमूं देहक। तेर पछो रे टेगे रहो, पाछे है तारणा रोवतो तेहक॥ वसन्तमाला इम सुण भणे, चौर तो चवनथो मरि तेहक॥ स०॥६०॥ हिवे कालो रे रथ जुपाविये, काणाई तुरग जोतरया है टोयक। काला ही वस्त्र पहराविया, कालो हो भूरलो टीको है तेहक॥ कालो

डो ससाक रावडी, अञ्जना ने वसन्तमाला बैसाणी ताइक । अञ्जना चाली पीहर भणी, दुःख घणो धरती मन मायक ॥ स० ॥ ६१ ॥ फिरै चालियो रथ उतावलो, आयो छै बाप तणी भूम तेहक । दूर थी मेहल देखिया, सारथी रथ पाछो वाल्यो तेहक ॥ जुहार करी अञ्जना भणी, सारथी चित्त मांहि चिन्तवै आमक । दुष्ट अकारज में कियो, मैं मन माहि अञ्जना मेल्यो दुःख ठामक ॥ स० ॥ ६२ ॥ फिरै सांझ पडी दिन आंथम्यो, रयण विडाणी घोर अन्धकारक । हाथोहाथ सूझे नहीं, दुःख वेला मुझ ने कुण आधारक ॥ नाम जपूं जगदीश नो दुःखविध काढै दुःख भारी रातक । शुद्ध सामायिक उच्चरै पटले सूरज उग्यो होयो परभातक ॥ स० ॥ ६३ ॥ फिरै अञ्जना कहै सुण सुन्दरी, मांहरा मन में अति घणो दुःखक । सोने कुडो रे कलङ्क चढावियो, फिरै तात ने किम देखालसूं मुखक ॥ माता सोय सूं मन किम मेलसो, किम कहूं भाई भोजायां सूं वातक । जिहां लगे स्वामी आवै नहीं, तिहां लगे किम काटूं दिन रातक ॥ स० ॥ ६४ ॥ वसन्तमाला वलती इम कहै, जिहां लगे निरमल उजला आवक । तिहां लगे रहु ने सुखसमधा इन्द्र दीवानपै तुम तणो वासक ॥ माता महेन्द्र दुःखी, भाई भोजाई सह निन्दी

थायक। जिहां लगै स्वामी आवे नहीं, तिहां लगी पीहर बैठा रहो आयक ॥ स० ॥ ६५ ॥ हिवे नगर नी सेरिये सचरी, गुघट काढी ने नीचोजी जोयक। इम नपी गत चालतो, नगर ना लोक जोवे सहु कोयक॥ स्वजन विछोही ए कामिनी, नाघ विहुणी दीसै छे नारक। पिछाडी से प्रजा मिली घणी, दूण पर मोहती छे माय टुवारक ॥ स० ॥ ६६ ॥ पोलि उभी राखी पोलिये, मालूम कीधी राय ने जायक। दोनू हाथ जोडी नीचो नमी, अञ्जना बाहिर उभी छे आयक ॥ राय सांभल हरषित हुवो, नगर शिणगार ने करो विछ्यातक। सनमुख मोकलो पालखी, आघो तेडावो राय प्रह्लाद नो साधक ॥ स० ॥ ६७ ॥ कान में छानि सेवक कहै, अञ्जना सासरे सी हुवो तेहक। तिण वात कही सर्व माहने, राय संभाल टुःख व्यापियो देहक ॥ मुरछागत थाय धरणी ढल्यो, सचेत थयो कीधो क्रोध विशेषक। म्हारा कुलमें कलह लगावियो, आयवा मत द्यो मारी पोल मझारक ॥ स० ॥ ६८ ॥ पोलियो पाछो आवी कहै, तुम ऊपर रुठो छे महिन्द्ररायक। मांहे आयवा मत द्यो एहने, वचन सुणी ने विलखी थायक ॥ माता रा भवन में सचरी, आघा पाछा पग पडे तिण वारक। मन माहे टुःख धरतीं थकी, विलखी थई आवी माता

हारक ॥ स० ॥ ६९ ॥ मानवेगा तिण अवसरे, आणने
अञ्जना दीठो विरङ्गक । शरीर नो रङ्ग तो फिर गयो,
काला वस्त्र पहरण अङ्गक ॥ अहनाण दीसे छै वारखा,
नयण झरे जाणे मोत्यां ना छन्दक । मुख कमलाओ
दीसे मुख, जाणे राहु ने ग्रसे ढक गयो चन्दक ।
स० ॥ ७० ॥ इम देखी माता धरणी ढली, सचेत थई
राणे बांगां जो पाडक । हा क्यों नहीं रही रे बाभणी,
इण कलङ्क आण्यो म्हारा कुल मझारक ॥ हा सगा
सम्बन्धी में किम फिरूं, लेई कटारी ने वेदसूं मांहरो
कुम्बक । एनिण कुल अञ्जना उपनी, दीधो छे दुःख में
दुःख विशेषक ॥ स० ॥ ७१ ॥ राणी ने रोवती देखने,
दासया मिल आई अञ्जना ने पासक । आदर विहुणी
इभीं किसे, माय छोडी बाई तुम तणो आशक ॥ सासु
ने सुमरा अन्ताविया, मत्राविया पीहर मांय मोसालक ।
तूं कुल विगोवण उपनी, छिरे पापणी तूं मूंढो मति
देखालक ॥ स० ॥ ७२ ॥ वसन्तमाला वलती कहै,
पदवी पहूंची ये बाली ही वायक । पवन कुमर घरे
आवसी पूछ जोज्यो तिणनो मन मांहक ॥ आ सती
छे उत्तम सी सही, गर्भ छे गर्भ तणो ए पासक । ए
कलङ्क आरा आप्या मती धरे, परमश्री आयसा री राखे
छे आसक ॥ स० ॥ ७३ ॥ इम कही दोनूं पाछी निकली,

आई भोजाया सवै घर जायक । वधव माह वैसो रया,
अञ्जना आगवै उभी छै आयक ॥ आय भोजायां मिली
तिहा, मन विना तिणा आयी छै वाहक । आंगुली लेई
दाता धरी, आयशा न दीधो तिण ने घर मायक ॥ म०
॥ ७४ ॥ इम अञ्जना घर घर फिरडी घणी, किणहि न
दीधी आयशा घर माहिक । दीन वचन मुख बोलती
नयण झरै मुख रोवती तेहक ॥ भूख तृषा करी आ-
कुली, अन्न पाणी आपै कुण तामक । उभी छै दीन
दयामणी, आडे निमाना उभी तिण ठामक ॥ म०
॥ ७५ ॥ हिवै भिगने भोजाया री इम कहै, बाई ये
आप री आपो अभागक । धुर सूं ही छाया क्यूं नी
हुवा, एह कालो किमो कर्म अगहालक ॥ अमे तो अवला
श्यूं करां, आगवै उभा रहो न लिगारक । इम घर
आया राय लावमी तुम तणा वीर ने काटसी मारक
॥ स० ॥ ७६ ॥ बन्धवा किण ही न पूछियो, स्वयम
किण ही न पूछी रे मारक । जिण दीठी छै अञ्जना
सती तिहा मोदित प्रधान कदिया हारक ॥ लोकां री
आसरा किम हुवै, अञ्जना ने तेडी रांणे घर माहिक ।
आदर भाव किहाई नर्णो, एहवा कर्म उदय हुवा
आयक ॥ म० ॥ ७७ ॥ अञ्जना देखे आसरो, मोक
आडा खड़ देवै किवारक । घर मे कोई आवन देवै

नहीं, वचन बोले लोक विविध प्रकारक ॥ अञ्जना दुख वेदे घणो, जाणे वही छे खडग नी धारक । दुख माँ दुख साले घणो, समरस धरे मन माहि अपारक ॥ स० ॥ ७८ ॥ हिवे अञ्जना तृषा रे टलवले, जल लेई आयो ब्राह्मण तोरक । राय कुँवरी पाणी पियो, शीतल उत्तम निरमल नीरक ॥ बलती अञ्जना कहे तेहने, नगर माहे तो नहीं पीऊ पाणीक । पोल बाहिर जल पीव सूं, इहां तो छै माहरा बाप नो आणक ॥ स० ॥ ७९ ॥ नगर बाहिर जल वावरे, अञ्जना वसन्तमाला ने कहे छे आमक । गहन वन मोटो उजाड में, छ आ शो पर्वत विषमो ठामक ॥ जिहा सूर्य किरण न सचरे, रात दिवस नो खबर न कायक । मानुष को मुख नहीं देखिये, तिण वन माहे तूं मुझने ले जायक ॥ स० ॥ ८० ॥ हिवे वसन्तमाला तिण अवसरे, अञ्जना नो वचन कियो परमाणक । दोनूं जणो तिहा थी निकली, मांहो माहि बोलती मोडकारी वाणक ॥ उजड वन मांहि सचरी, जोयने परवत सघन महन्तक । आव्ये लेई अञ्जना भणी, परवत बैठो जाय एकन्तक ॥ स० ॥ ८१ ॥ अञ्जना वन माहो सचरी, लोक मांहो माहि बोले छै एमक । अञ्जना ने बाहिर काढने, राय कीयो अति भूमडोसो कामक ॥ आण देशाडी रे बर

घरे, अथवा नहीं दीधो किण ही दर माइक । पेट नो
पुत्री ने पाडरी, राय नो अकल गई ठकायक ॥ स०
॥ ८२ ॥ हिवै माता कहै छै दासी भणी अंजना ने
जोवो रहो किण ठामक । दासी कहै वन में गई, हा
हा दैव सूं कीधो ए कामक ॥ म्हारी कुखि ए उपनी,
बालपणे हूंती अति घणो रागक । हिवै वन मांहे
सिंहादिक विण्डासली, इम चिन्तवी ने धरै दुःख अपा-
रक ॥ स० ॥ ८३ ॥ नित भोजन जीमती रे बालिका,
मन ने गमता छ्यार ही आहारक । मन मांहे फिकर
करै घणो, शहर में नहीं उछाह में आयक ॥ अन्न
पाणी किम पामसी, मैं मन में लाग्यो घरे कोई राखसी
बीरक । इम चिन्तवी ने घणी चिन्ता करै, रोवती
आख्या आंसू काढती नीरक ॥ स० ॥ ८४ ॥ हिवै
राजा राणी कने आयने, बोलै छै मुख थी एहवी
वायक । थे चिन्ता करो किण कारणे, बेटी आपा जोगी
नहीं छै तायक ॥ खोटो अकारज इण कियो, मेहणो
आख्यो माहरो कुल मझारक । जो पाछी पधारे रे
अंजना, तो नगर नी नारियां छोडे अनाचारक ॥ स०
॥ ८५ ॥ हिवै वसन्तमाला इम उच्चरै, बाई थारो बाप
छै मूढ गींवारक । गुरखणि माता छै तुम सधी भाया
में अकल न दीसे लिगारक । आगम न राखो रे एक

संथियो तीरक। तेरे घडी थांरी शोक टलवली टुख घणो घरतो मन मांयक ॥ स० ॥ ८० ॥ थांरी शोक रे नियम हुन्तो जो साधु हुवे तिण नगर मझारक। तो वादिया पहली तेहने अन्न पाणी रो हुन्तो परिहारक॥ विलाप कीधो तिण अति घणो, अब ते पुत्र प छो किणी संपक। अन्तराय मही दुरगाय तणो तिणसूं अथ गई थांरे कर्मां रो रासक॥ स० ॥ ८१ ॥ काल कितोएक वीता पछे, साधव्यां आई तिण नगर मझारक। ते थाणी साभल तेहनी, वैराग में लीधो संजम भारक॥ तपस्या करी अणसण कियो, आलोयां विना पटतो फेरक। कीधा जो कर्म न छूटियै तेरे घडी रा हुवा वरस तेरक॥ स० ॥ ८२ ॥ सिहरथ पुत्र ते तप करो, तुम्ह कुखि आय लियो अवतारक। माये पडोसण टुख मई, ते पिण थोरी ना कम विचारक। पवनजी वरुण सूं युद्ध करी पाछा आवसो निज नगर मझारक॥ स० ॥८३॥ ए साधु कह्यो सतीयवा और नहीं काई कारज लिगारक। बीजा साधु ने निमित्त भायणो नहीं एतो आगम विहारी हुन्ता अणगारक। त्यां कह्यो उपगार आपने, कर दियो तिहा थी उग्र विहारक। भारड पखी तणी परे, आचार पाले छै निरतिचारक॥ स० ॥ ८४ ॥ हिवे तिण काल में तिण समे, सखेदो आयने

गुंजियो गिरंद। जब जीव त्रास पाम्या घणा, धड हड धूजीगे पामिया बिहक ॥ तिण ही सिंह तणो गज साभल्यो अञ्जना भय पामी तिण वारक। राय वसन्त माला इम उचरे, वाई देवगुरु धर्म समरो नवकारक। स० ॥ ८५ ॥ हिवे वसन्तमाला विरते चढी, अञ्जना सागारी कीधो संथारक। नाम जपे जगन्नाथ नो, आंवे रे ध्यान घणो अणगारक॥ चिहु गत जीव खमावती, च्यारे शरणा चित्तवे चित्त मझारक। कहे सैंगरी कठो काया हरे, तिण मांहरी धर्म न लिये लिगारक ॥ स० ॥८६॥ हिवे वसन्तमाला इम उचरे, कहे अञ्जना महासती छे निरधारक। मोटे रे शब्द हेला करे, कोई देव देवी थाने दुखवारक॥ कोई सज्जन हुवे अञ्जना तणो ते तिण वेग सू आवज्यो धायक। उपसर्ग उपनो अति घणो वसन्तमाला बोले छे एहवो वायक ॥ स० ॥८७॥ तिण वन माहि व्यन्तर वस रहे, ते वारे जोजन तणा रखवालक। ते यक्ष कहे यक्षणी भणी, आयबे नारी थारी दोय बालक ॥ तिणसूं रक्षा करो आपां दोनों इम चिन्तव मांड्या रूप किया तैडक। तिण मांड्या सिंहने पराभवी, आठो डिसी दूर वन में केडक ॥ स० ॥ ८८ ॥ मा... ... अञ्जना भणी, देवता बोले छे दरशे वायक। मतिया मांहि हो निरमलो, आप

ग पूरा मोमूँ वाछा नहीं जायक ॥ फिर कानद उत-
सी ताहरी, कुशले भावसी पवन कुमारक। यसी मामी
ारी इहां भावसी, तू निश्चिन्त रहे इण वन मझारक।
स० ॥ ९९ ॥ एहवो वचन सुणी देवता तणो, मन
ाहे हीन रहे घनीहक। वन फल फूल तिहां वावरे,
जन धर्म तणो नहीं लोपे रे लीहक ॥ सूस व्रत पाले
निरमला, अहोनिस करे छे जिन तणो जापक।
ापस्या करे अति आकरी, अजना काटे छे सचिया
ापक ॥ स० ॥ १०० ॥ चैत्र मास धूर अष्टमी पुष्य
नक्षत्र आयो श्रीकारक। रात रा पाछला पोहरमा,
अजना जनमियो हणुमन्त कुमारक ॥ अशुची टाली
तिण अवसरे, दासो ने कहे अजना आमक। महोछव
करसी कुण एहना, कटक मे गयो छे आपणो खामक
॥ स० ॥ १०१ ॥ चादणी रात पूनम तणी, अजना कर
घर बैठी छे नन्दक। चञ्चल चपल सुहामणो, दीठा
मामी घणो हरष आणदक ॥ हरषे बोलावे रे मायडी,
कुवर तणो भजे छे लघु वैसक। तारा ने सामो रे
चालुडो, जाणे कि चन्द ने लेय झपेटक ॥ स० ॥१०२॥
फिरे मामो अजना तणो, सुरसेन राजा तेहनो नामक।
देशान्तर जाय पाछो वल्यो, आकाशे विमान थाभो
तिण ठामक ॥ वन माहें दीठो दोय बालिका, अचरज

पानो मै सोतनो नारक। जब मामो अजना ने बोलनो, मेना में छूटो छे जाण रायो धारक ॥ स० ॥ १०३ ॥ गो लागो विरु घणो भारको, पटलै मामो भायो तत त्कालक। अजना बोमणमै मिल्यो अजना रोवे है भा तुझा रालक ॥ ढोल सु चलगो हुवे नहीं, आनन्द विन धरो शोगक। जब ढोला में बेसाडो भीरने, बाई फिरे पुरमें तुम तणो भागक ॥ स० ॥ १०४ ॥ फिरे अजना अने मामा भणो माथे भायो मारे अचला पालक। तिण सुं आरो मामरा थी सो मणो, पार मे बिपति न आगे संभालक ॥ चली भाव रेसाडो राय धरा परे, तिण आरच पु भाई वन मभा र। म राग्रा पार पाने घणा, करुणा न कोई मावरो बिरि बिलारक ॥ स० ॥ १०५ ॥ फिरे बेस विमाण म मवरा, अजना रे गोद में हणुमन्त कुमारक। दीठो िष भोया रा भूमणा फूटो मे चपुम होधो है मनत ॥ तोडा मोतीं लड भूई पड़ो अजना मुरछा पावे तिण वारक। तब मामा लेई पुत भयो, आय मिल्यो अजना फिर पामन ॥ स० ॥ १०६ ॥ यांड भाली बैठो बगो, मामो वांधे तिरा बोल रमालक। बाई तिण पत्थर में कु फिरो, तिण पड़ो कटे शो न देखो बारक ॥ प्यारा वचन बहे अजना भणो, आयो है

हणुपाटण मझारक ॥ करै महोत्सव अति घणो, नाम दियो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १०७ ॥ अञ्जना हनु मन्त इहां रहे, पवनजी पहुंचा छे लङ्कापुरी जायक। तिहां रावण राजा सूं मुजरो कियो, जब रावण बोलै छै एहवो वायक। पवनजी थाद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो मेलायक। वरुण राजा ने हटाय ने, वर्तावज्यो तिहां माहरी आयक ॥ स० ॥ १०८ ॥ हिवे मेवपुरी दल सचर्यो साहमा घरसै तिहां वागना मेहक। पिण पवनजी पग नहीं पातरै माहो मांहि मनुष्य मुआ घणा तेहक ॥ बारस दिवस विग्रहो रह्यो, पछे माहो माहें मेल कियो ताहक। आण वरतावी रावण तणी, पवनजी हरष पाम्यो मन माहक ॥ स० ॥ १०९ ॥ हिवे कटक आयो रे लङ्का भणी, राजा रावण ने कियो जुहारक। जब रावण वस्त्र वागा आपिया, वले आप्या छे शोभता घणा शिणगारक ॥ केई एक दिन राखिया, पछे रावण सीख दीधी तिण वारक। पवनजी थाद राजा भणी, ते आया छे निज नगर मझारक ॥ स० ॥ ११० ॥ पवनजी कुशले घर आविया, मात पिता सर्व लाग्या छे पायक। जेटले माता भोजन करे तेटले अञ्जना ने घर जायक ॥ सूनां रे महल मालिया देखिया, झुरवे छे तिहां अति घणा

कहे पवनजी आप पधारिया, जय अजना ने पीहर हुई चिन्ता अपारक ॥ म० ॥ ११५ ॥ महिन्द कहै ४ मल पामियो, मे दुष्ट अकारज कीधो रे आयक। हाजरिया लोग माहरे घणा, पिण डाह्यो नहीं कोई चतुर सुजाणक ॥ सोख नी वात कीने नहीं कही, मनमा माहरे उपनी बहु रीसक। नरक मियाणो मैं वाधियो हिवै दुष्ट कमा यो किम छूटीसक ॥ म० ॥११६॥ हिवे पवनजी आय पधारिया माभन मासु पड़ो गिर भालक। पेट कूटे दोनू हाथ सू, उदर आधान किहा गई बालक ॥ मन माहे दुख वेदे घणो, जाणे कोई जोर सू लागे छै बाणक ॥ अजना नो दुख वेदे घणो, तिम २ बोले छे रोवती वाणक ॥ स० ॥ ११७ ॥ माथे सैन्या लेई चतुरङ्गिणी, सुसरो जवाई रे साहमो जो जायक। बाह पसारी दोनू मिल्या, दोना रे दुख घणो मन मायक ॥ जव पवनजी कहे राजा भणी, तुम पुत्री ने काढी इम तणो मायक। ए दोष नहीं तुम माहरो, जव पाछो राजा सू बोल्यो नहीं जायक ॥ स० ॥११८॥ हिवे पवनजी निज घर आणने मरदनिया मरदन करने करायो स्नानक। वलि चोवा चन्दन चरचिया, गहणा वस्त्र पहरिया प्रधानक ॥ पछे भोजन मडप आयने, परुपिया भोजन विविध पकवानक। पिण पवनजी कवो

मन्त्री तणा, अञ्जना ने दोनू जोवा चाल्या छै तामक ॥ स० ॥१२३॥ हिवे महेन्द्र राजा पिण माधे हुयो, वले प्रह्लाद राय आयो लिई साथक । वलि माता पिण धाई छै रोवती, साभण पुत्र एवा माहरी वातक ॥ अन्हे खबर कराया अञ्जना तणी, थे तो आवो निज नगर मझारक । नारी फाजे लाज छोडो मति, पवनजी नहीं मानो वात लिगारक ॥ स० ॥ १२४ ॥ तब अनेक विमाण चलाविया, वलि शूरमा पुरुष फेर्या असवारक । ठाम ठाम जोवे अञ्जना भणी, मुख सू बोले छै पवन कुमारक ॥ जो सती लाभे तो हूं जीवस , नहीं तो अकालि कर देसू कालक । देश परदेश फिरता थका, अञ्जना सुणी छै निज मोसालक ॥ स० ॥ १२५ ॥ जब पवनजी चाल्या छै आगलि, पीछे आवे छै मगनो जी साथक । जब वसन्तमाला पवनजी ने ओलख्या, कहे अञ्जना ने आव्यो छै तुम तणो नाथक ॥ जब अञ्जना आय पाये पडी, खोला मे बेसाड्यो हणुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १२६ ॥ वसन्तमाला आय पाये पडी, हियासूं भिडि पवन कुमारक । कहो बाई टु ग तुम किम सह्या, किम मही माहरी माय नी मारक ॥ किम करी वनफल,वीणिया, किम करी रही वन मझारक । किम करी काल गमाविियो, किम करी पाल्यो, हणुमन्त कुमा-

रक ॥ स० ॥ १२७ ॥ स्वामीजी आप कटक में पधा
रिया, सासरे पीहर म्हाने दियोजो छेहक । तिण मू
करी म्हें वन मे गई, वनफल भखि ने काढिया
दिहक ॥ तिहा मोटा मुनिवर भेटिया, वले देवता
कीधी छे हम तणी सारक । रात दिवस धर्म पालता,
मामो लेई आयो इण नगर मझारक ॥ स० ॥ १२८ ॥
हिवे वसन्तमाला अने अञ्जना, पवन ने बोले छे मधुरी
वाणक । आप किम कटक मे सचर्या, किम सझा
राजा वरुण ना वाणक॥ जब पवन कुमार इसडी कहे,
मैं वरुण राजा सू युद्ध कियो तेयक । जब घाव लागा
ते साजा हुवा, जीत फते कर आयो छू एयक ॥ स०
॥ १२९ ॥ हिवे अञ्जना सती तिण अवसरे, सासु सुसरा
ने लागी जी पायक । जब सुसरो आख्या आसू भरे,
मैं कलङ्क देई ने कीधो जी अन्यायक ॥ अञ्जना पाय
नमी कहे, बापजी किम करो छो विलापक । दोष नहीं
छे तुम तणो पोते हा माहरे बोहला पापक ॥ स० ॥
१३० ॥ वले माता पिता सू जाय मिली, भाई भोजाई
सू अति घणो नेहक । माता पिता ते रोवे घणा,
अञ्जना मात पिता ने कहे छे तेहक ॥ थे चिन्ता करो
किण कारणे, पोते हा माहरे बोहला पापक । तिण
कारणे, मैं दुःख भोगव्या, मून न करज्यो कोई सन्ता-

यक ॥ स० ॥ १३१ ॥ हिवे हणुपाटन घो थानिया, अञ्जना ने मामे आपी घणी आयक । साथे आयो मडुआयवा, चतुरङ्गिणी सैन्या लेई साधक ॥ साथे तो परजा अति घणी, रतनपुरी आया मोटे मगडायक । उछरंग मन माहे अति घणी, घर घर वरत्या छै कोड कल्याणक ॥ स० ॥ १३२ ॥ हिवे सीख देई मामा भणी, अञ्जना सती पवन कुमारक । सुख भोगवे संसार ना, माहो माहि लग रही प्रीत अपारक ॥ काल कितीक गया पछे, राजा राणी त्यागी जाण्यो समारक । राज देई पवनजी भणी मोटे मगडाय लीधो संयम भारक ॥ स० ॥ १३३ ॥ पवन नरिन्द राज भोगवे, अञ्जना राणी सू हेत विशेषक । हणुमन्त कुमार विद्या भणे, वानरी आदि विद्या भण्यो अनेकक ॥ चतुर विचक्षण अति घणो, देश प्रदेश में हुवो जी विख्यातक । वसन्तमाला रो मान वधारियो, सगलाई पूछ करे तेहने वातक ॥ स० ॥ १३४ ॥ हिवे वरुण राजा तिण अवसरे, आपणा पुत्र ने जाणी सजोरक । बल पराक्रम देखी आपणो, मन मांहि धरे अति अभिमानक ॥ तिण लङ्का भणी दुत मोकल्यो जो ताहरे युद्ध करवा तणो भावक । तो थांजा सुभट दल मोकलो, तुम्हे एकर सू जीवा सुभ आयक ॥ स० ॥ १३५ ॥ रावण सैन्या मेली घणी एक

नहीं तिणवारो। मणरथ राजा रे जुगवाहु भाई, माहो माहि छै प्यारो॥ रा० ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री ना भोग भोगवता, नाटक पडे दिन रंगो। विविध प्रकार नी क्रीडा करता, विषय विरोध मंडाणो॥ रा० ॥ ७ ॥ मणरथ राजा राज भोगवता चढियो महल उदारो। तिण अवसरे मैंणरह्या दीठी जुगवाहु नी नारी॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने राजा अचरज पाम्यो अहो अहो रूप तुमारो। इण राणी ने हूं महल में राखूं, सुख विलसूं ससारो॥ रा० ॥ ९ ॥ मणरथ राजा कर मन सुधो, जुगवाहु ने बुलायो। करो मजाई आयुधशाला नी, छ टेग लिखण ने आयो॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ जोडी ने जुगवाहु ने बोल्यो, थो तो छै थोडो कामो। राज विराजो राजसभा में, हूं जासूं भाई तामो ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणरथ राजा राजी हुवो, हुकुम कियो छै भाई देश किलो कायम करी आवो ले जावो फौज सवाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ जुगवाहु तो उठ्यो मताथ सूं, हरष हुवो मन माहि। किलो कायम कर पाछो आसूं, जब मुजरो करूला भाई॥ रा० ॥ १३ ॥ ले फौजा जुगवाहु चाल्यो, मजला मजला जायो। जुगवाहु तो मन में नहीं जाण्यो, मणरथ कियो उपायो॥ रा० ॥ १४ ॥ मणरथ राजा मेणरह्या कारणे सारी वस्तु मगावे।

गहणा जडाव रा पहरण सारू, दासी रे हाथ पहुचावै ॥ रा० ॥ १५ ॥ दासी राजा रे हुकुमे छानें, वस्तु लेइ देवे राणी ने जायी। मणरथ राजा चोज बणावा, तिणरी खबर न कायी ॥ रा० ॥ १६ ॥ मेणरखा मन माहि जाण्यो धणी चाल्यो छै गामो। मेणरखा मन ऊणो जाणी जेठ पिता री ठामो ॥ रा० ॥ १७ ॥ इम जाणी ने राणी करा लीधा, वस्तु आभूषण सारो। मनेही वस्तु मेली, जाण्यो राजा लागो म्हारी लारो। रा० ॥ १८ ॥ मेणरखा ने रोसज आई, दोनी दासी ने भाभकारो। धणी तो म्हारो परदेश सिधायो, राजा पडिया म्हारी लारी ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी तो मन में दिलगिर हुई, राजा पासि आई। मेणरखा तो महा राज कोप करी ने, दोनी वस्तु वगाई ॥ रा० ॥ २० ॥ मणरथ राजा रात समय में, महल भाई रे आयो। दरवाजो तो जडियो दीठो, हेलो मारे छै रायो ॥ रा० ॥ २१ ॥ मेणरखा तो मन माहि जाण्यो, मणरथ राजा आयो। बीजो तो कोई उपाय न दीसे, हू सासु ने दु रे लगायो ॥ रा० ॥ २२ ॥ मेणरखा तो छाने आय ने दोनो सासु ने जगायो। ममता मसता माता जाण्यो, बेटो भोलि आयो ॥ रा० ॥ २३ ॥ थो तो मणरथ बेटा सुगबाहु रो, महल पिलो कानी थारो। बचन

माता नीं साभल राजा, लाज्यो छै तिणवारी ॥ रा० ॥ २४ ॥ मेघरथ्या मन माहे जाण्यो पड़ियो राजा म्हारे लारे। तो कासीद मेलूं धणी ने, वेगा आवज्यो इण वारे ॥ रा० ॥ २५ ॥ कोती वात लिखी कागद मे, जीवती जाणो मोने। तो पाछा घरे वेगा आवज्यो, दगो कियो छै थाने ॥ रा० ॥ २६ ॥ कासीद कागद दियो सताव सूं, जुगबाहु ने जाई। कागद वचाने जुगबाहु जाण्यो, दगो कियो छै भाई ॥ रा० ॥ २७ ॥ इम जाणी ने जुगबाहु वलियो, ढील न कीनी काई। मुहूर्त नहीं मङ्गला आवण री, नीमित्तिये वात वताई ॥ रा० ॥ २८ ॥ जुगबाहु तो डेरा बारे कीना, नगरी मे नहीं आयो। मणरथ राजा री डर जाणी ने, राणी धणी कने जायी ॥ रा० ॥ २८ ॥ मेघरथ्या मित आप धणी री, पर पुरुष प्रीत न जाणी। ब्रत आप री राखण माटे, जतन करे छै राणी ॥ रा० ॥ ३० ॥ मेघरथ्या तो पहुती मताव सूं, विध सूं वात सुनाई। जुगबाहु तो मन मे न आण्यो, मारेलो मने भाई ॥ रा० ॥ ३१ ॥ जुगबाहु ने आयो जाणी ने, डर उपनो राजा रे। मण-रथ राजा करे विमासण, उमराव छै इण रे मारे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ जुगबाहु ने राणी कहे छै, दगो करेलो थांरो भाई। माथ ममान छै इण रे मारे, तो हूं पहुंलो

मारण री, जाव जीव पच्चक्खाणो। सर्व प्रकारे सुपा-वादे अदत्तादान मे जाणो ॥ रा० ॥ ४३ ॥ मोरा प्रीतमजी थाने मैथुन सेवण री, नवविध वाड प्रमाणो। मनुष्य देवता तिर्यञ्च सवन्धी, जावजीव पच्चक्खाणो ॥ रा० ॥ ४४ ॥ मोरा प्रीतमजी थाने क्रोध मान री, माया लोभ ए च्यारो। मन मे तो ममता मती राख-ज्यो, जावजीव परिहारो ॥ रा० ४५ ॥ मोरा प्रीतम जी ये राग द्वेष दोई, वध करमा रा जाणो। कलह अभ्याख्यान पैशून्य छाडी पर परिवाद पच्चक्खाणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ मोरा प्रीतमजी रति अरति इम जाणो, मायामोसो नही भलो। पाप अठारे विविध वोसराज्ञ, मिथ्या दरशणसल्लो ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मोरा प्रीतमजी मरण तणो भय न आणो, धर्म साथी करि जाणो। परभव मे तो साथे चालसी, गाठे बाध्यो नाणो ॥ रा० ॥ ४८ ॥ मोरा प्रीतमजी थे मोह घणो मन वालो, मोह मे जीव मती घालो। करो आलोयणा कारज सवे ज्यू, मत राखो कोई सालो ॥ रा० ॥ ४९ ॥ मोरा प्रीतम जी दश हष्टान्ते, मनुष्य जमारो दोहिलो। इण भव मे जी पुन्य करे तो, परभव सुख सुहेलो ॥ रा० ॥ ५० ॥ मोरा प्रीतमजी थाने विचारो, सुपना री माया जाणो। डाभ अणी जल बिन्दु जिम जाणो, मन में समता

॥ ६० ॥ मेघरथा मन माहि लाख्यो पकडैलो मोने
रायो । वेष बदलने परी निकली दासी नाम धरायो
॥ रा० ॥ ६१ ॥ डेरा माह सूं तो बारे निकली, गई
उजाड रे मायो । पूरी आपदा कोई नहीं मावे, राणी
र कुंवर जायो ॥ रा० ॥ ६२ ॥ जिण जाया देशोटन
हुन्ता बांटता राज बधाई । विषय वियोग मे कुंवर
जायो, ओढ्यो करम कमाई ॥ रा० ॥ ६३ ॥ बापो
पाछलो राणी डरपे रखे आविलो कोई लारो । इम
जाणी ने कुंवर छ बायो, हुई करमा रे मारो ॥ रा०
॥६४॥ कोमल काया न कारण पडियो, पाव पडे नहीं
ठायो । कुमर तो राणी निभतो न जाण्यो, बालक मेले
वन मायो ॥ रा० ॥ ६५ ॥ चोर विहाई ऊपर सुभाण्यो,
बाल विछोहो जाण्यो । होतव थारो जो होसी रे जाया,
मेघरथा दुःख आण्यो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ कुंवर मेल राणी
आगी चाली अन्न बिना सूनी काया । कठै सुखावड
कुण महल मांहे, करमा चैन दिखाया ॥ रा० ॥ ६७ ॥
घणा दास ने दासी हन्ता, राजकुंवर नो धायो । होटी
पडदा माहि रहती, राणी पडली आयो ॥ रा० ॥ ६८ ॥
जाती जाती आगे नदी आई, पाणी मे वस्त्र पखाल्या ।
ध्यान करी ने तीरज बैठी उठी दुःख री भाला ॥ रा०
॥ ६९ ॥ पीव वियोग पड्यो तो माहे, किमे ठिकाने

पाई। रोहो में भमतो एकलड़ो रोरे छे [illegible]
॥ रा० ॥१०॥ जिण घर जनमो जिण घर आई [illegible]
रो राणी कहवाई। साहिब म्हारो मुयो सेमो [illegible]
मे आई ॥ रा० ॥ ११ ॥ कपट विहोणो मात पिता रे
जुगवाहुभ लघु भाई। जुगवाहुभ ने मडलां मेल्यो [illegible]
छे वन मांहि ॥ रा० ॥१२॥ मदन भरोग्या शोभा [illegible]
री, राजविया कमनाई। कंवर माहिथी उभी मेली [illegible]
घोर नदी रण मांहि ॥ रा० ॥ १३ ॥ विषम उजाड [illegible]
थाय वेठी नो सुख नहीं तिल रती। मैणरेहा [illegible]
दुःख करतो वैठो सट्ट पयो छ मतो ॥ रा० ॥१४॥
भूरे धणीन करे विलाप दुःखभर छाती फाटे। [illegible]
रह्या नो दुःख प्रभु जाणे, येठी छे तट माटे ॥रा०॥१५॥
सजोग रूपणी राही कुल्ली विजोग तिण वाली। [illegible]
विछुयो दुःखनी करती, थाणी रण मे रोली ॥ रा०
॥ १६ ॥ देवो सगाई इण ससार मे, विछडता [illegible]
वारो। इम जाणी ने सतगुरु सेवो, लाहो लीज्यो [illegible]
॥ रा० ॥ १७ ॥ तिण अवसर में देवता इम [illegible]
दुःख करे छे राणी। वैक्रिय रूप कियो हाथी रो, [illegible]
माडी माणी ॥ रा० ॥ १८ ॥ दुःख विसारण [illegible]
कियो सूड सू उछाले पाणी। दुःख छोडी ने [illegible]
दीठो, रमत देखे राणी ॥ रा० ॥ १९ ॥ जिम [illegible]

रमत देखे राणी, अचरज रमत भारी। धर्म चकुरो पुन्य सञोगे, चाहै छे नर नारी ॥ रा० ॥ ८० ॥ देवता छै कोई पर उपकारी, राणी ने सुङ मूं भाले। जिनरे मेहा आय निकलिया, लेके विमाण मे मेले ॥ रा० ॥८१॥ विद्याधर तो राजी हुवो, रूप घणो इण नारी। तुरत विमाण में लि पाछो वलियो सुख विलसा ससारी ॥ रा० ॥ ८२ ॥ मैणरह्या तो मन में जाण्यो, तुरत वल्यो छै पाछो। कुण जाणे कुण देश ले जावे, औ तो नहीं दीसे छे आछो ॥ रा० ॥ ८३ ॥ विद्याधर ने मैण-रह्या पूछे, जाता किण दिस भाई। अबे तो थे पाछा वलिया, काई दिल में आई ॥ रा० ॥ ८४ ॥ भगवन्त ने तो दरशण जाता, तो सरोखी मिली नारी। हूम जाणी ने पाछो वलियो, सुख विलसा ससारी ॥ रा० ॥ ८५ ॥ मैणरह्या मीठे वचने दाखवे, भगवन्त दरशण जाता। मारग मे थाने हूं मिली छूं नफो घणो दरशण करता ॥ रा० ॥ ८६ ॥ तीर्थङ्कर ना दरशण करता, प्रसन्न होसी थारी काया। त्रिद्याधर तो पाछो वलियो, मैणरह्या रे मन भाया ॥ रा० ॥ ८७ ॥ समवसरण म मेहा आया, विमाण सू उतरिया। कर वन्दणा ने सुने व्याख्यान, कारज सगला सरिया ॥ रा० ॥ ८८ ॥ जुग-बाहू तो देवता हूवो, उद्यो छे दमग थाणी। सिघला

॥ रा०॥ ९८ ॥ भरी परषदा में मैणरक्षा उठी, बोलै छे करजोडी। आज्ञा द्यो तो स्वामी सयम लेऊ, टालूं भवतणी खोडी ॥ रा० ॥ ९९ ॥ देव कहे थाने आज्ञा म्हारी, ल्यो थे सयम भारी। जुगबाहु तो उरण हुवो मैणरक्षा ने तारी ॥ रा० ॥ १०० ॥ मोने तो विद्याधर लायो परवश बात प्रकाशी। कठे विद्याधर कह्यो देवता, गयो विद्याधर न्हासी ॥ रा० ॥ १०१ ॥ मैणरक्षा तो सयम लीधो, ज्ञान भणे गुरुणी पासे। विनय करी ने आज्ञा पाले, सुमति गुप्ति प्रकाशे ॥ रा० ॥१०२॥ देवता तो मन मे हरषज पाम्यो, पूज्या प्रभुजी ना पायो। साधु साध्वी सर्व वादी ने, आयो जिण दिश जायो ॥ रा० ॥ १०३ ॥ देवता तो आपणे ठामे पहुन्तो, मैणरक्षा सयम पाले। बालक तो मारग मे मेल्यो, आमरा पुन्य रुखवाले ॥ रा० ॥ १०४ ॥ ना तो कोई हिन्सक नेड़ो आयो, नहीं कोई पक्षी खायो। देखो पुन्याई के प्रभाव थी, सुकृत कीनी सहायो ॥ रा० ॥ १०५ ॥ मिथिला नगरी नो पदमरथ राजा, चढियो शिकारज सोई। पाप करन्ता पड़ै आधरो, पूरव सुकृत होई ॥ रा० ॥ १०६ ॥ कर असवारी राजा रण मे फिरता, जोवे जीव सब कोई। रण माहि तो बालक सूतो, दीठो राजा सोई ॥ रा० ॥ १०७ ॥ बालक नेड़ो

राजा आयो, रूप देखने अचरज पायो। बालक को
पुण्यवन्त दीसे, राजा रे मन भायो ॥ रा० ॥ १०८॥
म्हारा राज में पुत्र नहीं छै, म्हारे सहजे आयो। ओ
रूप बालक ने उरो लेऊ, सौंपूं राणी ने आयो ॥ रा०
॥ १०९ ॥ कुवर लेई ने राजा पाछो वलियो, आयो
राज दुवारो। पुष्पमाला राणी राय तेडावे, पुत्र दियो
छै करतारो ॥ रा० ॥ ११० ॥ नव मास तो भारा मरे
छै, देवता पितर मनायो। आपणे पूरब पुण्य करी ने
कुवर सहज मे आयो ॥ रा० ॥ १११ ॥ अपणा राज मे
पुत्र नहीं छै, करो इणरी प्रतिपालो। राज लायक ओ
कुवरज दीसे, होसी राज रुखवालो ॥ रा० ॥ ११२॥
भार भोलावण देई राणी ने, कुवर खोले घाल्यो।
पुण्यवन्त राज में आया पीछे, भोमिया नमी ने चाल्यो
॥ रा० ॥ ११३ ॥ भोमिया म्हारे अनमी हुन्ता, कुवर
राज में आयो। भोमिया म्हारे सर्व आकर हुआ, नमीय
नाम दरसायो ॥ रा० ॥ ११४ ॥ नमीय कुंवर मदनरा
राजा दिन दिन वधतो होई। मात पिता अंत
विछोहो, ते सुणज्यो सहु कोई ॥ रा० ॥ ११५॥ जुगबाहु
ने मणरथ मार्यो, विषया रस रे आयो। पाछा वलता
ने सांपने खाधो, गयो नारकी मांयो ॥ रा० ॥ ११६॥
दीसू राजा रो मरण हुवो, खबर हुई नगरी मांई।

संथरद्या तो निकल नाठो, तिण री खबर न काई ॥ रा० ॥ ११७ ॥ ससार नो तो कारज कियो, राज जुग वल्लभ ने दियो। किण ने दोष न दीजे रे प्राणी, करम आपरा कियो ॥ रा० ॥ ११८ ॥ जुगवल्लभ तो राज करे छे - वरते छे चोयो आरो। बाप तणी मन मे थोडी आवे. पिण दुःख वरते माता रो ॥ रा० ॥ ११९ ॥ नमी कुमार तो मोटो हुवो, विरह मद्यो राजा रो। नमी कुमार ने राज बैसाख्यो, सुख विलसै ससारो ॥ रा० ॥१२०॥ जुगबाहु तो देवता हुवो, मैं धरद्या सयम पाळै। जुगवल्लभ ने नमी भाई, दोनू राज सभवाले ॥ रा० ।१२१॥ आठ करम छे महा जोगवर, जोवा ने फोडा पाडे। न्यारा ने तो न्यारा कीना, करतब खेल दिखाडे ॥ रा० ॥ १२२ ॥ दोनू राजा राज भोगवता, अटवी पड़ी है सीमाडे। भूमि आपणी राखण सारू, करे राज मीराडे ॥ रा० ॥ १२३ ॥ जुगवल्लभ तो मन सें आण्यो, आयलड दिसे कठारो। देखोंगे म्हारी धरती लिमी, राजविया पहदारो ॥ रा० ॥ १२४ ॥ जुगवल्लभ तो फौजा ले चढियो, काकड सीमे आवे। नमी राजा मन में कोप धरी ने, मन मे मगज न मावे ॥ रा० ॥ १२५ ॥ नमीराय तो करी सजाई, बोले छे थाकी वाणी। मरम मोसो बोले माता रो, चढ़ियो छे क्रम

जाणी ॥ रा० ॥ १२६॥ तिण अवसर सें मैं
मन मे इसडी आणी । अङ्ग जात छे दोनूं
नहीं छूठे पुन्य प्राणी ॥ रा० ॥ १२७ ॥ घणा
घातज होसी, मरसी घणा अजाणी । यासू बचे
उपगार कीजे, मैं धारद्या मन माणी ॥ रा० ॥१
कार वन्दना गुरणी ने पूछे, आप कहो तो हूं जाऊ
दोनूं राजा रे राड मडी छे, हू जाई ने समझाऊ
रा० ॥ १२८ ॥ माहो माहि तो कोई न हटसी,
जात छे म्हारा । घणा जीवा नो घातज होसी,
थाम एक दया रा ॥ रा० ॥ १३० ॥ देखो
राजविया री, गुरणी तो पिण नहीं बरजे । बात
री सेंठी राखने, पीछे परोपकार करीजे ॥ रा० ॥१
कार वन्दना ने मैं धारद्या चाली, ले सतिया नी
सुगवल्लभ सू तो सैन्य पिछाण, पहिली उण सू
॥ रा० ॥ १३२ ॥ काकड सीमा ठौड ठिकाने,
मडो छे दोई। सुगवल्लभ नो लशकर पूछी, चाली
ध्या सोई ॥ रा० ॥ १३३ ॥ मैं धारद्या सती
गरोरी, आप तीरे पर तारी । राज कचेडी सूं
पाई, निजर पडी राजा री । रा० । १३४ ।
तो उठ्यो मतावे सूं, विनय कायो छे भारी ।
थाठ मग माहमी आई ने, महासतिया क्षेम पधारी ॥

रा० ॥ १३५ ॥ मैं थाहरो तो कहै राजा ने, कारण पड़ियो तोम्यु भारी। फौज बस्ती तो थे मेली कीनी, मैं तिण मूं कारण विचारी ॥ रा० ॥ १३६ ॥ आय लड़ म्हारी धरती लेसी, नीच चण्डाल घर आयो। साथ सामान दूण मेलो कीनो, तिण कारण चढ़ी आयो ॥ रा० ॥ १३७ ॥ बेटा छो थे राजविया रा, बोलो बोल विचारो। और था ऊपर कोण चढ़ आसी, यो भाई छै थारो ॥ रा० ॥ १३८ ॥ बात सुणी ने राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे। भारी वचन कह्यो माता ने, राजा ने नहीं सोवे ॥ रा० ॥ १३९ ॥ जुगबाहुम तो कहै माता ने, थे लीधो संयम भारी। मोत आपदा किण विध हुई बात कहो विस्तारी ॥ रा० ॥ १४० ॥ मण रथ राजा थारा पिता ने मार्यो, हूं रात ने निकली आई। जनम तमो रो वन में हुवो, हूं मेल आई वन में भाई ॥ रा० ॥ १४१ ॥ तीर नदी ने बैठी हुन्ती, विमाण विद्याधर जो आयो। देव उठाय ने मोने माहे मेलो, हूं गई समोसरण मायो ॥ रा० ॥ १४२ ॥ पिता तो थारा देवता हुवो, दरशण प्रभु का आयो। आज्ञा मांगी ने मैं तो संयम लीधो, सेव्या प्रभु रा पायो ॥ रा० ॥ १४३ ॥ दोनूं राजा रे मैं वैरज सुणियो, लड़सी मांहो मांई। घणा आदमी मरण पामसी, तिण कारण

छ आई ॥ रा० ॥ १४४ ॥ जुगवल्लभ राजा
ने, चिन्ता फिकर मन आई। जुगवल्लभ तो बड़े
ने, जाय मिलूं छु आई ॥ रा० ॥ १४५ ॥ ठीक
छे नमी राय ने, यो छे म्हारो भाई। महीं
राजवियां फेरो, तिण सूं मिलूं छु पहली आई।
॥ १४६ ॥ जुगवल्लभ ने तो दियो समझाई,
कने जाय। सतिया निजर पड़ी राजा री, विनय
साहमो आय ॥ रा० ॥ १४७ ॥ हाथ जोड़ी ने
बोल्यो, महासतिया किम आई। का सूं कारण
थारे, इसड़े अवसर मांई ॥ रा० ॥१४८॥ कांई
थांरे दोनूं राजा रे, झगड़ो पड़ियो माहो मांई।
मन्यो तो ये मेलो कीजो, तिण कारण छु आई।
॥ १४९ ॥ थाप माथ्यो मे मा निकल भागी,
जिण रे मारे। देखो ने ए म्हारो धरती लेसी,
सनमुख माता रे ॥ रा० ॥१५०॥ बेटा ये छो •
रा, बोली बोल विचारो। थोर या ऊपर कुण
थामो, माई छे भी थारो ॥ रा० ॥१५१॥
मोटो मेल्यो खबर पड़ी अनुसारे। नानो वालक
जाणो, वात कही विस्तारे ॥ रा० ॥१५२॥ वात
ने राजा मान्यो, औधो मुख करी जोवे। भारी
कही माता ने, राजा मे मही सोवे ॥ रा० ॥

नमी राजा तो मन माहि जाण्यो, जुगवल्लभ राजा म्हारो भाई। मेह सनेह धरी दोनूं बैठा रो, तिण मं मावो थाई। रा०। १५४। नमी राजा तो मिलण चाल्यो, जुगवल्लभ सामो जाई। हरख भाव मूं बाह पसारी, मिलिया दोनूं भाई ॥ रा० ॥ १५५ ॥ एकण हाथी रे होदे बैठा जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ रा डेरा कानी, हुई घव हरख सवाई ॥ रा० ॥ १५६ ॥ लोक लड़ाई रो याता करता, नडता डोडा डोडी। लोका मन में घवराज पाम्या काई कियो दुण मोडी ॥ रा० ॥ १५७ ॥ बैर मिटाय ने मेल करायो, घणा लोक हुवा राजी। घणा जणा रा माथा मडता, राम्या छै दुण माजी ॥ रा० ॥ १५८ ॥ लोक राजा रे कुशलज हुवो, घर घर हरख वधाई। भलो होज्यो दुण सती फिरी यश लीधो जग माई ॥ रा० ॥ १५९ ॥ राज कचेडी में आई बैठा जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ मुख थकिर जाणो मे, बैरागरो मन में थाई ॥ रा० ॥१६०॥ जुगवल्लभ कहे मोने दीक्षा लेण दो, राज करो मश-रायो। राज कहि ने सर्व सम्पदा में थाने भोलायो ॥ रा० ॥ १६१ ॥ जुगवल्लभ तो दीक्षा लीधी, हरख घणो मन माई। भाई विछोहो दुःख री लहरां, नमी कुमर ने थाई ॥ रा० ॥ १६२ ॥ नमी राजा तो राज करे छै,

राणी एक सौ आठो। कुवी नाटक ने घुरे नगारा
दोनू राज री पाटो ॥ रा० ॥ १६३ ॥ दाघ ज्वर ने
जोग करी ने, लिमी संयम भारी। इन्द्र परीक्षा करवा
आयो उत्तराध्ययन विस्तारी ॥ रा० ॥ १६४ ॥ दोनूं
भाया रे मेल करायो मैणरज्या पाछी आई। गुरणी रे
रे पाय लागने, विध सूं वात सुणाई ॥ रा० ॥ १६५ ॥
मोटा राजा रे मेल करायो राखी घणा री वाजी।
मैणरज्या ना गुण जाणी ने, गुरणी हुई छे राजी ॥ रा०
॥ १६६ ॥ छत्तीस हजार आरज्या माहि, गुरणी चन्दन
वाला। तिण रे पाटे पदवी पाई शिष्यणी रतना री
माला ॥ रा० ॥ १६७ ॥ चेडानी जे साते पुत्री, सगरत
आप वखाणी। चेलणा मगावती तीजी प्रभावती,
चौथी शिवादे राणी ॥ रा० ॥ १६८ ॥ पाचमी पदमा
वती छठी सुलसा जेष्ठा सातमी जाणी। मइट पद्मा
मती शीलव्रत राख्यो दमयन्ती नल राणी ॥ रा० ॥ १६९ ॥
अञ्जना सती छे महिन्द्र राजा री बेटी, विणरी महीं
बन मांहि। मइट पद्मा सती शीलव्रत राख्यो, यश
कीरत जग मांहि ॥ रा० ॥ १७० ॥ सती द्रौपदी री
थाणी हुई यश लीधो जग मांहि। मोटा राजा री वि
रोध मिटायो मैणरज्या री अधिकाई ॥ रा० ॥ १७१ ॥
स्त्रम भिन्न मुजल कीधो मनुष्य जमारो सत लीधो।

जिन शासन में जिम मेघरथा कीनी, तिम सब कोई कीज्यो, ॥ रा० ॥ १०२ ॥ मेघरथा तो दीधा दिई मन शुद्ध संयम पाले। जिन मारग म नाम दीपायो, भव-दुपथ मह टाले ॥ रा० ॥ १०३ ॥ मेघरथा तो कुल तारक हुई लज्या चाप री राखी। विखो मद्दो पिण शील न भाग्यो भगवन्त तेहना साखी ॥ रा० ॥१०४॥ कुगबाहु ने मेघरथा मती कुगवल्लभ नमो भाई। थ्यारां री तो कारज सीधो, मणरथ दुर्गति मांहि ॥रा० ॥ १०५ ॥ व्यसन सातमो परनारी नो जीव घात घर हाणी। मणरथ राजा नरक पहुन्तो कुयश साधमें प्राणी ॥ रा० ॥ १०६ ॥ एक कुव्यसन मणरथ सेव्यो बहु रुलियो ससारो। सातूं कुव्यसन जे सेवे प्राणी तिण ने दुख अपारो ॥ रा० ॥ १०७॥ विषया रस ते विष सम जाणी ने, सतगुरु सेवा कीजे। मणरथ राजा नी वात सुणी ने, परनारी संग न कीजे ॥ रा० ॥ १०८ ॥ दान शील तप संयम पालो, दोषण सगला टालो। दया धर्म री ममता आणी, शुद्ध आचार ते पालो ॥ रा० ॥१०९॥ धर्म दयासे केवली भाख्यो, ते साचो कर जाणो। जे जाणी सेवे भव प्राणी ते पामे निरवाणो॥ रा० ॥१८०॥ जप तप संयम पालो रे भाई, विषय विकार गमाई। जीव जिके तो शिव सुख पावे, श्रीवीर वचन मन लाई ॥ रा० ॥१८१॥

जिन वाणी सुन जान लियो अब, सब पापों से छुडाना मुझे ॥ स० ॥५॥ भाव दया यही ख पर की, सुध निज घर की लगाना मुझे ॥ स० ॥ ६ ॥ उलझ रह्यो मोह कर्म जाल में, सुमति दे सुलझाना मुझे ॥ स० ॥ ७ ॥ समकित व्रत पायो हुलसायो, आयो शरण निभाना मुझे ॥ स० ॥ ८ ॥ गुलाबचन्द आनन्द भयो अति, सुख में सुख अब माना मुझे ॥ स० ॥ ९ ॥

॥ सोरठा ॥

शहर ईंतारण मांहिरे ओंका गुजराती बनी ।
सरूप रूपचन्द तांहिर तेहना उपाश्रय थकी ॥१॥
विक्रम संवत् जान रे, अठारह सत गुणतीस मे ।
शुद्ध प्ररूपण मान रे, देखो पूर्व तिहा तिम लिखी ॥२
तिण अनुसार देख रे, सूत्र तणा जेह पाठ युत ।
न्याय सहित सुविशेष र, कहू जिज्ञासु कारणे ॥ ३ ॥

॥ अथ हुण्डी को बोल ॥

तीनूं हीं काल रा भाव केवल ज्ञानी दीठा, कोई जीव ने नव तत्व रा जाण पणा विना संसार समुद्र सूं तिरता दीठो नहीं। साख सूत्र सूयगडांग अध्ययन १२ गाथा १६ वीं।

॥ दोहा ॥

तीन काल रा भावना, जाणक केवली सोय।
नव तत्व जाण्या बिना, तिण्या न देखा कोय॥१॥
यथा अवस्थित वस्तु ना, ज्ञाता नेता संत।
ते बुद्धा पर तार कर, करै कर्म नो अन्त॥२॥
ए सूयगडांगे कह्यो, अध्ययन बारमा मांहि।
तत्व यथा तथ्य जाणियें, सोलमी गाथा तांहि॥३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अतीत णाण मणा गयाइं, जाणाइ आगमि तहा गयाइं।
एताणि अन्नेसि अणागयाणं बुद्धा हु ते अंतकरा भवंति॥

प्र० श्रुतस्कन्ध सूत्र कृतांग अ० १२ गाथा १६

॥ भावार्थ ॥

भूत भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों काल के भाव को जानने वाले तथा अवस्थित वस्तुओं के और नव तत्वों के ज्ञाता नेता हैं वे अपना और दूसरों का तारने वाले बुद्ध तत्वों को जानते हुए कर्मों के अन्त करने वाले हैं। अर्थात् तत्वों के जानने से मुक्ति होती है।

॥ बोल दूसरा ॥

राशि दो कही १ जीव राशि २ अजीव राशि। तीसरी राशि कहे जिण ने मान निन्हवा में छट्ठो निन्हव कह्यो। सा० सू० उववाई प्रश्न १६ में।

॥ दोहा ॥

राशि दोय जिनवर कही जीव अजीव सु जोय।
तृतीय राशि कोई कहे, तेह तो निन्हव होय ॥४॥
उववाई सूत्रे कह्यो, प्रश्न उन्नीसवें जान।
मिश्र राशि तीजी कहे, ते सात निन्हव मे मान ॥५॥
एक समय कार्य न हुवे बहु रता यह पेख।
जीव है एक प्रदेश में, द्वितीय निन्हव इम देख ॥६॥
साधु लिङ्ग साधु नहीं, तृतीय निन्हव इम भास।
चौथू निन्हव इम कहे चिहुंगति क्षण २ नाश ॥७॥
इक समय दो किरिया हुवे, पञ्चम निन्हव एह।
छट्ठा जीव अजीव मिल, तीजी राशि कहेह ॥८॥
कर्म सर्प कंचुकि परे, जीव तणे लागन्त।
सप्तम निन्हव जाणवो कहे एकान्त विरतन्त ॥९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे इमे गामागर णगर जाव सन्निवेसु, णिण्हवा भवंति तंजहा—बहुरया जीव पएसिया, अवत्तिया, सामुच्छिया, दोकिरिया ते रासिया अबद्धिया, इच्च ते सत्त पवयण णिण्हवा।

सू० उववाई प्रश्न १९ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

ये जो ग्राम आगर यावत् सन्निवेष में जो निन्हव होते हैं सो कहते हैं—१ बहुत समय में कार्य होय एक समय में नहीं होय [जमालीवत्]

२ एक प्रदेश में जीव है, ऐसा माननेवाला [तीसगुप्ताचार्य] ३ को देख के कहे साधूपना है या नहीं [अषाढाचार्य के शिष्य] ४ नरकादि चारों गति का क्षण २ में विनाश होता है [अश्व मित्र] ५ एक समय में दो किरिया लगती है ऐसा मानने वाला [गंगाचार्य] ६ जीवराशि १ अजीव राशि २ जीवाजीव राशि ३ यों तीन राशि माननेवाला [रोह गुप्ताचार्य] ७ जैसे सर्प के कञ्चुकी है वैसे जीव के कर्म लगते हैं ऐसा मानने वाला [ ] इस प्रकार मिथ्यात्व व छिपानेवाले प्रवचनों के निह्नव होते हैं।

॥ बोल तीसरा ॥

जीव अजीव त्रस स्थावर जाणे नहीं तिणरा पच्चक्खाण दुपच्चक्खाण कह्या, साख सूत्र भगवती शतक ७ वा उद्देश्य २ रा।

॥ दोहा ॥

जीव अजीव जाणे नहीं, त्रस स्थावर नहीं जाण।
त्याग करे मारण तणा तेहना छे दुपच्चक्खाण ॥१॥
सप्तम शतके भगवती, द्वितीय उद्देशे पेख।
आख्यो जिन व्रत किम हुवे, मंदर भाख्यो लेख ॥२॥

॥ मूल पाठ ॥

[illegible]

(मूल श्री [illegible])

॥ भावार्थ ॥

जो सर्व प्राणी यावत् सर्व सत्वोंने मारने का प्रत्याख्यान करे, किन्तु ऐसा नहीं जाने कि यह जीव है, यह अजीव है यह त्रस है, यह स्थावर है, ऐसा अज्ञानी सर्व प्राण भूत जीव सत्व मारने के त्याग किये कहें तो उसके दुःप्रत्याख्यान है, किन्तु सुप्रत्याख्यान नहीं।

॥ बोल चौथा ॥

जीव अजीव ने जाणे नहीं, जीव अजीव दोना ने जाणे नहीं तिण ने संयम री ओलखणा नहीं। साख सू० दशवैकालिक अध्ययन ४ गा० १२ वीं।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो तुर्य अध्ययने माहि।
जीव अजीव जाणे नहीं, बारवीं गाथा माहि ॥१२॥
जीव अजीव अजाणतो, तसु संयम किम होय।
जाणी त्याग कियां थकां, चारित्र गुण अवलोय ॥१३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणाइ।
जीवा जीवे अयाणंतो, कह सो नाहीय संयमं ॥१२॥

दशवैकालिक अ० ४ गाथा १२

॥ भावार्थ ॥

जो जीव को भी नहीं जाने, अजीव को भी नहीं जाने। जीवों अजीवों को ही नहीं जाने उसके संयम कहाँ है। अर्थात् जीवाजीव जाने बिना संयम नहीं है।

॥ सोरठा ॥

एह पाठ नूं अर्थ रे, केई जन इहां इम करे ।
जो देवे मोक्षार्थ रे, तो तसु एकान्त पाप हुवे ॥२३॥
अथवा तसु गुरु जान रे, दियां मिथ्यात्व नूं पाप है ।
यदि अनुकम्पा आन रे देवे तो तसु पाप नहीं ॥२४॥
इम निज मत अनुसार रे सूत्र विरुद्ध ले जो कहै ।
पिण तसु उत्तर सार रे बुद्धिवन्त न्याय विचारिये ॥२५॥
न कह्यो सूत्रे एम रे, मोक्षार्थी वा गुरु समझ ।
तो निज मन थी कहो किम रे, भावार्थ समझ्या विना ।२६।
तथा रूप छै जेह रे, असयती ना भेषयुत ।
तसु गुरु किम जाणेह रे, श्रावक जेह भगवान रा ॥२७॥
वलि दोष सहित किम देय रे, श्रावक गुरु जाणी करी।
न्याय विचारि लेय रे पक्षपात चित्त छाडि करि ॥२८॥
अल्प आयु बन्धाय रे असूझतो दिया साधु नें ।
तीजा ठाणा माय रे, वलि ठाम २ सिद्धान्त मे ॥२६॥
दोष सहित दिया ताहि रे, पाप हुवे पिण धर्म नहीं ।
देखो आगम माहि रे, असूझता थी पुण्य नहीं ॥३०॥
जो गुरु जाणी ताम रे, कदा निर्दोष देवे तसु ।
तो पाप एकान्त विमास रे इहा कहो किण कारणे ॥३१॥
न टेक्ष अथ तीर्थी प्रसिद्ध रे, वलि देवाक नहीं ।

जो सम भावे न सहेइ रे, तो पाप एकान्ते हुवे ।
इण मुनि रे किस्यू गिणेइ रे, एकान्त पाप मिथ्यात्व नृ ।४४
वलि धुर शतक निहाल रे अष्टम उद्देशे कह्यू ।
अव्रती ने एकान्त बाल रे, एकान्त पण्डित साधु ने ॥४५॥
अष्टम शतक रे माहि रे, छठे उद्देशे भगवती ।
तथा रूप सयति ताहि रे, दिया एकान्त निर्जरा हुवे ॥४६॥
जो एकान्त नृ भेद रे छेहलो भेद एक हो कहे ।
तो ठाम २ सुवेह रे, एकान्त अर्थ छेहलू किस्यू ॥४७॥
तिण मृ एकान्त पाप रे असयती अविरति ने ।
दीधा जिन कह्यो आप रे पाठ माहि प्रगट भणे ॥४८॥
एक,अन्त दो शब्द रे, तेहना अर्थ छे जूजुआ ।
एक तेह केवल लब्ध रे, अन्त तेह निश्चय जाणवो ।४६॥
छट्ठा काण्ड मझार रे, नवम श्लोके देखलो ।
अन्त तेह निश्चय धार रे हेम नाम माला विषे ॥५०॥
तिणसूं भगवती माहि रे दिया असयति अविरति ने ।
एकान्त पाप हिज थाय रे, प्रभु भाख्यो तेह सत्य है ॥५१॥

॥ बोल आठवा ॥

शास्वता अशाश्वता रो स्थपर नहीं तिण ने बोध रहित कह्या । सा० सू० सूयगडांग अ० १ उ० २ गाथा ६ थी ।

कारण कहा गया मोक्ष साधन का उपाय और साधु के शरीर का धारण करनेवाला है।

॥ बोल बारहवा ॥

भगवान श्री महावीर स्वामी ठंडो आहार घणा दिना रो नीपन लियो कह्यो। मा० सू० प्र० आचाराङ्ग अध्ययन ८ उद्देशा ४ गा० १३ वीं।

॥ दोहा ॥

घणा दिना रो नीपनृ, शीतल बासी पिण्ड।
शान्ति भाव धरि सेवता, महावीर गुणमण्ड ॥६०॥
प्रथम श्रुत में देखल्यो अष्टम (नवम) अध्ययन उदार।
चोथा उद्देशा विषे, तेरवाँ गाथा सार ॥ ६१ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अवि सूइय वा सुक्क वा, सीय पिंड पुराण कुम्मास ।
अदु बक्कस पुलागवा, लद्धे पिंड अलद्धए दविए ॥१३॥

॥ भावार्थ ॥

भगवान् श्री महावीर स्वामी छद्मस्थपन में भीजा हुवा सूखा ठंडा पुराणा बहुत दिनों का रांधा हुवा उड़द का तथा पुराने धान्य का बना हुआ निरस धान्य का बना हुआ आहार मिलने से शान्ति भाव से भोगवन यदि नहीं मिलता तो भी शान्ति भाव से रहते।

॥ बोल तेरहवा ॥

केवल ज्ञानी री प्ररूपणा विना आप आप री

प्ररूपणा करे तिण ने किञ्चित् मात्र जाणपणो नहीं।
सा० सू० सूयगडाग अ० १ उ० २ गाथा १४ वीं।

॥ दोहा ॥

छीवस्थी प्ररूप्या धर्म विन अपनी मति अनुसार।
करे प्ररूपणा जेहने, जाण पणो न लिगार ॥१॥
एक २ माहण श्रमण वलि, कहे म्हे छा सर्व जाण।
पिण प्राणी सहु लोक मे, तेहना जेह अजाण ॥२॥
ते किञ्चित नहीं जाणता, धुर सूयगडाग माहि।
प्रथम अध्ययने जाणिये द्वितीय उद्देशे ताहि ॥३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

माहणा समणा एगे, सव्व नाणं सयं वए।
सव्व लोगे वि जे पाणा, न ते जाणं किंचणे ॥१४॥

॥ भावार्थ ॥

जगत में एक २ श्रमण ब्राह्मण ऐसे हैं सो कहते हैं हम सर्व ज्ञ
कार हैं परन्तु लोक में सर्व प्राणी हैं उन्हे ये किञ्चित् मात्र नहीं जान
हैं। अर्थात् निज मतानुसार एक २ श्रमण ब्राह्मण कहते हैं हम सब
जानते हैं परन्तु उन्हें किञ्चित् मात्र जाणपना नहीं है।

॥ बोल चौदहवा ॥

श्रावक ने वेरागज्ञानी प्ररूप्या धर्म विना दूज
धर्म मानणा नहीं। सा० सू० उववाई प्र० २० वां।

॥ दोहा ॥

श्रावक सत्य करि जानता केवली भाषित धर्म।
दूजो धर्म न मानणो, एह जिन शासन मर्म ॥९५॥
निर्ग्रन्थ वचनज अर्थ है निर्ग्रन्थ प्रवचन परमार्थ।
अन्य सब ने पिण इम कहै, प्रवचन बिना अनर्थ ॥९६॥
लाध्या ग्रह्या अर्थ पूछ कर, धार्या विनय सहित।
अस्थि अस्थि मज्जा लगु, प्रेम राग रङ्ग रत्त ॥९७॥
सूत्र उववाई में कह्यो, प्रश्न बीसमें ठीक।
शङ्क रहित जिन वचन में, त्याने मुक्ति नजीक ॥९८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निग्गंथ पावयं निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा अट्ठि मिंज पेमाणु राग रत्ता अयमाउसो निग्गंथ पावय यो अट्ठे अय परमट्ठे सेस अणट्ठे।

सू० उववाई प्र० २० पो।

॥ भावार्थ ॥

ये श्रावक निर्ग्रन्थ प्रवचन में निःशंक हैं अर्थात् शंका रहित हैं कांक्षा रहित हैं अर्थात् पाखण्डियों का ढोंग देख के उनकी वाञ्छा नहीं करते। विचिकित्सा रहित हैं यथा। धर्म का क्रियाका मोहि की करनी करते हैं इसके फल में सन्देह नहीं रखते। ये सूत्रों का अर्थ प्राप्त है ग्रहण किये हैं, अर्थ पूछे हैं अर्थों के अर्थों के सन्मुख हुए हैं, और विनय सहित ग्रहण किये हैं जिनको अस्थि और अस्थि की मज्जा जिन

॥ भावार्थ ॥

१ जिन वचनों में शङ्का नहीं करे अर्थात् भगवान ने एक शरीर में अनन्ते जीव आदि अनेक बातें कही है सो सत्य है।
२ निष्कंखिय अर्थात् जो अन्य मतवाले कहते हैं यह भी ठीक होगा ऐसी वाँछा न करे।
३ निर्वितिगिच्छा याना जो तप नियमादि करणा करता हूं सो फल दायक होगा या नहीं ऐसी विचारणा नहीं करे।
४ अमूढ दिट्ठिय अर्थात् अन्य मत वालों की अनेक प्रकार प्ररूपणा को देखके उनकी तरफ खयाल न करे।
५ उववूह यानी गुणवन्त पुरुषों के गुणगान करे।
६ थिरि करणे अर्थात् सम्यक्त्व में स्थिर रहे।
७ वच्छल यानी चार तीर्थों के जीवों पे वात्सल्य भाव रक्खें।
८ प्रभावना अर्थात जैन धर्म की प्रभावना करे। यह सम्यक्त्व के आठ आचार कहे हैं।

॥ बोल सोलहवा ॥

केवलज्ञानी रा वचनारी खबर नहीं जिका रे घणो बाल मरण अकाम मरण होसी। सा० सूत्र उत्तराध्ययन अ० ३६ गा० २६० वीं।

॥ दोहा ॥

जे जिन वचन जाणे नहीं, बाल मरण तसु जाण।
घणा अकाम मरणे मरे, उत्तराध्ययने छत्तिसमे पिछाण।७३

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि बहुसो, अकाम मरणाणि चेव बहूणि।
मरिहिंति ते वराया, जिण वयणं जे न जाणंति ॥२७०॥

॥ दोहा ॥

केवलिया रो आचार सो, छद्मस्थ रो आचार ।
केवलिया रो अनाचार ते, छद्मस्थ रो अनाचार ॥७५॥
कुशल पुरुष जे केवली, नहीं बन्धाय मूकाय ।
जे आरभ्यो तिम आरभे, ते बुद्धिवन्त कहाय ॥७६॥
प्रथम आचाराङ्गे कह्यो, दूजे अध्ययन उदार ।
छट्ठा उद्देशा विषे, निपुण न्याय अवधार ॥७७॥

। सूत्र पाठ ।

कुसले पुण णो बद्धे णो मुक्के से जं च आरम्भे जं च णारम्भे अणारद्धं च णारभे छणं छणं परिन्नाय लोगसन्नं च सव्वसो।

आचाराङ्ग अ० २ उ० ६ टा

॥ भावार्थ ॥

केवली भगवान बन्धे हुये नहीं, छूटे हुए नहीं जैसे वे वर्त्तते हैं वैसे ही करना और जैसा उनका आचरण नहीं है वैसा नहीं आचरे। अर्थात् संयम क्रिया जैसी केवलियों की है वैसी ही अकेवलियों की है। हिंसा तथा लोक संज्ञा को जान कर उसका परिहार करना।

॥ बोल उन्नीसमा ॥

वक्तव्यता २ कही १ स्व समय वक्तव्यता, २ पर समय वक्तव्यता। स्व समय वक्तव्यता की तो साधु आज्ञा दे तथा मानणे योग है, पर समय वक्तव्यता में सात अवगुण कह्या— १ अनर्थ, २ अहित ३

आगम वच ते स्व समय, तेहिज मानण योग ।
वक्तृता पर शास्त्र नी, आयो ताम प्रयोग ॥८६॥
नैगम सग्रह व्यवहार जे, इच्छे वक्तृता तीन ।
स्व पर मिश्र क्रम तथ हुवे, ऋजु सूत्र दोय लीन ॥८७॥
शब्दादिक त्रय नयतिका, इच्छे वक्तृता एक ।
स्व समय तेहिज सत्य है, पर तें सहु अविवेक ॥८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं त वत्तव्वया ? वत्तव्वया तिविहा पन्नता तंजहा—१ ससमय वत्तव्वया, २ पर समय वत्तव्वया, ३ ससमय पर समय वत्तव्वया से किं त ससमय वत्तव्वया ? ससमय वत्तव्वया—जत्थणं ससमय आघ विज्जति पण्ण विज्जति परूविज्जति दसइ नि दसिज्जइ उवदसिज्जइ से त ससमय वत्तव्वया। से किं त पर समय वत्तव्वया ? जत्थणं पर समय आघविज्जति जाव उवदसिज्जति से त पर समय वत्तव्वया । से किं त ससमय पर समय वत्तव्वया ? जत्थणं ससमय पर समय आघविज्जति जाव उवदसिज्जति से त ससमय परसमय वत्तव्वया इयाणिको न भो क वत्तव्वय इच्छति ? तत्थ णेगम सगह ववहारो तिविह वत्तव्वय इच्छति तंजहा—ससमय वत्तव्वय पर समय वत्तव्वय ससमय पर समय वत्तव्वय। उज्जु सुमो दुविह वत्तव्वय इच्छइ तंजहा-ससमय वत्तव्वय पर समय वत्तव्वय तत्थणं जासा ससमय वत्तव्वया सा ससमय पविट्ठाजा, सा परसमय वत्तव्वया सा पर समय पविट्ठाजा तम्हा दुविहा वत्तव्वया नत्थि तिविहा वत्तव्वया । तिण्णि सद्दा नया

राग सममय वत्तव्वय इच्छति णत्थि पर समय वत्तव्वया, कम्हा। जम्हा परसमय १ अणट्ठे २ अहेउ, ३ असब्भाव, ४ अकिरिए, ५ उम्मग्गे, ६ अणुवएस, ७ मिच्छा दसण, मितिकट्टु तम्हा सव सममय वत्तव्वया णत्थि पर समय वत्तव्वया, से त वत्तव्वया।

अनुयोग द्वार सूत्र।

। भावार्थ ।

प्रश्न—वक्तव्यता कितने प्रकार की है। उत्तर—वक्तव्यता तीन प्रकार की भी कहते हैं—१ स्व समय, २ पर समय, ३ और स्वपर समय वक्तव्यता। स्वसमय वक्तव्यता किसे कहते हैं? "स्वसमय अर्थात् स्वमत जिन प्रणीत सूत्रों को संक्षेप से कहे विस्तार पूर्वक कहे प्ररूपणा कर, दृष्टान्तादि कर दर्शावे, प्रथा में उपदिशे, विशेष कर दर्शावे सो स्वसमय वक्तव्यता।" अहो भगवान् पर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं? "जो अन्य मत के शास्त्र उक्त प्रकार सामान्य प्रकार कहे, प्ररूपे, दृष्टान्त से कहे विस्तार से कहे, विशेष कर दर्शावे और उपदिशे यह पर समय वक्तव्यता है। स्वपर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं? "जो स्वमत के शास्त्रों और परमत के शास्त्रों को शामिल करके कहे यावत् उपदिशे, सो स्वपर समय वक्तव्यता है।" अब नयों का समास करते हैं—नैगम संग्रह और व्यवहार यह तीन नय स्वपर वक्तव्यता को मानें और ऋजु सूत्र नय दो प्रकार की वक्तव्यता को मानें स्वसमय और पर समय वक्तव्यता। परन्तु दोनों को मिला के मिश्र वक्तव्यता को नहीं मानें क्योंकि जो स्व समय वक्तव्यता उसे स्वमत में अन्तर करे, और जो पर समय वक्तव्यता है उसे परमत में अन्तर्भाव कर इसलिये दोनों ही प्रकार की वक्तव्यता है। शब्द और समभिरूढ़ और एवं भूत नय केवल एक स्वसमय वक्तव्यता ही मानें परन्तु पर समय वक्तव्यता को नहीं इसके क्योंकि पर समय वक्तव्यता है उसमें अनर्थ है अहेतु है असद्भाव है

क्रिया रहित है उन्मार्ग है कुउपदेश है, मिथ्या दर्शन है। दोष पर शास्त्र में है। अत एव स्व समय वक्तव्यता ही है वक्तव्यता नहीं।

॥ बोल बीसवां ॥

केवली प्ररूपियो धर्म एकान्त प्रधान मा० न० प्र० सूयगडांग अ० ६ गा० ७।

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानी भाषियो तेहिज धर्म एकान्त ।
धुर सूयगडांगे छट्ठे सप्तमी गाथा तंत ॥८९॥
प्रधान धर्म श्री जिन कह्यो तसु नेता वर्द्धमान ।
शोभे मनु देश विषे इन्द्र समा गुण स्थान ॥९०॥
सब नेता में श्रेष्ठ हैं काश्यप गोत्र उत्पन्न ।
इम धर्म जिनवर कह्यो, तेहिज धर्म सुमन्न ॥९१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणुत्तरं धम्म मिणं जिणाणं णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इंदेव देवाण महाणुभावे सहस्स णेता दिवि णं विसिट्ठे ॥७॥

प्र० सूयगडांग अध्ययन ६ गा।

॥ भावार्थ ॥

प्रधान धर्म है जिनेश्वरों का कहा हुआ उनके नेता मुनीश्वर काश्यप गोत्रज श्री महावीर स्वामी हैं व हजारों देवताओं में सुशोभित हैं।

॥ बोल इकीसमां ॥

केवली प्ररूप्यो धम यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित कह्यो। सा० सू० सूयगडांग अ० ६ गाथा १।

॥ दोहा ॥

धम यथा तथ्य भाखियो जेह माहण मतिवन्त।
कपट रहित तेह सरल छे, जिनोक्त धर्म सु सन्त॥८२॥
प्रथम सूयगडांगे कह्यो, नवम अध्ययन र माहि।
पहिली गाथा मे विषे, जिन कह्यो धर्म कहांहि॥८३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कयरे धम्म अक्खाय माहणेण मति मता।
अंजु धम्म जहा तच्च, जिणाणं त सुणेह मे ॥ १ ॥

प्र० सूय कृतांगे नवम अध्ययने १ गाथा

॥ भावार्थ ॥

मतिमान भगवान मन हर्ता न ऐसा उपदेश है जिनका ये मुनि कौ धम कहै – ऋजु भगवान माया कपटाई रहित जैसा जिनेश्वरो ने कहा है वैसा ही धम कहे।

॥ बोल बावीसवां ॥

जिण करणी में किञ्चित मात्र हिंसा हो करणी ज्ञान री माय कही। सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १ उ० ४ गाथा १० वीं।

॥ दोहा ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शीघ्र सर्वे कर्म क्षय करी, पामे मोक्ष प्रधान।
चौथा उत्तराध्ययन में, अष्टम गाथा जाण ॥१०१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खिय वम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्ते, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥८॥

उत्तराध्ययन अ० ४।

॥ भावार्थ ॥

छन्दा रोधा अर्थात् अपनी इच्छा का निरोध करने से मुनि मोक्ष पाता है। जैसे शिक्षित अश्व (घोड़ा) सवार की इच्छानुसार चलकर युद्ध में प्राप्त करके दुश्मनों से छुटकारा पाता है। वैसे ही मुनि पूर्व का वर्ष पर्यन्त अपनी इच्छा (छन्द) का त्याग के गुरु की आज्ञा पालन करते हैं अतः उनको शिवपद शीघ्र प्राप्त करता है।

॥ बोल पचीसवाँ ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म अहिंसा संयम तप छे
सो० सू० दशवैकालिक अध्ययन १ गा० १ सो।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो धुर अध्ययन मझार।
धुर गाथा विषय, अहिंसा संयम तप धर्म सार ॥१०२॥
अहिंसा संयम तप ए धर्म उत्कृष्ट।
साधु कहे सर्व देवता नमे धर्म मन जेह ॥१०३॥

११

॥ बोल सतावीसवा ॥

बाल मरण री प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे ११ वें ।

॥ दोहा ॥

मुनिवर बाल मरण तणी, करे प्रशंसा कोय ।
करता प्रते अनुमोदिया, दण्ड निशीथ मे जोय ॥१०५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि वा पससइ पसंस त वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा ११ वा ।

॥ भावार्थ ॥

बाल मरण अर्थात् बिना अनशन किये मिथ्यात्व सहित मरे उसको प्रशंसा करे कराये और उसका अनुमोदन करे तो प्रायश्चित ।

॥ बोल अठावीसवां ॥

जो साधु गृहस्थ ने अणतीर्थी ने १ असण, २ पाण ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ पाय पुच्छण, ये आठ बोल देवे देवावे देता ने भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो । सा० सू निशीथ उद्देशे १५ वें ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थि वा गृहस्थ ने, च्यार प्रकारे अहार ।
वस्त्र पात्र कम्बल वली, पाय पुच्छणो धार ॥१०६

विराधक ज्ञानादिक तणो, विषय लम्पटी जान ।
ते अबूसी राई ने बुसी कहे प्रायश्चित तसु मान ॥११०॥
निशीथ उद्देशे सोलवें, तेरम चवदम बोल ।
निन्दा करि गुणवन्त नी, गुण लेहना मत खोल ॥१११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू वुसी रायइ अवुसी राइयं वयइ वयं तं वा साइज्जइ ।
जे भिक्खू अवुसी राइयं वुसी राइयं वयइ वयं तं साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा १६ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु वुसी रायई अर्थात् ज्ञान दर्शन चारित्र गुणके धारक अथवा ऐसे बड़े मुनिराज को अवुसी रायर कहै और अवुसी रायर जो विषय लम्पटी को वुसी रायर कहे तो चौमासी प्रायश्चित ।

॥ बोल तीसरा ॥

सरागी साधु होकर सरागी साधुओं ने स्थानक देवे नहीं देवावे नहीं, देता प्रते भला जाणे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें।

॥ बोल इकतीसरा ॥

सरागी साध्वी होकर सरागी साध्वीने स्थानक देवे नहीं, देवावे नहीं देतां प्रते भला जाणे नहीं तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें।

विराधक ज्ञानादिक तणो, विषय लम्पटी जान ।
ते बुसी राई मे वूसो कहे, प्रायश्चित तसु मान ॥११०॥
निशीथ उद्देशे सोलवें, तेरम चवदम बोल ।
निन्दा करि गुणवन्त नी, गुण तेहना मत खोल ॥१११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू वूसी रायइ अवूसी रायइयं वयइ वयं तं वा साइज्जइ ।
जे भिक्खू अवूसराइय वूसराइय वदइ वद तं साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा १६ वां ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु वूसी रायइ अर्थात् ज्ञान दर्शन चारित्र गुणके धारक अपने से बड़े मुनिराज को अवूसी रायइ कहे और अवूसी रायइ जो विषय लम्पटी को वूसी रायइ कहे तो चौमासी प्रायश्चित ।

॥ बोल तीसवां ॥

सरोगा साधु होकर सरोगा साधुवां ने स्थानक देवे नहीं देवावे नहीं, देता प्रते भलो जाणे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ व।

॥ बोल इकतीसवां ॥

सरोगी साध्वी होकर सरोगी साध्वी ने स्थानक देवे नहीं, देवावे नहीं देता प्रते भला जाणे नहीं तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें ।

मैथी वा गृहस्थ को देख कर उनका मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढकि इत्यादि वयावृत्य करे, करावे, करते हुए को अनुमोदना करे, तो प्राय श्चित्त।

॥ बोल तेतीसवा तथा चोतीसवा ॥

साधु आप रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला, श्रावक वा अश्रावक ने आधी रात वा आधी रात राखे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ वें बोल १२ वें।

साधु रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला श्रावक वा अश्रावक, आखी रात वा आधी रात रहे उण ने नहीं निषेधे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ बोल १३ वें।

॥ दोहा ॥

साधु बसे तिण स्थान में, निज न्याती प्रते जान।
अथवा अण न्याती प्रति, राख्यां दण्ड पिछान ॥१२३॥
श्रावक हो अथवा वलि अश्रावक जो होय।
पूर वा अर्ध राति में राख्या प्रायश्चित्त होय ॥१२४॥
इमहिज रहता हुया प्रति नहीं निषेधे ताम।
निशीथ उद्देशे आठवें, प्रायश्चित्त कह्यो स्वाम ॥१२५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू दायगं वा [illegible]

तीर्थों या गृहस्थ को देख कर उनका मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढांके इत्यादि वयावृत्य करे, करावे, करते हुए को अनुमोदना करे, तो प्राय श्चित्त।

॥ बोल तेतीसवां तथा चोतीसवां ॥

साधु आप रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला श्रावक वा अश्रावक ने आखी रात वा आधी रात, राखे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ में बोल १२ वें।

साधु रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला श्रावक वा अश्रावक, आखी रात वा आधी रात रहे उण ने नहीं निषेधे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ बोल १३ वें।

॥ दोहा ॥

साधु बसे तिण स्थान में, निज न्याती प्रते जान।
अथवा अन न्याती प्रते, राख्यां दण्ड पिछान ॥१२३॥
श्रावक हो अथवा वलि अश्रावक जो होय।
सब वा अर्ध रात्रि मे राख्यां प्रायश्चित्त जोय ॥१२४॥
इमहिज रहता हुआ प्रते नहीं निषेधे तास।
निशीथ उद्देशे आठवें, प्रायश्चित्त कह्यो जास ॥१२५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू आगारं वा अणगारं वा उवासगं वा अणुवासगं वा

म तो उवस्सयस्स अद्ध राय, कसिण राय, सवसावेइ, सवसा वता साइज्जइ ॥१२॥ जं भिक्खू तं न पडियाइक्खइ न पडियाइक्खंतं वा, साइज्जइ ॥१३॥

सू॰ निशीथ उद्देशे ८ वें।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ज्ञाती ने तथा अज्ञाती ने, श्रावक ने तथा अश्रावकने आप जिस स्थान में रहते हों उसी स्थान में सर्व रात्रि अथवा अर्द्ध रात्रि उनके साथ रहे यावत् अनुमोदे तो प्रायश्चित्त। रहते हुए को न निषेधे अर्थात् मना न करे तो प्रायश्चित्त आवे।

॥ सोरठा ॥

एक स्थान इक कल्प रे, तिण मे गृहस्थी ने मुनी।
राख्या प्रायश्चित्त जल्प रे, अर्द्ध तथा सर्व रात्रि तक।१२६॥
इक आगण उपरान्त रे, सामायक पौषध गृही करे।
तें ठाम २ विरतन्त रे, सूत्र देख निर्णय करो ॥१२७॥

॥ बोल पेंतीसवा ॥

सावद्य दान की प्रशंसा कर तिण ने प्राणी जीवां को वध वछणहारो कह्या। सा॰ सू॰ सूयगडांग अ॰ ११ वें गा॰ २॰ वीं।

॥ दोहा ॥

जो सांसारिक दान री, करे प्रशंसा कोय।
बध बछे षट् काय नूं, सूयगडांगे जोय ॥१२८॥

अध्ययन इग्यारहवां ने विषे, वीसमीं गाथा मांहि ।
निषेधिया वर्त्तमान में, वृत्ति छेद कहांहि ॥१२८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जय दाण पससति वह मिच्छन्ति पाणिणो ।
जयणं पडि सहति, वित्तिच्छय करति त ॥१३०॥

॥ भावार्थ ॥

जो दान को प्रशंसा करे सो प्राणी जीवों का वध वंछता है, और जो वत्तमान में निषेध करे तो देनवाले की वृत्ति का छेद करे।

॥ सोरठा ॥

इहां को प्रश्न करेह रे सावद्य शब्द नहीं पाठ में ।
समुचे दान कहेह रे, तसु उत्तर आगे सुणो ॥१३०॥
छह काय रो घात रे, मुनि ने देतां नहिं हुवे ।
ते निरवद्य साक्षात रे तिण रो प्रशंसा वहु जगह ॥१३१
दान शील तप भाव रे, च्यार मार्ग यह मुक्ति रा ।
ते निरवद्य ठहराव रे, करै जिन आज्ञा सहित जो ॥१३२
शरीर अधिकरण नाहि रे, मोहर है षट् काय ना ।
यावज्जीव लग ताहि रे, मुनि रे हिंसा त्याग है ॥१३३॥
तसु दीधा पुण्य जान रे, अशुभ कर्म पिण क्षय हुवे ।
दिया सुपात्र दान रे, श्रावक रे व्रत वारमू ॥१३४॥
दुर्लभ कह्या जिनराय रे, शुद्ध दान दाता तिका ।
दीधा शुभ गति जाय रे, दशवैकालिक विषे कह्यो ॥१३५॥

सुमुख प्रमुख दश ताय रे मुनि ने दान देई करी ।
एकावतारी थाय रे, केइक तिण भव मोक्ष में ॥१३३॥
पञ्चम अङ्ग पिछाण रे, अष्टम शत उद्देश षट् ।
तथा रूप मुनि ने जाण रे, श्रावक पडिलाभे तसु ॥१३७॥
एकान्त निर्जरा होय रे, किञ्चितमात्र पिण पाप नहीं ।
पुण्य बन्ध अवलोय रे, ठाम ठाम सूत्रे कह्यो ॥१३८॥
स्थानाङ्ग नवमे जोय रे, नव विधि पुण्य बन्धे कह्यो ।
निर्वद्य नवी अवलोय र, मुनि ने कल्पे ते कह्या ॥१३९॥
नमस्कार किया ताहि रे, तेहने निर्दोष अन्न दियां ।
पुण्य तणो बन्ध थाहि रे, नव हो सरीखा जाणिये ॥१४०॥
ते माटे इहा जान रे निरवद्य दान न सेखणे ।
बीसमों इकबीसमों पिछाण रे गाथा देख निर्णय करो ॥
अस्ति नास्ति ये दोय रे, पुण्य पाप नी नहीं कहै ।
वर्त्तमान म जोय रे, पूछा यो मुनि नहीं वदे ॥१४२॥
तेम इहा अवधार रे, निषेधियां वर्त्तमान में ।
करन्ति शब्दे धार रे, क्रिया तेह वर्त्तमान री ॥१४३॥
कियां प्रशंसा सोय रे वच वहणहारा कह्यो ।
प्रत्यक्ष ही अवलोय रे, सावद्य दान यह आखयो ॥१४४॥
ठाम २ जिनराय रे, कुपात्र दान तणा कह्या ।
फल कड़ुपा अधिकाय रे, पक्षपात तज साभलो ॥१४५॥
खगा मोढा ने देख रे, गौतम जिनपे आय करि ।

टु ख विपाक मे लेख रे पूछ्यो कि दया हुवे ॥१४६॥
सूत्र भगवती माहि रे, अष्टम शतके देखलो ।
छट्ठे उद्देसे ताहि रे, असंयति अविरति ने ॥१४७॥
पाप एकान्त जे थाय रे, सचित अचित पडिलाभियां ।
निर्ज्जरा किञ्चित नाहि रे, प्रत्यक्ष पाठ विषे कह्यो ॥१४८॥
तथा सूयगडाङ्गेह रे, नवम अध्ययन तेवीसमी ।
गाथा मे इम लेह रे, साधु विन अनेरा प्रते ॥१४९॥
दान देवो अवधार रे, कारण पाप तणो तिको ।
भमण हेतु संसार रे, इत्यादिक बहु सूत्र में ॥१५०॥
वलि आनन्द श्रावक जान रे, अन्य तीर्थी ने देण रा ।
कीधा छे पचखान रे, सप्तम अङ्गे देखल्यो ॥१५१॥
जो फल न कहे कदेह रे, मादया दान तणा अशुभ ।
तो भवि किम लावेह रे, सुपात्र कुपात्रज दान ने ॥१५२॥
निषेधिया वर्त्तमान रे अन्तराय लागे तसु ।
वलि वृत्तिच्छेदक जान रे, दान लेण वाला तणो ॥१५३॥
प्रशसिया जे दान रे, प्राण घात वांछक कह्यो ।
तो ते दोधा दान रे, ते हिंसक किम नहीं हुवे ॥१५४॥
मुनि विन अपर शरीर रे, अधिकरण षट् काय नें ।
तसु तीखो किया मीर र, हिंसादिक कारण तणो ॥१५५॥
अव्रत माहि देह रे, सेवे ते विण अविरत में ।
दूजो आस्रव सेवेह रे, तिण थी न हुवे पुन्य नभ ॥१५६॥

कोई कहै शुभ परिणाम रे, दान देण वाला तणा।
तिण सूं पुण्य बन्ध ताम रे, तसु उत्तर हिये विचारिये॥
साता वञ्छी एक रे, धुर आस्रव सेवावियो।
दूजो बोल अलीक रे, दुख दूजा गो मेटियो ॥१५८॥
तीजो चोरी कराय रे, पर साता परिणाम से।
इक मैथुन सेवाय रे, साता रा परिणाम से ॥१५६॥
इम परिग्रह रखवाय रे, हित वञ्छी भल भाव से।
यह पचास्रव न्याय रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये ॥१६०॥
धुर पचम रे माहि रे, धर्म पुण्य जो होय तो।
विचला तिण में ताहि रे, धर्म पुण्य पिण जानवो ॥१६१॥
न हुवै शुभ परिणाम रे, पचास्रव सेवावता।
जिन आज्ञा विन काम रे, कीधा थो धर्म पुण्य नहीं ॥१६२॥
तिण सू लौकिक दान रे, प्रशसवो नहीं मुनि भणो।
प्रशसिया थी जान रे, वृच्छक प्राणी वध तणु ॥१६३॥

॥ बोल छत्तीसवा ॥

विषय सहित धम बुरो, जिम ताल पुट जहर खाया, कुरोति से हाथ में शस्त्र लिया, कुविधि मन्त्र जपिया मरण पामें, तिम इन्द्रियों को विषय सहित धर्म प्ररूपे ते घणा जन्म मरण वधावे। मा० सू० उत्तराध्ययन अ० २० वें गा० ४४।

॥ दोहा ॥

जिम विष खाया तालपुट कुविधि शस्त्र हाथ मझार ।
मन्त्र कुरीति जपियां थकां, पामे मरण तिवार ॥१६४॥
तिम विषय सहित जे धर्म छे, प्ररूपियां तसु जान ।
दुखदाई होवे घणो, जन्म मरण बहुमान ॥१६५॥
उत्तराध्ययन में जिन कह्यो, वीसमाध्ययन रे माहि ।
चार चालीसमीं गाह में, तिमा धर्म दुखदाय ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहियं ।
एसो विधम्मो विसओववन्नो हणाइ वेयालइवाविवन्नो ॥४४॥

उत्तराध्ययन अ० २० वें ।

॥ भावार्थ ॥

जैसे कालकूट जहर पीने से, कुविधि शस्त्र ग्रहण करने से और कुरीति से वेतालादि मन्त्र जपने से, मृत्यु प्राप्त हो । वैसे इन्द्रिय विषय सहित धर्म प्ररूपना करने से जन्म मरणादि की वृद्धि हो तथा दुखदाई हो ।

॥ बोल सैंतीसवां ॥

भाषा २ कही १ आराधक, २ विराधक। विराधक भाषा में औगुण ४ कह्या यथा—१ असंयम, २ अविरत, ३ अपडियाई, ४ अपच्चखाण पाप कर्म सा० सू० पन्नवणा पद ११ वें ।

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे जाणवी, भाषा जे बोलेह।
आराधक प्रथमा कही, द्वितीय विराधक जेह ॥१६७॥
सउपयोग यथोक्त जे, ते आराधक जान।
विराधक तिण पर अछे, विन उपयोग अयुक्त पिछान ॥
अवगुण चार तिण मे अछे, असंयम अव्रत अपलीय।
अप्रतिहत अपचक्खाण इम, पन्नवणा इग्यारहमें जोय।

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चेयाइं भंते चत्तारि भासाजायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए? गोयमा इच्चेयाइं चत्तारि भासाजायाइं आउत्तं भासमाणे आराहए णो विराहए तेण परं असंजय, अविरय अपडिहत अपच्चक्खाय पाव कम्म।

पन्नवणा पद ११ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

हे भगवान् यह चार भाषा जानि भाषने हुए आराधक है या विराधक? हे गौतम यह चार प्रकार की भाषा उपयोग सहित जैसे की जैसे बोले तो आराधक है विराधक नहीं। इससे उपरान्त असंयम, अविरत, अप्रतिहत पाप कर्मों का अप्रत्याख्यान है।

॥ बोल अडतीसवा ॥

मिश्र भाषा बोल्या महा मोहनीय कर्म बंधे।
सा॰ सू॰ दशाश्रुतस्कंध अध्ययन ६ वें बोल ६ वें।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा बोल्या थका, महा मोहनीय बन्ध ।
नवमें बोले भाखियो, श्री दशाश्रुत स्कन्ध ॥१००॥
जाणतो परिषद विषे, साच झूठ बिहु मेल ।
बोले कपट सहित जे, मिश्र वच कुकला खेल ॥१०१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जाणं माणं परिसओ सच्च मोसाई भासए ।
अक्खीण झंझ पुरिसे महा मोहं पकुव्वइ ॥९॥

दशाश्रुतस्कन्ध अ० ९

॥ भावार्थ ॥

जो जानता है कि यह झूठ है तो भी सभा में बैठ कर मिश्र भाषा बोले अथवा सत्य झूठ का निर्णय न होय ऐसा भाषा बोले सत्यासत्य भाषा बोले ऐसा को वृद्धि करे सो महा मोहनीय कर्म उपार्जन करता है ।

॥ बोल उनचालीसवां ॥

मिश्र भाषा छोड़े छुड़ावे तिणने समाधि कही ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अ० १० वें गा० १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

वचन गुप्ति प्राप्त मुनी, परम समाधिवन्त ।
छोडे छोडावे मिश्र वच, शुभ लेश्या धर सन्त ॥१०२॥

घर छावे नही महा ऋषि, नही छवावे जेह ।
वर्जे सग स्त्री तणो, दशम सूयगडाङ्गेह ॥१७३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

गुत्तोवर्ई यय समाहि पत्तो लेम समाहट्टु परिव्वयज्जा ।
गिह न छाये यावि छायज्जा समिस्स भाव पयह पयासु ॥१५॥

॥ भावार्थ ॥

वचन गुप्तिवन्त अर्थात् सावद्य वचन गोपने वाले समाधि और शुभ लेश्या के धारक अपन रहने के लिये घर छावे नहीं अन्य से छवावे नहीं समभाव धारण करता हुआ मिश्र भाषा का त्याग करे ।

॥ बोल चालीसवा ॥

मिश्र भाषा तथा असत्य भाषा सर्व प्रकारे छोड़नी कही सत्य और व्यवहार भाषा बोलनी कही। सा॰ सू॰ दशवैकालिक अ॰ ७ गाथा १ ली।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे असत्य मिश्र, नही बोले मुनि वैण ।
सत्य व्यवहार ही भाषवे, च्यार भाषा मे सैण ॥१७४॥
दशवैकालिक मे कह्यो, सप्तमध्ययने स्वच्छ ।
पहली गाथा मे विषे, सीखे सविनय वच्छ ॥१७५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउण्ह खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं ।
दोण्ह तु विणय सिक्खे दो न भासिज्ज सव्वसो ॥१॥

दशवैकालिक अ॰ ७ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

चार प्रकार की भाषा है जिसमें सत्य और व्यवहार तो विनय पूर्वक बोले, किन्तु असत्य और मिश्र भाषा सर्वथा प्रकारे नहीं बोले।

॥ बोल इकचालीसवा ॥

मिश्र भाषा रा धणी रो वचन अवक्तव्य कह्या, अणविमासी बोलनहार कह्या, अज्ञानवादी कह्यो, पूछ्या रो जवाब देवा असमर्थ कह्यो, मिश्र धर्म प्ररूपणे वालो आप रो मत थापवा भणी छलबल माडतो कह्या। सा० सू० प्र० सूयगडाग अध्ययन १२ वें गा० ५ वीं।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाव प्राप्त थको, मिश्र न बोलणहार।
बोले विना विचारियो, अज्ञान वादी धार ॥१७६॥
जाब देवा समरथ नहीं, पूछ्या थी अवलोय।
मिश्र धर्म प्रते स्थापवा, छल बल माडे सोय ॥१७७॥
आत्म अक्रिया मान कर, पुन प्रकृति चय मुक्ति।
इम इक पख इम दोय पख, साख्य दर्शनी उक्ति ॥१७८॥
प्रथम सूयगडाअगेह कह्यो द्वादशध्ययने पेख।
मिश्र वक्ता अवक्त हैं, पचमी गाथा पेख ॥१७९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सम्मिस्सभावं च गिरा गहीए, से मुम्मुई होइ अणाणुवाई ।
इमं दुपक्खं इममेगपक्खं आहंसु छलायतणं च कम्मं ॥५॥

प्र० सूत्र कृतांगे द्वादशमध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मिश्र भाव को प्राप्त होकर प्रश्न करने वाले को उत्तर देने में असमर्थ होते हैं और मौन धारण करते हैं, वे अज्ञानवादी कभी क्या कहे, कभी क्या कहे इस तरह से कभी एक पक्षी, कभी दो पक्षी होते हैं। और छल कर करके अपना मत स्थापन करते हैं।

॥ बोल बयालीसवां ॥

साधु री आज्ञा बारे धर्म श्रद्धे तिण ने काम भोग में मूर्छा कह्या, हिंसा रा करणहार कह्या। सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ६ उद्देशा ४ था।

॥ दोहा ॥

साधु री आज्ञा बिना, श्रद्धे धर्म उदार ।
ते काम भोग में मूर्छिया, हिंसा रा करतार ॥१८॥
प्रथम आचारांगे कह्यो छट्ठमध्ययन मझार ।
चौथा उद्देशा विषे, सांभलज्यो विस्तार ॥१९॥
ब्रह्मचर्य समान नहीं पाप न मन माहिं ।
ज्ञानवंत इन्द्र लोक में, धर्म भारी पर [illegible] ॥२०॥

ते काम भोग गृद्धो छता मूर्छित विषय मझार।
समाधि मार्ग जिन भाखियो ते नहीं सेवे लिगार ॥१८३॥
आर्य व शुद्ध साधु तसु, शिक्षा दे किण वार।
तो तेहनी निन्दा करे, वे द्विगुण मूर्ख इम धार ॥१८४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं णो त्ति मन्नमाणा आघायं तु सोच्चा निसम्म समणुन्ना जीविस्सामो, एगे निक्खम्मंते असंभवंता विडज्झमाणा कामेहिं गिद्धा अज्झोववन्ना समाहिमाघायमजोसयंता सत्थारमेव फरुसं वदंति। सीलमंता उवसंता संखाए रीयमाणा असीला अणुवयमाणस्स बितिया मंदस्स बालया।

श्री आचारांग षष्ठमध्ययने चतुर्थोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक साधु होकर आज्ञा का अनादर करते हुए विषय लम्पटी होकर उनमें लिप्त हो जाते हैं। मैं सब का माननीय होऊंगा ऐसा विचार करके ऐसा अहंकार करते हैं ब्रह्मचर्य धारते हैं परन्तु गुरु आज्ञा अनुसार मोक्ष मार्ग में नहीं चलते। काम भोग के सुखों में मूर्छित होकर विषयों की ओर दौड़ते हैं गुरु के द्वारा मनोहर बताये गये समाधि मार्ग हैं उसका सेवन नहीं करते; यदि उन्हें कोई अच्छी शिक्षा देवे तो उसकी निन्दा करते हैं गुरु की शिक्षा अपने मनमाना हित धर्म समझते हुए गुरुओं से अलग ऐसा विचार के भ्रष्ट हुए वे बाल, मन्द बुद्धि धारी शुद्धाचार के पालने वाले साधुओं का अपमान कर के निन्दा करने में तत्पर हैं अतः वे दुगुने मूर्ख हैं।

॥ दोहा ॥

वलि तिणहिज उद्देशे कह्यो, धर्म कहै आज्ञा बाहर ।
प्राण जीव हिंसक तिका, असंयम अर्थी धार ॥१८५॥
अधमार्थी बाल ते आरम्भार्थी जेह ।
धर्म अनार्य प्राणी ने भणी लागता तेह ॥१८६॥
दुष्कर धर्म जिनवर कह्यो, ते पालन समर्थ नाहि ।
तव साधु करै धर्महिलना तत्पर हिंसा माहि ॥१८७॥
ते आज्ञा बाहिर थई धर्म प्ररूपे एम ।
जिन आज्ञा नहीं मानतो, भ्रष्ट क्रिया निज नेम ॥१८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

[illegible]

([illegible] आचारांग सूत्र [illegible])

॥ भावार्थ ॥

[illegible]

॥ बोल तियालीसवा ॥

आज्ञा बाहिर धर्म कहसी तिण रा तप अने नियम भ्रष्ट कह्या तिण ने मूर्ख कह्यो, ससार से पार पामतो नहीं कह्यो। मा० सू० आचाराग अध्ययन २ उद्देशो २।

॥ दोहा ॥

कहसी धर्म आज्ञा विना, तिणरा तप अरु नेम ।
भ्रष्ट कह्या धुर अङ्ग मे द्वितीय अध्ययने एम ॥१८९॥
दूजे उद्देशे देखल्यो, परिसह उपसर्ग पाय ।
आज्ञा बाहिर होयके शिथिल थई मोह वर्ताय ॥१९०॥
कहे मैं अपरिग्रही अछूं, पिण भोग मिल्या भोगाय ।
तथा भोग मिलवा तणा, करत अनेक उपाय ॥१९१॥
ते भेष लजावें साधु नू, सेवे काम विकार ।
बार २ मोह मैं फस्या, ते नहीं पामै पार ॥१९२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए पुट्ठावि, एगेणियट्ट ति मंदा मोहेण पाउडा अपरिग्गहा भविस्सामो समुट्ठाए लद्ध काम अभिगाहेंति, अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति, एत्थ मोहे पुणो पुणो सण्णा णो पाराए ।

आचाराग द्वितीयध्ययन द्वितीय उद्देशो।

॥ भावार्थ ॥

अज्ञानी मूर्ख जीव परीषह उपसर्ग आने से आज्ञा बाहिर होके

सयम से भ्रष्ट होते हैं, और कहते हैं हम अपरिग्रही है दीक्षा लेके मुनि का वेश लजाते हैं, काम भोग प्राप्त होने से अभिग्रहण करते हैं कामादि प्राप्त करने को उपाय करते रहते हैं इस तरह आज्ञा बाहिर धर्म कहने वाले जो हैं वे वार २ मोह में फसे हुए संसार का पार नहीं पाते।

॥ बोल चमालीसवा ॥

आज्ञा बारे उद्यम, आज्ञा माहि आलस्य, ए दो बोल मत होज्यो, यह कुशल पुरुष भगवान् की श्रद्धा छै। मा० सू० आचाराग अ० ५ उ ६।

॥ दोहा ॥

कुशल पुरुष महावीर नी यह श्रद्धा छे सार।
आज्ञा में उद्यम सदा, नहि उद्यम आज्ञा वार ॥१८३॥
उद्यम आज्ञा बाहिरे, आज्ञा में आलस्य।
यह दोनू मत होयज्यो, इम भाख्यो कुशलस्य ॥१८४॥
धुर आचारांगे कह्यो, पचम अध्ययने पेख।
छट्ठा उद्देशा विषै, जिन दर्शन इम लेख ॥१८५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरूवट्ठाणा।
एत ते माहोउ, ए य कुसलस्स दसणं ॥

आचाराङ्ग पंचम अध्ययने षष्ठोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक आज्ञा बाहिर विपरीत प्रवृत्ति में उद्यमी बनते हैं और कितने हो जिनाज्ञानुकूल प्रवृत्ति में निरुद्यमी होते हैं मत यह दोनों

अर्थात् आज्ञा में आलस्य और आज्ञा बाहिर उद्यम कभी न होवे, यही कुशल पुरुष भगवान् महावीर का दर्शन है।

॥ बोल पैंतालीसवा ॥

प्रवचन से विरुद्ध प्ररूपने वाला ने भगवान निन्हव कह्यो। सा० सू० उववाई प्रश्न १६ वें।

॥ दोहा ॥

प्रवचन विरुद्ध प्ररूपणा करे ते निन्हव धार।
सूत्र उववाई में कह्यो उन्नीसवा प्रश्न मझार ॥१६६॥
सप्त निन्हव प्रवचन तणा भाख्या श्री जगतार।
करता अशुद्ध प्ररूपणा श्रद्धा तास असार ॥१६७॥

। सूत्र पाठ ।

इच्च ते सत्त पवयण णिण्हगा।

उववाई प्रश्न १६ वा।

॥ भावार्थ ॥

यह सातों प्रवचन के निन्हव हैं ॥ इति ॥

॥ बोल छयालीसवा॥

राग द्वेष दोनू पाप कह्या दोना से न्यारा रहे सो ससार मे नहीं रुलें। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ३१ वें गाथा ३ री।

वाणिया नी परे घणो झूरसी । मा० सू० सूयगडांग अ० ३ उद्देशो ४ गाथा छठी ।

॥ दोहा ॥

साता दियां साता हुवे, इम को कहे अविचार ।
तिण ऊपर षट् बोल इम, भाख्या श्री जगतार ॥२००॥
शाक्यादिक इक एक जे, वा स्वतीर्थी जेह ।
परिग्रह थी डरता थका, ते जे इम भाखेह ॥२०१॥
साता सें साता हुवे, एम कहे जे कोय ।
ते आर्य मार्ग से वेगला, समाधि से अलगा होय ॥२०२॥
वलि हेलण हार जिन धर्म ना, ते अल्प सुखारे काज ।
घणा सुखां मे हारता, अक्षे अमोक्ष रो काज ॥२०३॥
लोह वाणिया नी परे, घणा झूरसी जेह ।
साता दियां साता हुवे, जे कोई एम वदेह ॥२०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इह म गउ मासति, सात सातेण विज्जति ।
ज तत्थ आरिय मग्ग परम च समाहिए ॥६॥
माण्य अत्र मन्नता, अप्पण लुपहा वहु ।
एतस्स अमोक्खाए, अय हारि व झूरह ॥७॥

॥ भावार्थ ॥

यहां एक एक ऐसा कहते हैं कि साता से साता होती है अर्थात् सुख देने से सुख होता है। ऐसा कहनेवाले आर्य मार्ग से पृथक् है १

॥ बोल अडतालीसवा ॥

साधू होकर अनुकम्पा रे वास्ते त्रस जीवा ने बांधे बंधावे बांधताने अनुमोदे, तथा अनुकम्पा करि बंध्या जीवा ने छोड़े छोड़ावे छोड़ता प्रते भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ उ० १२ वें, बोल १ तथा २ रे।

॥ दोहा ॥

मुनि अनुकम्पा आण कर, त्रस जीवा ने जोय ।
तृणादिक पाशे करी बांधे बंधावे कोय ॥२३५॥
अथवा बन्धिया देख कर, छोडे छोडावे तास ।
बांध्या छोड्या भलो जाणिया, प्रायश्चित चौमास ॥२३६॥
निशीथ उद्देशे बारमें, पहले दूजे बोल ।
यह करुणा आज्ञा बाहर है, आंख हिया री खोल ॥२३७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू कोलुण पडियाए, अण्णयरिं तस पाण जाय ।
तण पासयएणा मुंज पासयएणा चम्म पासयएणा रज्जु ॥
पासयएणा सुत्त पासयएणा बंधइ बंधं त वा साइज्जइ ॥१॥
जे भिक्खू बंधेल्लय वा मुयइ मुयं त वा साइज्जइ ॥२॥

(निशीथ उद्देशे १२ वें)

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अनुकम्पा के लिये अन्य त्रस प्राणियां को नांति अर्थात् त्रस जीवों को घास की डोरी से, चमड़े का डोरी से, रज्जू की डोरी से, इत्यादिक डोरियों से बाधे बँधावे बाँधते को अनुमोदे तो चौमासो प्रायश्चित्त ॥ १ ॥ ऐसे ही बँधे हुवे त्रस जीवों को देख अनुकम्पा करके छोड़े छोड़ावे और अनुमोदे तो चौमासिक प्रायश्चित्त ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

शब्द अर्थ अज्ञ जेह रे, ते पीदूक द्रष्टा द्रम कहै ।
कोलुण दीन भावेह रे, बाध्या छोड्या दंड है ॥२३८॥
सतोत्तर विज्ञ कह्यो एय रे, दीन भाव द्रष्टा स्यूं हुवे ।
त्रस प्रति बाध्या तेय रे, गरीब भाव होवे किण तणो ॥
मुनिवर दीनज होय रे, त्रस बाधे किण कारणे ।
कदा दीन त्रस जोय रे तो साधु अनुकम्प करि ॥२४०॥
तथा बधिया प्रति देख रे, दीन पणो मुनि स्यूं करै ।
जो दीन अनुकम्पा लेख रे, सावद्य तिण सूं प्रायश्चित कह्यो
न्याय दृष्टि अवलोय रे, लघु चूर्णि जिन दास कृत ।
तिहा कोलुण शब्दे जोय रे कोलुण अनुकम्प अर्थ॥२४२॥

॥ जिनदास आचार्यकृत लघुचूर्णिका ॥

भिक्खू पुव्व भणिओ कालूणनि-कारुण्य अनु-कम्पा प्रतिज्ञाया इत्यर्थ ।

॥ सोरठा ॥

ब्री कहे कौतुहल काज रे कोतुथ शब्द तणो अरथ ।
तो कोतूहल कौतुहल काज रे तेह पाठ न्यारो अछे।२४३।
सत्तरमा उद्देश रे, निशीथ सूत्र में देखिये ।
बांधे वा छोडेश रे, कोऊहल वडियाए तिहां शब्द छै ॥
तिहां कौतुहल निमित्त रे मुनि त्रस प्राणी देख कर ।
बांधे छोडे एम रे, तो प्रायश्चित है मुनि भण्यो ॥२४५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू कोउहल वडियाए अण्णयरं तस पाणजाति तणपासएण वा ... बंधति बंधतं वा साइज्जइ ॥१॥ जे भिक्खू कोउहल वडियाए अण्णयरं वा मुयति मुयंतं वा साइज्जइ ॥२॥

निशीथ उ० १७ वें ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु कौतुहल निमित्त अन्य त्रस प्राणियों को पाश की डोरी से यावत् सूत की डोरी से बांधे बंधावे बांधते को अनुमोदे तो प्राय श्चित ॥१॥ जो साधु कौतुहल के निमित्त अन्य त्रस प्राणियों को छोड़े छुड़ावे छोड़ते को अच्छा जाने तो प्रायश्चित ॥२॥

॥ सोरठा ॥

कौतुहल काज मुनिराज रे बांध्या छोड्या त्रस प्रति ।
दण्ड कह्यो जिनराज रे सतरमें उद्देश निशीथ में ॥
बारमा उद्देश मझार रे कोलुण ते अनुकम्प करि ।

वाध्या खोल्या दड धार रे, त्रस जीवा प्रते, श्राखियो॥
इम विहु स्याने जोय रे,माठ शब्द छे नूनुश्रा ।
कोलुण अनुकम्प होय रे, कोऊल ते कौतुहल कह्यो ॥
तस जीवा रे माहि रे, मनुष्य तिर्यञ्च सह श्राविया ।
तसु अनुकम्पा ल्याहि रे, वाधे खोले मुनी तदा ॥२४८॥
प्रायश्चित कह्यो तिहिवार रे, सूत्र वचन ते सत्य है ।
ग्रहस्थ नो सार सभार रे, सावद्य जान मुनि नहीं करे ॥
ग्रहस्थ तणो जे काम रे, ते करवू काल्पे नही ।
कदा अकल्पनीक ठाम रे, पाम्या ग्रहस्थ अनुकम्प करि ॥
तैलादि मर्द्दन करेह रे, मुनि तनु शान्ति पमायवे ।
यह दोष उपजेह रे, द्वितीय श्रुत स्कन्धे धुर अगे ॥२५२॥
तिहा पिण कोलुण ही शब्द रे, तसु अनुकम्पा अर्थ छै।
एम इहा पिण लब्द रे, कह्यो कोलुण शब्द सारखो ॥
तथा अजीविका निमित्त रे, अर्थ करे कोलुण तणो ।
ते पिण है विपरीत रे, इहा मुनि ने काई श्राजीविका॥
किहा ही न सूत्र विषेह रे, कोलुण ते श्राजीविका ।
ज सूत्रार्थ न जाणह रे, ते मन कल्पित अर्थ करे ॥२५५॥
वलि कहै इम वाय रे अनुकम्प सावद्य न हुवे ।
निरवद्य ही कहिवाय रे, ततोत्तर न्याय विचारिये ॥२५६॥
अनुकम्पा रे काज रे, देवकी ना षट् सुत प्रते ।
सुलसा घरे समाज रे, मेल्या हरण गवेषि सुर ॥२५७॥

अनुकम्पा चित्त आण रे डोलहो पूर्व कियो देवता ।
ज्ञाता सूत्र वखाण रे अभय कुमार तणो तदा ॥२५८॥
श्रीकृष्ण ईंट उपार रे मेली वृद्ध तणे घरे ।
अंतगढ सूत्र मझार रे अनुकंपा करि तेहनी ॥२५६॥
भोग प्रार्थना कीध रे, रयणा देवी जिन ऋषि प्रते ।
ते अनुकम्पा करी प्रसिद्ध रे, ज्ञाता नवमाध्ययन में ॥
इत्यादिक बहु ठाम रे, अनुकम्पा करी ने बहु ।
कीधा सावद्य काम रे, ते सवद्य अनुकम्प इम ॥२६१॥
सांसारिक उपकार रे, तेह थी मुनि न्यारा थया ।
श्री जिन आज्ञा बार रे कार्य किया प्रायश्चित हुवे॥२६२॥
तेम इहा अवलोय रे, अनुकम्पा अर्थे मुनि ।
वस बांधे मुक्ति कोय रे, तो चौमासो प्रायश्चित ॥२६३॥

॥ बोल उनचासवा॥

मोक्ष रो मार्ग जाणे नहीं तिण ने श्री भगवान् रो आज्ञा रो लाभ नहीं। आ० सू० प्रथम आचारांग अ० ४ उ० ४।

॥ दोहा ॥

मोक्ष मार्ग जाणे नहीं, प्रथम आचारांग माहि ।
लाभ नहीं जिन आण में, तूर्य अध्ययने ताहि ॥२६४॥

उद्देशा चौथा विषे भाख्यो श्री जिनराय ।
मोक्षाभिलाषी वीर ने, मार्ग विकट कहिवाय ॥२६५॥
तिण सूं तप थी निज तनु, लोही मांस सुकाय ।
ब्रह्मचर्य धर्म करी माननीय कहवाय ॥२६६॥
प्रथम इन्द्रिया वश करी पिण मोह उदय ते बाल ।
विषयासक्त होवा थकी न सके बन्धन टाल ॥२६७॥
वलि प्रपञ्च करे घणो, एहवो पुरुष अयाण ।
मोह तिमिर में वर्त्ततो, किम पामे जिण आण ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुरणु चरो मग्गो वीराणं अणियट्ट गामीणं विगिं च मंस सोणियं एस पुरिसे दविए वीरे आयाणिज्जे वियाहिए जे धुणाति समुस्सयं वसित्ता बंभचेरंसि णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं आयाण सोय गढिए बाले अव्वोच्छिन्न बंधणे अणभिक्कंत संजोए। तमंसि अविजाणओ आणाए लंभो णत्थि त्ति बेमि ।

श्री आचारांग सूत्रे प्रथम श्रुतस्कन्धे चतुर्थ अध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मुक्ति पाने वाले वीर पुरुषों का मार्ग बहुत ही कठिन है। इसलिये हे मुनि! तपश्चर्यादि करके मांस रक्त का शोषण कर। जो पुरुष सदैव ब्रह्मचर्य पूर्वक रह कर तप से शरीर का दमन करते हैं वे मोक्ष प्राप्त करने वाले वीर पुरुष माननीय होते हैं। और जो पुरुष गृहवास में कदाचित् इन्द्रियों का दमन करते भी हैं और पीछे मोह के उदय से विषयों में आसक्त हो जाते हैं ऐसे बाल (अज्ञानी) पुरुष किसी बन्धन से नहीं

छूटते और प्रपञ्च रहित नहीं होते। अतः ऐसे अज्ञान पुरुष को मोहमय अन्धकार में वर्तते हुए, भगवान की आज्ञा का लाभ नहीं होता है।

॥ बोल पचासवां ॥

ब्राह्मण ने जिमाया तमतमा कही। सा० सू० उ० अ० १४ गाथा १२।

॥ दोहा ॥

विप्र जिमाया तमतमा, कह्यो भृगु ना पुत्र।
उत्तराध्ययने चवदमे, गाथा बारमी सूत्र ॥२६९॥
वेद भण्या नहीं त्राण शरण, नहीं आतम उद्धार।
भोजन जिमाया तमतमा, पहोंचे नरक मझार ॥२७०॥
सुत जाया नहीं शिव गति, ते माटे अवधार।
गृहस्थाश्रम नहीं रहा इमे, लिस्या संयम भार ॥२७१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वेया अहिया न भवंति ताणं, भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज एयं ॥१२॥

उत्तराध्ययने अ० १४।

॥ भावार्थ ॥

वेद पढ़ने से हो त्राण शरण नहीं होता भोजन देने से तमस्तमा में जाते हैं और पुत्रादि होने से संसार समुद्र नहीं तिरते, अतः अहो तातजी तुम्हारे वचनों को कैसे स्वीकार।

॥ सोरठा ॥

इहां काई युक्ति लगाय, र कहे भृगु सुत तो ए इस्यूं हो।
तसु वच केम मनाय र वा तमातम मिथ्यात हुवे ॥२७२॥
तसु उत्तर सुविचार र न्याय दृष्टि अवलोकिये।
इग्यारहवों गाथा मझार र भगवन् गणधर इम कह्यो॥
बालि वचन विमास र तूर्य पदे इम आखियो।
तो मिथ्या वच किम तास रे गणधर तास सरावियो॥
साचा सुत वच मान र भृगु पिण संयम लियो।
जिन मत साचो जान र निज मत खोटो ग्रहियो ॥२७५॥
कह्यो हुवे मिथ्यात र धर्म श्रद्धी जिमाविया।
ते लख पिण घात र पाप बन्ध भोजन दिया ॥२७६॥
अवचरा र मझार र अन्धकार अन्धकार छै।
रोरवादि नरक विस्तार र तमतमा नू अर्थ इम ॥२७७॥

॥ बोल इकावनवा ॥

भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति तम सापियस्त सस्नरमिन् रात्र रोरवादिके नरकेण वाक्यालकारे।

॥ सोरठा ॥

तथा सूयगडाङ्ग मझार र, आर्द्र मुनि पिण इम कह्यो।
द्वितीय श्रुतस्कन्धे धार र अध्ययन छट्ठा मे विधे ॥२७८॥

स्नातक दोय हजार रे, विषयासक्त विप्रा प्रते ।
जावे नरक मझार रे, भोजन जिमाया इम कह्यो ॥२७९॥
मास लोलुपी जेह रे एकान्त पक्षी खाण रा ।
घर २ भमता तेह रे पेट भराई कारणे ॥२८०॥
ब्रह्म क्रिया न पालेह रे, हिंसा धर्म प्रशंसता ।
वलि निषेधना ते करेह रे, प्रधान दया धर्म तेहनी ॥२८१॥
हीनाचारी एक रे एहवा प्रते जे जीमावता ।
जावे नरक मझार रे सुरावतार किहां थी रह्यो ॥२८२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सिणाय गाण दुवे य सहस्स, जे भोयए णितिए कुलालयाणं ।
से गच्छइ लोलुप संपगाढ, तिव्वा भितावी णरगाहि सेवी ॥४४॥
दयावरं धम्म दुगंछ माणे, वहावहं धम्म पसंस माणे ।
एगपि जे भोय यइ असीलं, णिवोणि संजाइ कओ सुरेहिं ॥४५॥

सूत्र कृतांग द्वि० श्रुत० षष्ठमध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

आर्द्र कुमार मुनि को ब्राह्मणों ने कहा कि दो हजार विप्रों को जिमाने से पुण्य का स्कन्ध उपार्जन करके देवता होता है। तब आर्द्र कुमार मुनि ने उत्तर दिया कि जो दो हजार स्नातक धामिष्याथीं ब्रह्म चर्य क्रिया रहित घर २ में भिक्षा मांगनेवाले कुपात्र ब्राह्मणों को जिमाने से महा ताप वेदना वाले नरक में जाते हैं। क्योंकि जो प्रधान दया धर्म है उसको तो वे निन्दा करते हैं और हिंसा धर्म की प्रशंसा करते हैं ऐसे एक को भी भोजन कराने से सुरगति तो जहाँ हो वहाँ परन्तु नरक गति प्राप्त होती है।

॥ बोल बावनवा ॥

साधु रे सर्व थकी अठारह पाप रा त्याग छै पिण देश थकी नहीं।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे त्यागिया, पाप अठारह जान।
उववाई प्रश्न इकोसवें साधु महा गुणखान ॥२८३॥
गामागर अरु नगर मे, यावत् सन्निवेश।
इक २ मनु एहवा अछे साभलजो सुविशेष ॥२८४॥
अणारंभ अपरिग्रही, धार्मिक धर्म इष्ट।
यावत् धर्म नी वृत्ति कल्प, सुशील सुव्रती शिष्ट ॥२८५॥
आनन्दकारी मुनि तिका, सर्व प्राणातिपात।
यावत् सर्व परिग्रह थकी, निवृत्त तेह सुजात ॥२८६॥
क्रोध मान माया अरु, लोभ थकी मुनि तेह।
जाव मिथ्या दर्शन शल्य थी, प्रति विरत्या छै तेह ॥२८७॥
सब आरम्भ समारम्भ वलि, करण करावण जाण।
पचन पचावन तेहना, सर्वथा किया पचखान ॥२८८॥
कूटण पीटण तर्जना ताडन बध अने बन्ध।
परि क्लेशें थी निवृत्त थया छोड दिया सर्व धन्ध ॥२८९॥
सर्व थकी न्हावा तणा, वलि मर्द्दन पीठी जान।
तैल विलेपन आदि ना, छै त्यारे पचक्खाण ॥२९०॥

शब्द स्पर्श रस रूप गन्ध, माला ने अलङ्कार।
सर्व प्रकारे छांडिया सावद्य योग व्यापार ॥२८१॥
कष्ट परिताप पर प्राणि ने, होवै जेह उपाय।
यावज्जीव निवर्त्या तेह थी, ते अणगार कहाय ॥२८२॥
इरिया भाषा समिति युत, निर्ग्रन्थ वचनज तन्त।
तसु आगे करके मुनि, विचरे महा गुणवन्त ॥२८३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति तंजहा— अणारम्भा, अपरिग्गहा, धम्मिया, धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा, सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया सव्वाओ आरम्भ समारम्भाओ पडिविरया, सव्वाओ करण करावणाओ पडिविरया सव्वाओ पयण पयावणाओ पडिविरया सव्वाओ कोट्टण पिट्टण तज्जण तालण वह बंध परिकिलेसाओ पडिविरया सव्वाओ ण्हाण मद्दण वण्णग विलेवण सद्द फरिस रस रूव गंध मल्लालंकाराओ पडिविरया जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाण परियावण करा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए। से जहा णामए अणगारा भवंति इरिया समिया भासा समिया जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति।

सूयगडांग श्रु २ अ २।

॥ भावार्थ ॥

ये जो ग्राम आगार यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं तद्यथा — सर्वथा छवों ही कायों के आरम्भ रहित, सर्वथा मृषावाद रहित सर्वथा अदत्त रहित, सर्वथा मैथुन रहित सर्वथा धातु मात्र परिग्रह रहित होते हैं, जिन्हों को धर्म ही इष्ट है यावत् धर्म की वृत्ति करते हुए विच रते हैं ये सुशील शुद्धाचारी सुव्रती अच्छा काय कर आनन्द माननेवाले सब प्रकार तीन करण तीन योग से प्राणातिपात से निवृत्त हुए यावत् परिग्रह निवृत्त हुए तैसे ही सर्व प्रकार से क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवृत्त हुए, सब तरह आरम्भ समारम्भ से निवृत्त हुए पच पचन पचावनादि क्रिया से निवृत्त हुए सब तरह से कूटन पाटन तर्जन ताडन वध बन्धन क्लेश से निवृत्त हुए एव सब तरह से स्नान, पानी मर्दन तिलकादि विलेपन से निवृत्त, शब्द स्पर्श रूप गन्ध माला अलंकार आदि से सर्वत निवृत्त हुये और भी सावद्य काम योगोपाधि कर्म से अन्य प्राणी को परिताप होय ऐसे कार्य्य से जाव जीव पर्यन्त सर्वथा निवृत्त हुए ये अणगार यानी साधु होते हैं, ये ईर्या समितियन्त भाषा समितियन्त यावत् जिन प्रणीत निग्रंथ प्रवचन को आगे कर उनके अनुगामी बन विचरते हैं।

॥ बोल बावनवां ॥

साधु रा भंड उपकरण परिग्रह में नहीं कह्या मूर्च्छा राखे तो परिग्रह लागे इम कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ६ गाथा २१ वीं।

॥ दोहा ॥

वस्त्र पात्र ने कम्बल, पाय पुंछणा आदि।
संयम लज्जा अर्थं मुनि, धारे तज्ञ असमाधि ॥२८४॥

परिग्रह माहि नहीं भख्यो ज्ञात पुत्र महावीर।
मूर्छा थी परिग्रह कह्यो महा ऋषि गुण धीर ॥२८५॥
दशवैकालिक देखलो छट्ठा श्रध्ययन मझार।
इकवीसमो गाथा मझे, भाख्यो श्री जगतार ॥२८६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

ज पि वत्थ व पाय वा, क‍म्बल पाय पुच्छण।
त पि सजम लज्जट्ठा, धारंति परि हरंति य ॥२०॥
न सो परिग्गहो वुत्तो, नाय पुत्तए ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इय वुत्त महेसिणा ॥२१॥
दशवैकालिक अ० ६ गा० २१।

॥ भावार्थ ॥

जो वस्त्र या पात्र कम्बल पायपूछना आदि सयम् लज्जाथ रखे सो परिग्रह में नहीं श्री ज्ञातपुत्र महावीर स्वामी ने कहा है यदि उन पे मूर्छित भाव लावे तो परिग्रह में है ऐसा महर्षियों ने कहा है।

॥ बोल तिरेपनवा ॥

साधु रे नव कोटी पच्चखाण कह्या। सा० सू० दशवैकालिक अ० ४।

॥ दोहा ॥

त्रिविध २ नव कोटि से, साधु रे पचखाण।
दशवैकालिक में कह्यो, चतुर्थ श्रध्ययने जाण ॥२८७॥

षड् जीव निकाये प्रते, हणे हणावे नाहि।
अनुमोदे न हणतां प्रति मन वच काया साहि ।२८८।

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चेहिं छण्हं जीव निकायाणं नेव सयं दंड समारम्भेज्जा नेवन्नेहिं दण्डं समारम्भेज्जा, दण्डं समारम्भन्ते वि अन्नेन समणुजाणेज्जा जाव जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कायणं न करेमि न कारवेमि करंते पि अन्नं न समणुजाणामि।

दशवैकालिक अध्ययन ४ था।

॥ भावार्थ ॥

इन षट् जीव निकायों का स्वयं आरम्भ करे नहीं अन्य से आरम्भ करावे नहीं और करने वाले को अच्छा जाने नहीं मन वचन काया से यावज्जीव पर्यन्त वैसा करे नहीं अन्य से करावे नहीं करते को अच्छा जाने नहीं इस तरह तन करण पच्चखाण है।

॥ बोल चौपनवां ॥

आचारज नी आज्ञा बिना आहार करे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उ० ४ बोल २२ वां।

॥ दोहा ॥

आचार्य नी आज्ञा बिना अद बिन दीधा आहार।
जे साधु जो भोगवे, प्रायश्चित तसु धार ॥२८९॥

इम कह्यो सूत्र निशीथ में, चौथे उद्देशे मझार ।
गुरु आज्ञा बिन भोगव्या, भाख्यो दण्ड उदार ॥३००॥

॥ सूत्र पाठ ॥

ज भिक्खू आयरिय अदित आहार आहारतवा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा ४ बोल २२ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु आचार्य के बिना दिये चारों प्रकार का आहार करे करते को भला जाने तो प्रायश्चित ।

॥ बोल पचपनवां ॥

पुण्य पाप से जीवने पचतो दीठो कह्यो । सा० सू० उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप से जीव ने, पचतो देख्यो सोय ।
दशमे उत्तराध्ययन में, पनरमी गाथा जोय ॥३०१॥
भव ससारि ससरइ, शुभाशुभ कर्म प्रभाव ।
प्रमाद बहोल पणे करइ, न जाणे तिरण रो दाव ॥३०२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

एव भव ससार, ससरइ सुहा सुहहि कम्महि ।
जीवो पमाय बहुलो, समय गोयम मा पमाय ए ॥

उत्तराध्ययने १० वें ।

॥ भावार्थ ॥

ऐसे मज ससार में प्रमादो जीव शुभाशुभ कम करके परिभ्रमण करता है। इसलिये हे गौतम ! समय मात्र भी प्रमाद मत कर।

॥ बोल छप्पनवा ॥

पुन्य पाप ने खपावणा कह्या। सा० सू० उत्त- अ० २१ वे गाथा० २४ वीं।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप वेहू भणी, खपावण सुविशाल।
उत्तराध्ययने इकवोसमे, चौवीसमी गाथा न्हाल ॥३०३॥
द्विविध खपाया शीघ्र ते, पुन्य पाप चसराल।
अपुनरागम गति लही, भवाब्धि तर्यो समुद्रपाल ॥३०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविह खवे उय पुएणा पाव निरगणे सव्वाओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्द व महाभवोघ, समुद्द पाले अपुणागमं गए तिबेमि॥
उ० अध्य० २१ वें गा० २४ वीं।

॥ भावार्थ ॥

पुन्य पाप दोनों का क्षय कर शैलेसो अवस्था को प्राप्त हो महा प्रमादिक भव समुद्र है उसे तैर कर पुन वापिस न आना पडे ऐसी जो सिद्ध गति है सो समुद्रपाल मुनि प्राप्त हुये।

॥ बोल सतावनवां ॥

उसन्ना पासत्था अर्थात् ढीला शिथिलाचारी ने वन्दना करे प्रशसा करे करावे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देश १३ बोल ४२ ४३ ४४-४५।

॥ दोहा ॥

जे मुनि पासत्था प्रते, वन्दना करे कराय।
करता ने भलो जाणिया चौमासी प्रायश्चित थाय ॥३०५॥
दोषो मूल उत्तर गुणे ते उसन्ना कहवाय।
तेहने पिण वादा थका, इमहिज दण्ड सुथाय ॥३०६॥
वलि पासत्था उसन्ना तणो, करे प्रशसा कोय।
प्रायश्चित चौमासी तसु निशीथ तेरहवें जोय ॥३०७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू पासत्थं वदइ वन्त वा साइज्जइ ॥४२॥
जे भिक्खू पासत्थं पसंसति पसंस त वा साइज्जइ ॥४३॥
जे भिक्खू उसन्नं वदइ वदंत वा साइज्जइ ॥४४॥
जे भिक्खू उसन्नं पसंसइ पसंस तं वा साइज्जइ ॥४५॥

निशीथ उ० १३।

॥ भावार्थ ॥

जो भिक्षु पासत्था अर्थात् शिथिलाचारी को वन्दे वन्दावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥४२॥ जो भिक्षु शिथिलाचारी की प्रशसा करे करावे अनु

मादे तो प्रायश्चित ॥४३॥ जो भिक्षु उसन्ना यानी मूल उत्तर गुणों में दोष लगाने वाले को वन्दे वन्दावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥ ४४॥ जो भिक्षु उसन्ना की प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ।

॥ बोल अठावनवा ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करता प्रते अनुमोदे तो प्रायश्चित । सा० सू० निशीथ उ० १२ वें बोल १७ वू ।

॥ दोहा ॥

ग्रहस्थ नी औषध करे, जो साधु मुनिराय ।
निशीथ उद्देशे बारहवें, दंड कह्यो जिनराय ॥३०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

ज भिक्खू गिहि तिगिच्छ करइ कर तं वा साइज्जइ ॥१७॥

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करते को अनुमोदे तो प्रायश्चित ।

॥ बोल उणसठवा ॥

सामायक दो कही १ आगार सामायक २ अणगार सामायक । सा० सू० ठाणांग ठाणे २ उ० ३ रा ।

॥ दोहा ॥

सामायक दो विध कही, आगार अने अणागार ।
स्थानाग ठाणे दूसरे, तीजा उद्देशा मझार ॥३०९॥
आगार सामायक गृहस्थ रे करे आगार सहित ।
अणागार अणगार रे, ते आगार रहित ॥३१०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे सामाइए पण्णत्ते तंजहा —आगार सामाइए चेव अणा-
गार सामाइए चेव ।

स्थानांगे द्वितीय स्थाने ।

॥ भावार्थ ॥

दो प्रकार की सामायिक कहा तद्यथा—आगार सामायिक अर्थात् गृहस्थ श्रावक के मुहूर्तादिक का मर्याद सहित सामायिक। दूसरा अणागार सामायिक यानी साधु के जो महाव्रत रूप यावज्जीवन पर्यन्त है सो आगार रहित ।

॥ बोल साठवां ॥

चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र २ अणा
गार चारित्र । सा० सू० स्थानाग ठाणे २ उ० १ ।

॥ दोहा ॥

चारित्र धर्म द्विविध कह्यो, आगार अणागार जाण ।
स्थानाग ठाणे दूसरे, पहले उद्देशे पिछाण ॥३११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चरित्त धम्मे दुविहे पण्णत्ते तं जहा —आगार चरित्त धम्मे [illegible] अणागार चरित्त धम्मे चेव ।

सू० स्थानाङ्ग द्वितीय स्थाने ।

॥ भावार्थ ॥

चारित्र धर्म के दो भेद प्ररूपे तद्यथा —आगार चारित्र धर्म सो गृहस्थ [illegible] सहित स्थूलपने व्रत आदरे । अणागार चारित्र धर्म सो [illegible] का सर्वथा त्याग कर पंच महाव्रत आदरे ।

॥ बोल इकसठवां ॥

धर्म दोय कह्या—श्रुत धर्म १, चारित्र धर्म २
मा० सू० ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ ।

॥ दोहा ॥

दोय धर्म जिन भाखिया, श्रुत चारित्र उदार ।
श्रुत से आगम जिन कथित, चारित्र से व्रत धार ॥२१२॥
स्थानांग स्थाने दूसरे, प्रथमा उद्देशे मझार ।
भाखि सर्वोत्तमा मे जिये, कह्यो धर्म विस्तार ॥२१३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दु [illegible] धम्मे [illegible] सुयधम्मे चेव चरित्त धम्मे चेव ।

ठाणांग ठा० २ ।

॥ भावार्थ ॥

[illegible] धर्म दो प्रकार का कहा — श्रुत धर्म [illegible] रूप १, चारित्र धर्म पंच [illegible] रूप २ ।

॥ बोल बासठवा ॥

कर्म खपावा री करणी दोय कही—संयम, और तप। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २८ वें गाथा ३६ वीं।

॥ दोहा ॥

करणी कर्म खपायवा, दोय कही जिनराय ।
उत्तराध्ययन अठवीसमें छत्तीसवीं गाथा साय ॥३१४॥
पूर्व संचित कर्म ने, तप संयम थी खपाय ।
हीन करण सब दुःख तणों, महा ऋषि करणी कराय ॥

। सूत्र पाठ ।

खवत्ता पुव्व कम्माइं, संजमेण तवेण य ।
सव्व दुक्ख पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो तिबेमि ॥३६॥

उत्तराध्ययन अ० २८ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

सतर प्रकार संयम से और बारे प्रकार तप से पूर्व संचित कर्मों को क्षय कर और जन्म जरा मृत्यु रूप सब दुःखों से रहितार्थ महा ऋषि करणी करे।

॥ बोल तिरेसठवा ॥

मार्ग दोय कह्या—भगवान रो प्ररूप्यो मार्ग १, और पाखंडिया रो प्ररूप्यो मार्ग २। सा० सू० उ० अ० २३ वें गा० ६३ वीं।

॥ दोहा ॥

दोय मार्ग है जगत में, इक पाखण्डी कशाय ।
द्वितीय मार्ग है जिन कथित, तेह परम सुखदाय ॥३१५॥
उत्तराध्ययन तेवीसवें, केशी श्रमण पूछत ।
तब गोयम इह विधि कह्यो, ते सुणिज्यो धरि खंत ॥३१६॥
कुप्रवचन पाखण्डी ना, सर्व उन्मार्ग गछत ।
सन्मार्ग जे जिन कह्यो उत्तम मार्ग ते तंत ॥३१७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कु पवयण पासंडी सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया ।
सम्मग्ग तु जिणक्खाय एसमग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

। भावार्थ ।

कुप्रवचन है सो पाखण्डियों का कहा हुआ उन्मार्ग है उसमें आने वाले सर्व कुमार्ग जा रहे हैं और जो जिनवरों का कहा हुआ है सो सन्मार्ग है सोही उत्तम अर्थात् श्रेष्ट है ।

॥ बोल चौसठवां ॥

संवर गुण अने आस्रव गुण जुदा २ कह्या । सा० सू० प्र० आचाराङ्ग अ० ४ उ० २ ।

॥ दोहा ॥

संवर गुण न्यारो कह्यो आस्रव गुण कह्यो न्यार ।
प्रथम आचारांग चतुर्थ में, बुद्धिवंत करो विचार ॥३१८॥

जेह आस्रव द्वार छै, ते रोक्यां संवर थाय।
खोल्यां आस्रव होत है, इम गुण अलग कहाय ३१९॥
कर्म बंधना हेतु ते प्रवर्त्यां आस्रव होय।
तसु त्याग किया संवर हुवे, इम जुदा २ गुण जोय ॥३२०॥
आस्रव नूं अणास्रव हुवे, अणास्रव नूं आस्रव।
प्रथमें लिण २ भाव में, पृथक २ गुण सर्व ॥३२१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा, जे अणासवा ते अपरिस्सवा जे अपरिस्सवा ते अणासवा।

प्र० आचाराङ्ग अ० ४ उ० २।

॥ भावार्थ ॥

जो कर्म बांधने के हेतु हैं वे कर्म खपाने के या रोकने के हेतु हो सकते हैं, जो कर्म खपाने के या रोकने के हेतु हैं वे कर्म बांधने के हेतु हो जाते हैं, तथा जितने कर्म बांधने के हेतु हैं वे रोकने के हेतु हो जाते हैं और जितने कर्म रोकने के हेतु हैं वे बांधने के हेतु हो जाते हैं अर्थात् जिन २ कारणों से कर्म बंधन है वे आस्रव द्वार हैं और उन्हीं का त्याग करने से वेही संवर हो जाते हैं—जैसे मिथ्या श्रद्धना मिथ्यात्व आस्रव द्वार है, हिंसा करना प्राणातिपात आस्रव द्वार है, और मिथ्या श्रद्धनों का त्याग कर सम श्रद्धना सम्यक्त्व संवर द्वार है इसी तरह हिन्सा का त्याग करे सो अहिंसा संवर द्वार है, तात्पर्य कर्म आने के जो द्वार हैं सो खुल्ले द्वार हैं उनको बंध करे सो संवर है, इस प्रकार आस्रव और संवर का गुण अलग २ है।

॥ बोल पैंसठवां ॥

करणी च्यार कही—इह लोक रे हित १, परलोक रे हित २ कीर्ति वर्ण शब्द ने पूजा श्लाघा रे हित ३ निर्जरा रे हित ४ इण च्यार प्रकार में से एकान्त कर्म निर्जरा रे हित तप करणो कह्यो। सा० म० दशवैकालिक अ० ९ उ० ४।

॥ दोहा ॥

करणी च्यार प्रकार नी कही दशवैकालिक माहि।
नवमा अध्ययन ने विषे चौथे उद्देश ताहि ॥३२२॥
इह लोक अर्थ तप नहि करे वलि नही परलोक ने हेत।
वर्ण श्लाघा शब्दादि निमित्त न करे तप संकेत ॥३२३॥
एकान्त निर्जरा कारणे तप करणो कह्यो सोय।
समाधि तप चौथे पदे तसु गुण श्लोके जोय ॥३२४॥
नित्य विविध गुण होत हैं आस रहित तप आसक्त।
निरजरा अर्थी पाप क्षय करे तप समाधि सदा संयुक्त ॥

॥ मूल पाठ ॥

च [illegible] तव सम हि भवइ त जहा —नो इह लोगट्ठयाए [illegible] तव महि ट्ठिज्जा नो कित्ति वण्ण [illegible] तव महि ट्ठिज्जा नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तव महि ट्ठिज्जा [illegible] भवइ [illegible] विविह गुण तवोरए निच्च,

भवइ निरासए निज्जरट्ठिए, तव साधुणइ पुराण पावगं जुत्तोसया तव समाहिए ।

दशवैकालिक भ० ६ उ० ४ ।

॥ भावार्थ ॥

च्यार प्रकार तप समाधि कह्या—इस लोक के सुखों के लिये तप नहीं करे १, परलोक के सुखों के लिये तप नहीं करे २, कीर्ति वर्ण शब्द श्लाघा के लिये तप न करे ३ एकान्त निरजरा का अर्थी होवे तप करे ४, चतुर्थ पद जो निर्जरार्थी होय तप करे जिसका गुण श्लोक में कहा सो कहते हैं—तप समाधि में सदा युक्त सांसारिक आशा रहित निरजरा का अर्थी, पूर्व कृत पापों का नाश करता है ।

॥ बोल छासठवां ॥

प्रज्ञा दोय कही—ज्ञान प्रज्ञा १, पचखाण प्रज्ञा २, ज्ञान प्रज्ञा करी जाणें और पचखाण प्रज्ञा करी पचखाण करे । सा० सू० आचाराङ्ग प्र० श्रु० अ० १ ।

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे वर्णवीं प्रज्ञा ते बुद्धि ज्ञान ।
जाणे ज्ञान प्रज्ञा करी, प्रत्याख्यान पचखान ॥३२६॥
धुर आचारांगे कह्यो, धुर अध्ययन मझार ।
द्विविध प्रज्ञा इणप्रकार नूं, बुद्धिवंत करे विचार ॥३२७॥
समवी क्रिया भेद प्रते, द्विविध प्रज्ञा यौ जेह ।
समझ कर्म कारण भणी, दूर रहै मुनि गुण गेह ॥३२८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्स ते लोग सि कम्म समारम्भा परिणाया भवति, सेहु मुणी तिबमि ।

प्र० आचारांग अ० १ उ० १ ।

॥ भावार्थ ॥

समस्त वस्तुओं के जानने वाले भगवान केवलज्ञान से साक्षात देखके उपरोक्त जो क्रियाओंके भेद बताये तथा दो प्रकार की प्रज्ञा बताई उन्हें अच्छी तरह समझ के कर्मोंके कारणों से दूर रहे सो मुनि कहलाते हैं।

॥ बोल सडसठवा ॥

धर्म दोय कह्या—आगार धर्म १, अणागार धम २, सा० सू० उववाई समवशरण इधकार में ।

॥ दोहा ॥

धर्म दोय प्रकार नूं, कह्यो उववाई माहि ।
आगार ने अणगार रो ते व्रत में धर्म कहाहि ॥३२८॥
सर्व प्रकारे मुण्ड हो, आगार ते अणगार ।
प्रवर्ज्या अङ्गीकार करि, अणागार धर्म धार ॥३३ ॥
हिन्सा सर्व प्रकार से, मृषा सर्व प्रकार ।
चोरी मैथुन परिग्रह, सर्व प्रकार निवार ॥३३१॥
सर्व प्रकारे त्यागियो, रात्रि भोजन जेह ।
अहो आयुष्यमान ते, अणागार मामाद कहेह ॥३३२॥

ये धर्म मोक्ष्या कठिया, निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थनो ज्ञान ।
ते आराधक जिन आज्ञ ना, इम भाख्यो भगवान ॥३३३॥
आगार धर्म द्वादश विध, भाख्यो श्री जिनराय ।
पञ्च अणुव्रत तीन गुण, च्यार सिक्षा व्रत माय ॥३३४॥
हिंसा झूठ अदत्त पुन, मैथुन परिग्रह जान ।
स्थूल थकी त्यागन किया, ते पञ्च अणुव्रत मान ॥३३५॥
दिशि उपभोग परिभोग नी, कीधी जे मर्याद ।
विरम्यां अनर्थ दण्ड से, यह तीनूं गुण व्रत लाध ॥३३६॥
सामाइ देशावगासियं पोषह अतिथि स विभाग ।
च्यार सिक्षा व्रत एह हैं, सर्व द्वादश व्रत साग ॥३३७॥
अपश्चिम मरणान्त जे मलिहण झूसण करन्त ।
आगार सामाइ धर्म ये, अहो आयुषामन्त ॥३३८॥
इण विध धर्म में कठिया, मोक्ष्यो यह व्रत धर्म ।
विचरे श्रावक श्राविका, ते आज्ञा आराधक धर्म ॥३३९॥
जे जे अविरति निश्चिया, ते ते श्रावक धर्म ।
धर्म नहि आगार में, यह जिन शासन मर्म ॥३४०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

धम्म दुविहे पण्णत्ते तं जहा —अगार धम्मे य १, अणगार धम्मे य २ [illegible] इह खलु सव्व [illegible] मुंडे भवित्ता अगाराओ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मइुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गाहाओ वेरमणं, सव्वाओ राई भोयणा ओ वेरमणं, अयमाउसो अणगार सामाइए धम्म पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए णिग्गंथ णिग्गंथिया विहरमाणे आणाए आराहए भवति। आगार धम्मं दुवालसइ विहं आइक्खइ त जहा—पंचअणुव्व-याइ तिण्णि गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खा वयाइ, पंचअणुव्वयाइ त जहा—थूलाओ पाणाइ वायाओ वेरमणं थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णा दाणाओ वेरमणं, सदारा संतोस इच्छापरिमाण थूलाओ परि-ग्गहाओ वेरमणं, तिण्णि गुणव्वयाइ त जहा—दिसिव्वय, उवभोग, परिभोग परिमाणं, अणत्थ दंड वेरमणं चत्तारि सिक्खा वयाइ त जहा—सामाइय देसावगासिय पोसहोववासे, अतिहि स विभागो, अपच्छिम मारणंतिया संलेहणा झूसणाराहणाए। अयमाउसो अगार सामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए समणो-वासिया वा विहरमाणा आणाए आराहए भवति।

॥ भावार्थ ॥

धर्म दो प्रकार का कहा सो कहते हैं—आगारिक धर्म तो गृहवास में रहता हुआ धर्म पाले १ अणागारिक धर्म गृहवास त्याग कर साधु धर्म पाले सो निश्चय कर के सर्वथा प्रकार मुण्ड होकर आगार से अना गार हो सर्वथा प्रकार प्राणातिपात से निवृत्त, सर्वथा प्रकार मृषावाद से निवृत्त, सर्वथा प्रकार चोरी से निवृत्ते सर्वथा प्रकार स्त्री संग से निवृत्त सर्वथा प्रकार परिग्रह से निवृत्ते सर्वथा प्रकार रात्रि भोजन से निवृत्ते है आयुष्मान यह अणगार सामाइ धर्म प्ररूप्या है, यही धर्म मोक्ष है, इसी धर्म में उठे हैं साधु तथा साध्वी उपरोक्त पंच महाव्रत रूप धर्म पालते हुए विचरते हैं। आगार धर्म बारह प्रकार का कहा है

सो कहते हैं—पंच अणुव्रत तीन गुण व्रत च्यार सिक्षा व्रत इस प्रकार द्वादश व्रत रूप धर्म कहा सो कहते हैं—स्थूल से प्राणातिपात से निवृत्ते १ स्थूलसे मृषावाद से निवृत्ते २, स्थूल से चोरी कर्म से निवृत्ते ३, स्व स्त्री से ही सतोष अर्थात् पर स्त्री के त्याग ४, स्थूल से परिग्रह से निवृते ५, (उपरोक्त पंच अणुव्रत कहे) तीन गुण व्रत इस प्रकार—दिशि मर्याद अर्थात् दशों दिशा में मर्याद उपरान्त जाने का त्याग ६ उपभोग परिभोग का मर्याद ७, अनर्थ दंड परिहार ८, (च्यार सिक्षा याने चेले समान व्रत इस प्रकार) सामायक एक मुहुर्त्त प्रमाण सावद्य जोगों के त्याग ९ देशावकासी काल की मर्याद करके इच्छा प्रमाण सावद्य जोगों को त्यागे १०, पोषद उपवास ११, अतिथिस विभाग अर्थात् शुद्ध साध, साध्वियों को निर्दूषण चउदे प्रकार का दान दे १२, इस प्रकार द्वादश व्रत धर्म पालता हुआ मर्णान्ते संलेषना संथारा दिक करे, व्रतों में कोई दोष लगा हो उसका प्रायश्चित लेवे आराधक होना ऐसा व्रतमयी धर्म श्रावक श्राविकों ने साधा है, इसी धर्म में उद्दे हैं, इस धर्म में विचरते हुए जिन आज्ञा का आराधक होते हैं।

॥ सोरठा ॥

पञ्च महाव्रत रूप रे, मुनि नूं धर्म इसो कह्यो।
द्वादश व्रत सरूप रे, श्रावक धर्म जिन भाखियो ॥३४१॥
केई कहे बारमूं व्रत रे, अतिथि ने आयां प्रते।
देवे सचित अचित रे, ते पिण श्रावक धर्म है ॥३४२॥
एम सूत्र विपरीत रे, अर्थ करे निज मन थकी।
तसु उत्तर सुवदीत रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये ॥३४३॥
अव्रत थया व्रत होय रे, तो अव्रत में देवतां।

व्रति धर्म जिम जोय रे, अव्रत सेवाया पक्षा ॥३४४॥
ठाम २ सिद्धान्त रे, आरम्भ व्रत श्रावक तणूं ।
श्रमण निर्ग्रन्थ ने तारा रे, दान दे चउदे प्रकार नूं ॥३४५॥
प्रासुक दोष रहित रे, मुनी प्रते प्रतिलाभतो ।
विघरे छे रूप रीत रे, ते आरम्भ व्रत सूत्रे कह्यो ॥३४६॥
वलि देवगुरु धर्म काज रे, हिंसा करे षटकाय नौं ।
ते धर्म न कह्यो जिनराज रे, आगार धर्म विधि बूझ ॥३४७॥

॥ बोल अटसठवां ॥

ध्यान च्यार कह्या—आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान । सा० सूत्र उववाई समव शरण इधकार में ।

॥ दोहा ॥

च्यार ध्यान जिनवर कह्या, आर्त्त ने रौद्र ध्यान ।
धर्म ध्यान ए तीसरो, चौथो शुक्ल ध्यान ॥३४८॥
समवशरण इधकार में, तप वर्णन रे माहि ।
आर्त्त रौद्र नहि ध्यावणो, सूत्र उववाई ताहि ॥३४९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

[illegible]
[illegible]

[illegible]

॥ भावार्थ ॥

ध्यान कितने ? ध्यान च्यार प्रकार के मरूपे आर्तध्यान १, रौद्र ध्यान २, धर्म ध्यान ३, शुक्ल ध्यान ४।

॥ बोल उणसत्तरवा ॥

साधु असयती नें ऊभा रहे, बैठ, सो, आव, जाव, काम कर, इम न कहे। सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गा० ४७ वीं।

॥ दोहा ॥

असयती नें नहिं कहै, ऊभो रहै वा बैस।
सयन आव अरु जाव तूं, कार्य कर इम न कहेस ॥३५०॥
सावद्यकारी वचन इम, न कहै प्रज्ञावन्त।
धीर वीर जे सयती, इम भाख्यो भगवन्त ॥३५१॥
दशवैकालिक आखियो, सप्तम् अध्ययन मझार।
गाथा सैंतालीसमी बुद्धिवन्त करो विचार ॥३५२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तहेव असंजय धीरो, आस एहि कर हिवा।
सय चिट्ठ वयाहिति, नेव भासेज्ज पयव ॥४७॥

दशवैकालिक अ० ७ वीं।

॥ भावार्थ ॥

वैसे ही साधु असयती को बैठो ऊभा रहो आवो अमुक कार्य करो ऐसा सावद्य भाषा प्रज्ञावंत न कहै।

॥ दोहा ॥

ए गुणोत्तर बोल इम, भाख्या आगम मांय ।
लोंकाजी संग्रह किया, तिण सू लोंका हुंडी कहाय ।३५३।
प्रगटे पञ्चम् अर्क में, भिक्षु महा गुण धार ।
श्री जिन आज्ञा शिर धरी, प्रगट कियो उजियार ॥३५४॥
यथा तथ्य बोलखाणियो, यह प्रभु तेरापन्थ ।
पाले महाव्रत पञ्च समिति, तीन गुप्त निर्ग्रन्थ ॥३५५॥
हिंसा धर्म उथापियो, दयामयी धर्म दिपाय ।
कहणी करणी एकसी, आगम न्याय बताय ॥३५६॥
श्री जिन धर्म अनादि रो, हुआ अनन्त अरिहन्त ।
ते जिम भाख्यो तिम कह्यो, निशङ्क सूं भिक्षु सन्त ॥३५७॥
तसु पट भारीमालजी, तीजे पाट ऋषिराय ।
जयगणि चौथे पाट वर, पण्डित प्रसिद्ध कहाय ॥३५८॥
मघवा सम मघवा गणी, पञ्चम् पट अवलोय ।
पाट छठे माणक भला, सप्तम् डाल गणीश्वर जोय ॥३५९॥
वर्त्तमान शासन धणी अष्टम पाटे जान ।
सुखद दाता सुरतरु समां, कालूगणी गुणवान ॥३६०॥
दिन २ वृद्धि ज्ञान नी, चारित्र गुण इधकाय ।
दिन २ सुख सम्पति बढ़े, सुगुरु तणे सुपसाय ॥३६१॥

दिन २ ऋद्धि सम्पजे, वीर्य लब्धि प्रगटाय ।
दिन २ सद्बुद्धि वधे सिद्धि नैड़ो थाय ॥३६२॥
समकित व्रत सुध पालिया, सोझे वाञ्छित काज ।
दुःख दोहग दूरा टले, पामे अविचल राज ॥३६३॥
भिक्षु कृत न्यायार्थ कृत, ग्रन्थ माहि अधिकाय ।
चारू न्याय बतावियां, प्रगट पणे सुखदाय ॥३६४॥
तसु अनुसारे मैं इहां, दोहा सोरठा माहि ।
न्याय कह्यो किञ्चित पणे, देख २ अरि ताहि ॥३६५॥
सूत्र पाठ जे जिम कह्या, ते तिम लिखा इण स्थान ।
ओछा इधक आया हुवे, तो मिच्छामि दुक्कड जान ॥३६६॥
अक्षर लघु दीर्घादि नूं, नहि मुज ज्ञान विशेष ।
लघु बुद्धि माफक रचौ, सोरठ दोहा अशेष ॥३६७॥
तिण सूं पण्डित जन लिखें, वांचि न करस्यो हास्य ।
गुण ग्राही गुणवन्त नूं, सदा अछू मैं दास ॥३६८॥
श्रमणोपासक श्रमण नूं, थी जिन मत मैं सोर ।
समकित धर्म साधर्मी फुन, श्रावक नूं लघु वीर ॥३६९॥
श्री श्री कालु गणपति, प्रतपो जेम जिनन्द ।
तसु अनुग्रह दिन २ इधक, गुलाबचन्द आनन्द ॥३७०॥
गत उन्नीस तियांसियें, विक्रम सम्वत् एह ।
जोड़ रची हुण्डी तणी, जयपुर नगर विषेह ॥३७१॥

॥ कलश ॥

(चाल गीतक छन्द)

गुण रयन वयन जिनेश केरा, अति भलेरा जानिये। जे कह्या, जे जिम सत्य तथ्य, सुअथ्य पथ्य पचानिये। धरि आमता प्रतीति रीति, विनीत केरी आनिये। सुगुरु वाचा सर्व साचा अधिक आद्या मानिये। १। तज कपट लपट मिथ्यात नीं, निज आधिदीं सुध ल्याविये। अव्रत घटावी व्रत वधावी, आतम भावे भाविये। सुख सम्पदा निज घर घणी, गुणवंत ना गुण गाविये। कहे गुलाबचन्द आनन्द अति ही, सुगुरु सेवा पाविये॥ २॥



अथ जिन आज्ञा को चौढालियो

दोहा

केई पाखण्डी जैन रा, साधु नाम धराय। ते पाप कहे जिन आज्ञा मझे, कूडा कुहेत लगाय ॥१॥ आहार पाणी साधु भोगवे, ते श्री जिन आज्ञा सहित। तिण में प्रमाद ने अव्रत कहे, त्यांरी श्रद्धा घणी विपरीत ॥ २ ॥ वलि वस्त्र पात्र कामली इत्यादिक उपधि अनेक। ते जिन आज्ञा स्यूं भोगवे, तिणमें पाप कहे ते विना विवेक ॥३॥ त्यां श्री जिन धर्म नहीं ओलख्यो, जिन आज्ञा पिण ओलखी नांह। तिणस्यूं अनेक बोला तणो, पाप कहे जिन आज्ञा रे मांह ॥ ४ ॥ कहे नदी उतरे तिण साधु ने, आज्ञा दे जिन आप। आ प्रत्यक्ष हिंसा देखल्यो आज्ञा छै तो पिण पाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलां मझे आज्ञा दे जिनराय। जठे हिंसा थावे छै जीव री, तठे पाप लागे छै आय ॥६॥ इम कहे ने जिन आज्ञा मझे, थापे पाप एकंत। हिवे ओलखाऊं जिन आगन्यां ते सुणज्यो मतिवंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

(भवियण सेवो रे साध सयाणा —एदेशी)

जे जे कारज जिन आज्ञा सहित छै, ते उपयोग सहित करै कोय। ते कारज करता घात होवै जिवांरी तिणरो साधु नै पाप न होय रे॥ भवियण जिन आगन्या सुखकारी ॥ १ ॥ जीवां तणी घात हुई साधु थी, त्यांरो साधु नै पाप न लागै। जिन आगन्या पिण लोपी न कहिजे, वलि साधु रो व्रत न भागै रे ॥ २ ॥ आ इचरज वालो बात उघाडी, आचा रे हिये कीम समावे। ज्या जिन आज्ञा ओलखी नही पूरी, ते जिन आज्ञा में पाप बतावै रे ॥ ३ ॥ नदी उतरै जब शुद्ध साधु नै आज्ञा दे श्रीजिन आप। जो कर नदी उतरता पाप होवै तो आज्ञा रे त्यांने पिण पाप रे ॥४॥ छद्मस्थ साधु नदी उतरै जब, त्याने केवली आज्ञा दे सोय। पोते पिण केवली नदी उतरै छै, पाप हुसी तो दोया ने होय रे ॥ ५ ॥ जे नदी उतरै छै केवल ज्ञानी, त्याने पाप न लागै लिगार। तो छद्मस्थ ने पाप किण विध लागै, आ दोया री एक आचार रे ॥ ६ ॥ छद्मस्थ ने केवली नदी उतरै जब दोया स्यु होवै जीवां री घात। जो जीव मुवा त्यांरो पाप लागै तो, दोया ने लागै

प्राणातिपात रे ॥ ७ ॥ केवल ज्ञानी नदी उतरे त्याने पाप न लागे कोय। तो छद्मस्थ साधु नदी उतरे जब त्याने पिण पाप न होय रे ॥ ८ ॥ कोई कहे केवली ने तो पाप न लागे, नदी उतरता जोग रहे शुद्ध। पिण छद्मस्थ ने पाप लागे नदी रो आ प्रत्यक्ष बात विरुद्ध रे ॥ ६ ॥ जिण विध केवली नदी उतरे जिम छद्मस्थ तो उतरे नाही। तो स्वामी छै तिण रे इर्या सुमति में पिण खामी नहीं कर्तव्य माहि रे ॥ १० ॥ ते खामी पड़े ते अजाण पणो छै, इरिया वहि पडि-क्कमणो थाप। जले अधिकी खामी जाणे इर्या समिति म, तो प्रायश्चित ले उतारे पाप रे ॥ ११ ॥ साधु छद्मस्थ नदी उतरे ते कर्तव्य सावज म जाणो कोय। जो सावज होवे तो सजम भांगे, विराधक रो पाल होय रे ॥ १२ ॥ आगे नदी उतरता अनन्त साधा ने, उपनो छै केवल ज्ञान। त्या नदी माहि आउषो पूरो करी ने, पहोता पञ्चमी गति प्रधान रे ॥ १३ ॥ केइ कहे साधु नदी उतरे त्यारे इस रो हिन्सा रो छे आगार। तिण रो पाप लागे पिण व्रत न भांगे, इम कहे ते मूढ गिवार रे ॥ १४ ॥ जो साधु रे हिन्सा रो आगार होवे तो नदी उतरता मोक्ष न जावे। हिन्सा रो आगार ने पाप लागे अव, अवदमों गुणठाणो न

आवे रे ॥ १५ ॥ कोई कहे नदी उतरे जब साधु ने लागे असंख्य हिन्सा परिहार। तिणरो प्रायश्चित लियां बिन शुद्ध नहीं छै। इम कहे तिण रे हिय छै अन्धार रे ॥ १६ ॥ जो नदी उतर्या रो प्रायश्चित बिन लीधां, तो साधु शुद्ध नहीं थावे। तो नदी माहि साधु मरे तो अशुद्ध छै, ते मोक्ष माहि क्यु कर जावे रे ॥ १७ ॥ साधु नदी उतर्या मांहे दोष हुवे तो जिन आगन्या दे नाहीं। जिन आगन्या दे तिहां पाप नहीं छै ये सोच देखो मन माहि रे ॥ १८ ॥ नदी उतरे त्यां ध्यान किसो छै, किसी लेश्या किसा परिणाम। जोग किसा अध्यवसाय किसा छै, भला भुण्डा पिछाणो ताम रे ॥ १९ ॥ ए पाच् भला छै तो जिन आज्ञा छै, माठा मे जिन आज्ञा न कोय। पाचूं माठा स्यूं तो पाप लागे छै, पाचूं भला स्यूं पाप न होय रे ॥ २० ॥ छद्मस्थ ने केवली नदी उतरे जब, लारे छद्मस्थ केवली आगे। छद्मस्थ उतरे छै केवली री आज्ञा स्यूं, त्याने पाप किसे लेखे लागे रे ॥ २१ ॥ जिन शासण च्यार तीर्थ माहि, जिन आगन्या छै मोटी। कोई जिन आगन्या माहि पाप बतावे तिण री श्रद्धा छै खोटी रे ॥ २२ ॥ दवरो दाधो आय पडे जल माहि, पिण जल मांहि लागी लाय। तो किसी

ठौड़ यो करे ठढाई, किसौ ठौड़ साता होवे ताय रे ॥ २३ ॥ ज्यु जिण आज्ञा माहि पाप होवे तो किण री आज्ञा माहे धर्मो । जिण री आज्ञा पाल्या शुद्धगति जावे । किण री आज्ञास्यू कटे कर्मो रे ॥ २४ ॥ छाटा आवे छे तिण माहि साधु मात रो परठे दिसा जावे । तिण रे छे पिण जिनजी री आज्ञा, तिणमें कुण पाप बतावे रे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बडी नीत दोनू ही, परठण जावे अकाशि । वलि सिज्झाय करे राते ध्यानक धारे, जावे आवे अछाया माहि रे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब, अछाया आवे ने जावे । तिणने पिण छे जिनजी री आज्ञा, तिणमें कुण पाप बतावे रे ॥ २७ ॥ राते अछाया अपकाय पड़े छे तिणरी घात साधु थी थाय । ओ पिण न्याय नदी जिम जाणो । तिण मे पाप किसी विध थाय रे ॥ २८ ॥ नदी माहि बहती साधवी ने साधु राखे हाथ समावे । तिण माहि पिण छे जिनजी री आज्ञा तिणमें कुण पाप बतावे रे ॥ २९ ॥ इर्या समिति चालता साधु स्यूं, कदा जीव तणो होवे घात । ते जीव मुआ रो पाप साधु ने, लागे नहीं अशमात रे ॥ ३० ॥ जो इर्या समिति विना साधु चाले, कदा जीव मरे नवि कोय । तो पिण साधु ने हिन्सा छऊ काय री लागे । कर्म तणो बंध होय रे

॥ / ॥ नाव मुश्रा निहा पाप न लागा न मुषा तिहा लागी पापा । जिण आज्ञा सभाली तिण आज्ञा जोवी तिण आज्ञा म पाप म थापा र ॥ ३२ ॥ जब कोई कह गहस्था माल्या चाल्या बिन साध ने किम वहि राव । मालण चालण री ता नहा जिन आज्ञा चाल्या बिन ता बहरावणा नाव र ॥ ३३ ॥ बठो होवे तो उठ बहराव उभा हाव ता बठ बहराव । बैठन उठण री ता नहा जिन आज्ञा ता बारमो व्रत कैम निपजावे र ॥ ३ ॥ जो जिन आज्ञा बार पाप होव तो हालण चालण र पाप थाव । साधा न बहराया रो धर्म ते वादे काइ इमडा चरचा ल्याव र ॥३५॥ कोई कहै चालण री ता जिन आज्ञा नाहा ताहो चाल बहराया री धम जिण आगन्या बिन चाल्या तिण ने, लागी नहा पाप कम र ॥ ३ ॥ इण विध कुहेत लगावै अज्ञानी धम कह जन आज्ञा बारा । हिवे जिन आगन्या माहि धम वहुणरा य जाब हिया माहि धारो र ॥ ॥ मन वचन काया रा जोग तीनू हो सावद्य निवद्य जाण । निवद्य जोगा रा श्राजिन आज्ञा, तिण री करचा पिछाण र ॥ ३८ ॥ जोग नाम व्यापार सर्वा कै त भला न भूणडा व्यापार । भला जागा री जिन आज्ञा माठा जोग जिन आगन्या बार र ॥ ३८ ॥ मन

दन काया भला बतावो, गृहस्थ ने कहे जिनरायो। काया भणी किण विध प्रवर्तावे तिण रो विवरो थो चित्त ल्यायो रे ॥ ४० ॥ निवद्य कर्तव्य री छै श्री दन आज्ञा तिण कर्तव्य ने काया जोग जाण। तिण तैव्य री छै श्री जिन आज्ञा, तिण कर्तव्य ने करो ागोंवाण रे ॥ ४१ ॥ माथा ने आहार हाथा स्यूं बह-वें, उठ बैठ वहरावे कोय। ते बहरावण रो कर्तव्य वंद्य छै तिण मे श्रीजिन आगन्या होय रे ॥ ४२ ॥ नर्वद्य कर्तव्य गृहस्थी करे छै, त्याने आगन्या दे जिन-य। ते कर्तव्य तो काया स्यूं करसी पिण न कहे ये लावो काय रे ॥ ४३ ॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्या दीधा पाप न लागे कोय। हालण चालण री आगन्या दीधा, गृहस्थ स्यूं सभोग होय रे ॥ ४४ ॥ बेसो सुवो भो रहो ने जावो, गृहस्थ ने साधु न कहे आम। शवैकालिक रे सातमे अध्ययने, सेतालीसमी गाथा रताम रे ॥ ४५ ॥ उभा रो कर्तव्य बैठा रो कर्तव्य करणो कहे जिनराय। पिण बैठण उठण रो नहीं कहे गृहस्थ ने ये विचार देखो मन माय रे ॥ ४६ ॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्या दीधा निर्वद्य चालवो ते नाहि आयो। कर्तव्य छोडने चालण री आज्ञा देवे तो गृहस्थ रो सभोगी थायो रे ॥ ४७ ॥ गृहस्थ रे हाथ

पद्यो कपडादिक, जब साधु सूं जावो नावे माहि। जब कोई गृहस्थ भेलो करे कपडादिक, साधु ने मारग देवे ताहि रे ॥४८॥ साधा ने मारग देवे जावण आवण रो, ते कर्तव्य निर्वद्य चोखो । जो कपडादिक रे काम, भेलो करे तो सावद्य काम छे देखो रे ॥ ४९ ॥ तिण स्यू साधु कहे गृहस्थ ने म्हाने जायगा द्यो जावा माहि। पिण कपडादिक भेलो करो मावट ने, दूसडी न काढे वाई रे ॥ ५० ॥ गृहस्थ री उपधि करे आगो पाछो, वैसवा सोयवादिक रे काम । ते पिण कर्तव्य निर्वद्य जाणो, नहीं उपधि ऊपर परिणाम रे ॥ ५१ ॥ केई श्री जिन आगन्या बारे अज्ञानी, धर्म कहे छे ताम। ते भोला लोका ने भ्रम मे पाडे लिइ अनक बोला रो नाम रे ॥ ५२ ॥ श्रावक रो माछो माहि करे वियावच, वले साता पूछे ने पूछावे। तिण में श्री जिन आणा मूल न दिसे, तिण माहे धम बतावे रे ॥ ५३ ॥ श्रावक री मांहो मांहे व्यावच कीधी, तिण दियो शरीर री साप। छव काया री शस्त्र तीखो कीधो तिण स्यूं आज्ञा न दे जिनराज रे ॥ ५४ ॥ गृहस्थो री व्यावच कीधी तिण रे, अठादसमू अणाचार। साता पूछा री अणाचार सोलमू, तिणमें धर्म नहीं छे लिगार रे ॥५५॥ शरीरादिक ने श्रावक पूछे सातरादिक ने परठे पूछे।

इत्यादिक कारण री नहीं जिन आज्ञा, धर्म कहै त्यांने सवलो न सूझै रे ॥ ५६ ॥ शरीर भूलै मातरादिक परठै ते तो शरीरादिक रो छै काज । जो धर्म तणो ए कार्य हुवै तो, आगन्या देता जिनराज रे ॥ ५६ ॥ जो पूंजणो परठणो न करै श्रावक तो काया थिर राखणी एक ठाम । तिण इत्यादिक में जिन चलाया रहणो नावै ताम रे ॥ ५८ ॥ लघु वडी नीत तणी अबाधा, खमणो ठमणो न आवै ताम । पूंजै परठै तोइ सावद्य कर्तव्य छै, जिन आज्ञा रो नहि काम रे ॥ ५९ ॥ कदा थोडी बुद्धि त्यांने समझ न पडै तो राखणी जिण प्रतीत । आगन्यां माहे पाप आज्ञा बारे धर्म इसडी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥ जिन आगन्यां माहे पाप कहै छै, त्यांरो मत घणो छै माठो । जिन आगन्या बारे धर्म कहै छै, त्यांरो थाई अकल आडी पाटी रे ॥६१॥ जिन आगन्यां माहे पाप कहतां मूरख शूल न लाजै । वलि धर्म कहै जिन आगन्या बारे, ते पण्डित पाखण्डिया में वाजै रे ॥६२॥ जिन आगन्यां माहे पाप कहै छै, ते तुण्डे छै कर कर तातो । वले धर्म कहै जिन आगन्या बारे, ते तो पूरा छै रूढ अज्ञानी रे ॥६३॥ समत अठारा ने वर्ष इकतालिसे जेठ सुद तीज ने शुक्रवार । जिन आगन्यां ओलखायवा कारणे, जोड़ कीधी छै पर उपगार रे ॥६४॥

॥ दोहा ॥

जिण शासण मे आज्ञा वडी, ओलखे ते बुद्धिवान। ज्यां जिण आज्ञा नवि ओलखी, ते जीव छे विकल समान ॥ १ ॥ होय करणी ससार में, सावद्य निर्वद्य जाण। निर्वद्य मे जिण आगन्या, तिण सूं पामे पद निर्वाण ॥ २ ॥ सावद्य करणी ससार नी, तिण में जिण आगन्या नहीं होय। कर्म बधे छे तेह थी, धर्म म जाणो कोय ॥३॥ किहा २ छे जिण आगन्यां, किहां २ आगन्यां नांह। बुद्धिवन्त करो विचारणां, निरणो करो घट मांह ॥ ४ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(हूं बलिहारी हो श्री पूज्यजी रे नाम री—पदेशी)

कोई करे पचखाण नोकारसो तिण री आगन्यां दी जिन आप हो ॥ स्वामीजी ॥ कोई दान दे लाखा ससार मे, पूछ्या आप रहो चुपचाप हो। स्वामीजी हूं बलिहारी हो, हूं बलिहारी हो श्री जिनजी री आगन्यां ॥ १ ॥ जिन आज्ञा सहित नोकारसो, कोधा कटे सात आठ कर्म हो ॥ स्वा० ॥ कोई दान दे लाखां ससार में, ते तो आप रो भाख्यो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २ ॥ अन्तर मुहूर्त त्यागे एक भूगडो, तिण री आगन्यां दी

जिनराज हो ॥ स्वा० ॥ कोई जीव छुड़ावे लाखां दाम
दे । तठे आप रहो मौन साझ हो ॥ स्वा० ॥ छू ॥ ३ ॥
अन्तर मुहूर्त्त लागे एक भगड़ो तेतो आप रो सिखायो
छै धर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यू कर्म कटै तिण जीव रा,
उत्कृष्टो पामें सुख परम हो ॥ स्वा० ॥ छू ॥ ४ ॥ कोई
जीव छुड़ावे लाखां दाम दे से तो आप रो सिखायो
नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ ओ तो उपकार ससार नो
तिण स्यू कटता न जाख्या आप कर्म हो ॥ स्वा० ॥ छू
॥ ५ ॥ कोई साधां ने बहिरावे एक तिणकलो, तिण री
आज्ञा दो आप साख्यात हो ॥ स्वा० ॥ कोई श्रावक
जिमावे कोड़ागमे तिण री आज्ञा न दो अशमात हो
॥ स्वा० ॥ छू ॥ ६ ॥ साधां ने बहिरावे एक तिणकलो,
तिण रे बारमू व्रत कह्यो आप हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यू
आज्ञा दीधी आप तेहने वलि कटता जाख्या तिण रा
पाप हो ॥ स्वा० ॥ छू ॥७॥ कोई श्रावक जीमावे कोड़ा
न्यूत ने, ते तो सावद्य कामो जाख्यो आप हो ॥ स्वा० ॥
उण छव काय शस्त्र पोषियो तिण ने लागो छै एकन्त
पाप हो ॥ स्वा० ॥ छू ॥ ८ ॥ कोई करे व्यावच श्रावक
तणी, तठे पिण आप रे छै मौन हो ॥ स्वा० ॥ उण
सीखो सीधो छै शस्त्र छ काय नो, ते कर्तव्य जाख्यो
आप जबून हो ॥ स्वा० ॥ छू ॥ ९ ॥ कोई उघाड़े मुख

भणे छे सिद्धन्त ने, कोडागमे गुणे छे नवकार हो ॥ स्वा० ॥ तिण में आप तणो आगन्या नहीं, तिण में धर्म न सरधूं लिगार हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ १० ॥ उघाडे मुख गुणे छे नवकार ने तिण वाउकाय माख्या असख्य हो ॥ स्वा० ॥ तिण मे धर्म श्रद्दे ते भोला थका, त्यारे लागा कुगुरा रा डक हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ११ ॥ जेवा स्यूं गुणे एक नवकार ने तिण स्यू कोड भवांरा काटे कर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिण मे आप तणी छे आगन्या तिण रे निश्चे हो निर्झरा धर्म हो ॥ स्वा ॥ छ ॥१२॥ कोई साधु नाम धराय ने, प्रशसे छे सावद्य दान हो ॥ स्वा० ॥ त्या भेष भाख्यो भगवान रो, त्यारे घट माहे घोर अज्ञान हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ १३ ॥ मौन कही छे साधु ने सावद्य दान मे, ते तो अन्तराय पडतो जाण हो ॥ स्वा० ॥ तिण रो फल तो सूत्र में बतावियो। तिण री वुद्धिवन्त करसो पिछाण हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥१४॥ प्रदेशी राजा कहे केशी स्वाम ने, म्हारे तो चढतो वैराग हो ॥ स्वा० ॥ म्हारे सात सहस गाम खालसे, तिण रा करू च्यार भाग हो ॥स्वा०॥ छ ॥ १५ ॥ एक भाग राख्या निमते करुं, दूजो भाग करु खजान हो ॥ स्वा० ॥ तीजो भाग घोडा हाथी निमत करु, चौथो भाग करु देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ १६ ॥ त्यार

भाग सावद्य कामों जाणनें, मौन साझी रह्या फोथी स्वाम हो ॥ स्वा० ॥ जो उवे कियचिक में धर्म जाणता, तो तिण री करता प्रशंसा ताम हो ॥स्वा ॥ छ ॥१७॥ सावद्य कर्त्तव्य च्यारु भाग राज रा, त्यामें जीवा री हिंसा अत्यन्त हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यू च्यारु बरावर जाण नै, मौन साझी रह्या मतिवन्त हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ १८ ॥ दान देवा मंडाई दानशाल में, प्रदेशी नामे राजान हो ॥ स्वा० ॥ सात सहस कुल्ला गांव खालसे, तिणरी चौथो पाती रो देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ १९ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो, तिण जाख्यो संसार नो भाग हो ॥ स्वा० ॥ तिण तिथ न फोधो तिण राज री, रह्यो मुक्त स्यू सन्मुख लाग हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ २० ॥ यो तो दान चौरा नै भोलाय नै, तिण पूछी न दिसै बात हो ॥ स्वा० ॥ चवदे प्रकार रो दान साध नै ते तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ २१ ॥ चौथो भाग दान तालसे करी, नहीं राख्यो पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ तीनू भाग ज्यू दूषमे पिण थामियो, इण काय जीवा री आणी घात हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ २२ ॥ साढा सतरे सो गाम दान तालके, दिन २ प्रते मठेरा पाच गाम हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरे हांसल रो धान रंधाय नै, दानशाला मंडाई ठाम

ठाम हो ॥ स्वा॰ ॥ छू ॥२३॥ टालवा गाव आणीज्यो खालसे, ते तो चौथे भारे रा छा गाव हो ॥ स्वा॰ ॥ हासल मिण आवतो आणज्यो घणो नैपे पण हुन्नी घणी भमाम हो ॥ स्वा॰ ॥ छूं॰ ॥ २४ ॥ हासल आयो हुवे एक एक गाव रो दश सहस मण रे उन्मान हो ॥ स्वा॰ ॥ दिन २ प्रते मठेरा पाच गाव रो, छणो पचास हजार मण धान हो ॥ स्वा॰ ॥ छू ॥ २५ ॥ चूण लिखे एक वरस तणो, पूणा दोय क्रोड मण धान हो ॥ स्वा॰ ॥ अधिको ओछो तो आप लाणी रखा, भटकाल स्यू कह्यो उन्मान हो ॥ स्वा॰ ॥ छू ॥ २६ ॥ पाणी पाच क्रोड मण रे आसरे, पूणा दोय क्रोड मण राध्यां धान हो ॥स्वा॰॥ अन्न एक क्रोड मण आणज्यो लूण छे लाखा मण रे उन्मान हो ॥ स्वा॰ ॥ छू॥२७॥ नित्य धान हजारा मण राधता, अन्न पाणी हजारा मण जाण हो ॥ स्वा॰ ॥ मणा वध लूण मिण लागतो, माउकाय रो वहोत घमसाण हो ॥ स्वा॰ ॥ छूं ॥ २८ ॥ पाखारादिक अनेक पाणी मझे, वले वनस्पति पाणी मांय हो ॥ स्वा॰ धान हजारा मण राधता, तिहां अनेक मुवा त्रसकाय हो ॥ स्वा॰ ॥ छू ॥ २९ ॥ दिन २ प्रते मारे छव काय ने वले अनन्त जीवा रो करे घात हो ॥ स्वा॰ ॥ त्यारी हिन्सा रो पाप गीणे

नहीं, त्यारे हिन्सा धर्म री मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥ ३० ॥ एहवा दुष्ट हिन्सा धर्मी जीवड़ा केई जाणे अन्नानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिण रे घट माहि घोर अन्धार छै, ते तो नियमा निश्चे छै असाध हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥ ३१ ॥ केई जीव खुवाया मे पुन्य कहे केई मिश्र कहे छै मूढ हो ॥ स्वा० ॥ ए दोनूं वूडा छै बापड़ा, कर २ मिथ्यात री रूढ हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥ ३२ ॥ जीव खाधा खुवाया भलो जाणिया, तीनूं ही करणा छै पाप हो ॥ स्वा० ॥ आ श्रद्धा प्ररूपी छै आप री, ते मिश्र देवे छै अन्नानी उत्थाप हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥३३॥ केइ जीव खुवावे छै तेहनां, चोखा कहे अन्नानी परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ कहे धर्म मिश्र हुवे नहीं, जीव खुवाया विना ताम हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥३४॥ जीव खावण रा परिणाम छै अति बुरा, खुवावण रा पिण खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ यूंही भोला ने न्हाखे भ्रम में, ले ले परिणामा रो नाम हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥ ३५ ॥ केई कहे जीवां ने मास्या विना, धर्म न हुवे ताम हो ॥ स्वा० ॥ जीव मास्या रो पाप लागे नहीं, चोखा चाहिजे निज परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ ङ्क ॥३६॥ केई कहे जीवा ने मास्या विना, मिश्र न हुवे तास हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारण री सानी करे, ले ले परि-

थामा री नाम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३७ ॥ कोई धर्म ने मिश्र करवा भणी, छव काय रो करे धमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिण रा परिणाम चोखा कह्या थकां, पर जीया रा छूटे प्राण हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३८ ॥ जिण चोलख लीधो आप री आगन्या ओलख लीधो आपरी मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आपने जिण ओलख लिया, तिण रे टलमो माठो २ जून हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३९ ॥ तिण आज्ञा नहि ओलखी आप री, ओलखी नहि आप री मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आपने जिण ओलख्या नहि, तिण रे बन्धसी माठी माठी जून हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४० ॥ कोई जिण आज्ञा बारे धर्म कहे, जिण आज्ञा मांहि कहे पाप हो ॥ स्वा० ॥ ते दोनूं जिण वूडा छे बापडा, कूडो कर कर अज्ञानी विलाप हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४१ ॥ आप री धम आप री आगन्यां मझे नहां आप री आज्ञा बार हो ॥ स्वा० ॥ जिण धर्म जिण आगन्यां बारे कहे, ते तो पूरा छे मूढ गिवार हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४२ ॥ आप अवसर देखने वाजिवा आप अवसर देखो साझो मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिणां आप लथी आगन्या नहि, ते करणी छे सावज अजून हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४३ ॥ मेघ धार्यां मांयद दान वांचियो, तिण दान स्यूं दया उत्पन थाय हो ॥ स्वा० ॥

तिण सूं लागे छै पाप कम रे ॥ श्री ॥ ७ ॥ जिन भाष्या में जिनजी री आगन्यां चोरा री भाष्या में चोर आण रे तिण स्यूं जीव शुद्ध गत जावे नहीं वले पाप लागे छै आण रे ॥ श्री ॥ ८ ॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीक छै, चोथिज उत्तम जाण रे । शरणो पिण ग्यो कुच धर्म रो तिण में श्री जिन आज्ञा प्रमाण रे ॥ श्री ॥ ६ ॥ ठाम २ सूत्र माहि देखल्यो केवली भाष्यो ते धर्म रे। मीन साझे तिण धर्म को नहीं, मीन साझे तिणी पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ १० ॥ मीन साझगियो धर्म माठो घणो भेष धार्या पकरया जाण रे । रांच ३ बुध्दे छै बापडा, ते सूत्र रा मूढ अजाण रे ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्म ने शुक्ल दोनूं ध्यान में, जिण आज्ञा दोनूं वारूं वार रे । आर्त रौद्र ध्यान माठा विहु, यामें ध्यावे ते आज्ञा बारे ॥ श्री ॥ १२ ॥ तिन पद्म शुक्ल लेश्या भली, त्यांमें जिन आगन्या ने निर्जरा धम र । तीन माठी लेश्या में आज्ञा नहं तिण स्यूं बन्ध छै पाप कम रे ॥ श्री ॥१३॥ च्यार सहुम च्यार उत्तम कह्या च्यार शरणा कह्या जिनराय रे । ए मगला छै जिन आगन्यां मझे आज्ञा विन आण्यो सन्तु न आय रे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला परिणाम में जिन आगन्यां, माठा परिणाम आज्ञा बार रे । भला परिणामां निर्जरा नीपजे, माठा परि

अज्ञान छोडने ज्ञान आदर्यो, माठी क्रिया छोडी माठो जान रे। भलो क्रिया मे साधु आदरी, जिण आज्ञा स्यू चतुर सुजान रे ॥ श्री ॥ ४० ॥ मिथ्यात छोड सम्यक्त आदर्यो, अबोध छोड आदर्यो बोध रे। उन्मार्ग छोड सुन्मार्ग लियो, तिण स्यू होसी आतमा शुद्ध रे ॥ श्री ॥ ४१ ॥ आठ छोडे ते जिन उपदेश स्यूं पाप कर्म तणो बध जाण रे। जिण आज्ञा स्यूं आठ आदर्या तिण स्यू पामे पद निर्वाण रे ॥ श्री ॥ ४२ ॥ ठाम २ सूत्र मे देखल्यो, जिण धर्म जिण आज्ञा मे जाण रे। ते मूढ मिथ्याती जाणे नही, युही बुडे छे कर कर ताण रे ॥ ४३ ॥ हूं कहि कहि ने कितरो कहूं, आगन्या बारे नही धर्म मूल रे। आगन्या बारे धर्म कहे तेहना, श्रद्धा कण विना जाणो धूल रे ॥श्री॥४४॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी विगरायल जैन रा, ते कूड कपट री खान। ते आगन्या बारे धर्म कहे त्यारे घट में घोर अज्ञान ॥ १ ॥ त्याने ठीक नही जिन धर्म री, जिण आज्ञा री पिण नवि ठीक। त्याने परिवार विवेक विकल मिल्या, त्यामे बाजे पूज मंठीक ॥ २ ॥ ते बडा छट जु आगे चले लारे चले जेम कतार

मोहना बूडे है बापडा, वडा वूठा री मार ॥ ३ ॥ हिवे वले विशेष जिम आगन्या ओलखजो बुद्धिवान। तिणरा भाव भेद प्रकट करू, ते सुणज्यो सुरत दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

(अनु कुमर कहे पल्लव सुणो—एदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरै तिण मे सावद्य रा पञ्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य ग्रहस्थ करै, तिण मे श्री जिन धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्या तिहा ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करै तिण में पिण सावद्य रा पञ्चखाण ॥ भ० ॥ तेहिज सावद्य कामो छटो करै, तिण में पिण जिन धर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिम आगन्या मझे आज्ञा वारै धर्म कहै, ते मूढ ॥ भ० ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो, तिण झाली मिथ्यात री रूढ ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्म री जिन आगन्या देवे, जिण धर्म सीखावै जिनराय ॥ भ० ॥ आज्ञा वारै धर्म किण सीखावियो, तिण री आज्ञा देवै कुण राय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ केई आगन्या वारै मिश्र कहै, केई धर्म पिण कहै आज्ञा बार ॥ भ० ॥ तिण ने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यो, तिण रो नाम तूं चौडे बताय ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री ॥ इण मिश्र मे धर्म रो कुण धणी, तिण

गी आज्ञा कुण दे जोद्या हाथ ॥ भ० ॥ देवगुरु मौन साभ न्यारा हुवे, हुण री उत्पत री कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्री ॥ कोई वेश्या रा पुत्र ने पूछा करे, थारी मा कुण ने कुण तात ॥ भ० ॥ जब उ नाम बतावे किण बापरो, ज्यूं आ मिश्र वाला री छे वात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ वेश्या रा अङ्ग जात नो उपनो, तिण रो कुण हुवे उदेरि ने बाप ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा बारे धर्म ने मिश्र री जिण धर्मी करसी कुण थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ वेश्या रे अङ्ग जात नो उपनो, उण लखणो हुवे उदेरि ने बाप ॥ भ० ॥ ज्यू जिन आगन्या बारे धर्म ने मिश्र री, कोई करे छे पायगडी थाप ॥ भ० ॥ ९ ॥ श्री ॥ कोई कहे म्हरी माता छे वाभडो, तिण री छू आतम जात ॥ भ० ॥ ज्यूं मुरख कहे जिन आगन्यां बिना, करणी कीधा धर्म साख्यात ॥ भ० ॥ १० ॥ श्री ॥ बाप बिण बेटो निसे हुवे नहीं, ज्यू जिन आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा होसी तो जिन धर्म छे, आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥ मा बिन बेटा री जन्म हुवे नहीं, जन्मे ते बाभ न होय ॥ भ० ॥ ज्यू जिन आज्ञा बिना धर्म हुवे नहीं, जिम आज्ञा तिहा पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥ गंधु पखी ने -चोर दोनू भणी, गमती लागे अन्धारी

रात ॥ भ० ॥ ज्यू भारी कर्मा जीव तेह में, जिन आज्ञा बाहरलो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥ काग निमोली में रति करे, भगडसूरा में मीठो थावे दाय ॥ भ० ॥ ज्यू काग भगडसूरा जेहवा मानवी, रिझे आज्ञा बाहरली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥ चोर परदारा सेवण कुशीलिया, ते तो सेरी जोवे दिन रात ॥ भ० ॥ ज्यू आज्ञा बाहर धर्म थरापवा, कन्धो कर कर अज्ञानी बात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥ गुरुवादिक री आज्ञा मागे नहीं, ते तो अपछन्दा अव-नीत ॥ भ० ॥ ज्यू केई जिन आगन्यां विन करणी करे, ते पिण करणी छे विपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा, छल में करे पर जीवां री घात ॥ भ० ॥ एहवा दुष्ट मिथ्या श्रद्धा रा धणी, छल स्यू घाले विकलां रे मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥ विगरायल हुवा न्यात बारे करे, ते विगरायल फिरे न्यात बाहर ॥ भ० ॥ तेहवो धर्म जिन आगन्यां बाहली, तिण में करे मत वादी अणो धार ॥ भ० ॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यात बारे ते न्यात मांहि नहीं, तिण नें कदि बैसाणे एक पांत ॥ भ० ॥ ज्यू जिन आज्ञा बिना धर्म अजोग छे, जीवां पुरोसे नहीं अन्न पांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आज्ञा बिन आरो में धर्म छे, तो

जिन आज्ञा रो काम न कोय ॥ भ० ॥ तो मन मानी करणी करसी तेहने, सगली करणी किया धर्म होय ॥ भ० ॥२०॥ श्री ॥ जिण आज्ञा बाहरली करणी किया, पाप नहीं लागे ने धर्म थाय ॥ भ० ॥ तो किण करणी सूं पाप निपजे, जिण करणी रो तूं नाव बताय ॥ भ० ॥ २१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ए च्यारूं ही छे आज्ञा माय ॥ भ० ॥ या च्यारा माहि तो धर्म जिण कह्यो, यां विना और नाव बताय ॥ भ० ॥ २२ ॥ श्री ॥ इम पूछ्या रो जाब न उपजे, झूठ बोले बणाय बणाय ॥ भ० ॥ विकलां ने विगोवण पापियां, जिन आज्ञा बारे धर्म थहाय ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥ आगन्यां बारे धर्म कहे, ते पिण छे आगन्या बार ॥ भ० ॥ इण सरधा सूं बूडे छे बापडा, तें भव २ में होसी खयार ॥ भ० ॥ २४ ॥ श्री ॥ जिन आगन्या बारे धर्म कहे, ते विगरायल जैन रा लाण ॥ भ० ॥ त्यारी अभिन्तर फूटी छे आंखलो, ते अन्धारे उगो कहे भाण ॥ भ० ॥ २५ ॥ श्री ॥ श्री जिन आगन्या विन करणी करे, ते तो दुरगत रा आगीवाण ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा सहित करणी करे, तिण स्यूं पामे पद निरवाण ॥ भ० ॥ २६ ॥ श्री ॥ आज्ञा बारे धर्म कहे तेहमी, ओड कोधो छे खेरवा मझार ॥ भ० ॥ संमत अठारे चालो-

समें, आसोज विद पाचम थावर वार ॥ भ० ॥ २१ ॥

॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्या तिहा ॥

॥ इति जिन आज्ञा को चोढालियो समाप्त ॥



॥ ढाळ ॥

गाम र आगम टाला ग्राम रमाविरोजी राज फुरडो १ मिस भायो हो फराग याइ ग हा टाला दनो वग गजरो गुथाय (पदेशी)

चमु पाटोधर माहश जिनवर जिम हूए भरत में हा स्वाम। काल गणेश्वर मोहै हो मन मोहत स्वामी सुर नर भविजन सह तणा ॥ गणपति गुणसागर भरो नाय नमा घणो। गणिश्वर तोरी सावलौ सोम्य सूरत हट कान्ति ना स्वाम। जम चकोरा चन्दा हो तिम भवि तुझ जाणे हर्षित होवे अति घणा ॥ ग० ॥ १ ॥ वय विश हा स्वामी छागा कुद्रे थवतण्या हो स्वाम। माता भगिनी माथ हा वीदासर माहीं चमालीसे प्रत धण्या ॥ ग ॥ छासठ हा पाट विराज्या लाडनू नयर में हो स्वाम। मंडियल जश बहु छायो हो जगताधिप स्वामी। गुण मणि रयण अति भण्या ॥ ग० ॥ २ ॥ वच वरसे ना स्वामी सघन झडी जलधार ज्यू हो स्वाम। सुण २ भवी मन हय हा चित्त तर्प पाखण्डी तस्कर थी जिण मग सणा ॥ ग ॥ अष्टापद पेखी कठीरव जिम विहतो हा स्वाम। पवक्क जिम रवि देखी हो तिम गणि तुझ निरखी पाखण्डी लाज घणा ॥ ग० ॥ ३ ॥ शब्द बोध

महाराज ए। आज है, बलिहारी तय नामनी ए ॥६॥ उगणीसे पचासी वर्षे ए, गणि गुण गाया हर्षे ए। सरस ए, चम्पालाल हुलसायने ए ॥ ७ ॥

॥ ढाळ ॥

(गोयमजी शिष्य सयाना ढाल गोयमा—पदेशी)

भिक्षु गणि भर्त मझारी लाल, स्वामजी। भवी. भाग्य उदय अवतारीजी। गण नायक दीन दयालु लाल स्वामजी। ए तो शरणागत प्रतिपालुजी॥ गण नायक० ॥ १ ॥ जिन वच धारी सुखदायी लाल, स्वामजी। बहु भविजन बोध पमायोजी ॥ गण० ॥ २ ॥ वा मोमा बहु विध बाधी लाल, स्वा०। शिव वधु सूं प्रीती साधीजी ॥३॥ तसु सिह पाट सुखदायी लाल स्वा०। काल गणि जन मन भायोजी ॥ ४ ॥ मृगराज तणो पर गाजे लाल, स्वा०। फेर पाखण्डी मन लाजेजी ॥ ५ ॥ वच्चो जिम सभा मझारो लाल, स्वा०। कर चाति गव लियो धारोजी ॥ ६ ॥ घन रव सुण मारग नाचे लाल, स्वा०। तव गिरा तिम भवि राचेजी ॥७॥ गणि पद पङ्कज सुखदायी लाल, स्वा०। मुझ मन मधुकर लोभायोजी ॥ ८ ॥ गो इय निधि चन्द सुहायी लाल, स्वा०। तव मिस मननी गुण गायोजी ॥ गण नायक दीन दयालु लाल स्वामजी ॥ ९ ॥

श्री जयाचार्य कृत—

भ्रम विध्वंसन की हुण्डी।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।

---

१ बाल तपस्वी नें सुपात्र दान, दया, शीलादि करी मोक्षमार्ग नों देश थकी आराधक कह्यो।

(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)

२ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति, सुदत्त नामा अणगार नें सुपात्र दान देई परित संसार करी मनुष्य नो आउखो बांध्यो।

(साख सूत्र सुखविपाक अ० १)

३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव में सुसला री दया पाली परित संसार कीधो।

(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)

४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवान नें त्रिण प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी।

(उपासक दशांग अ० ७)

५ मिथ्याती नें भली करणी लेखे सुव्रती कह्यो छै।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैमानिक टाल और आउखो न बांधे ।

(साख सूत्र भगवती ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करे तथा सुई नी अग्र पे आवे तेतलाज अन्न नो पारणो करे, पिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावे तेहनो न्याय ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करे, पिण माया थी अनन्त ससार रुले ।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

९ जीव अजीव जाणे नहीं तेहना पचखाण दुपचखाण कह्या तेहनो न्याय ।

(भगवती श० ७ उ० २)

१० भगवंत दीक्षा लियां पहली, २ वर्ष झाझा (अधिका) घर में विरक्त थका रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो ।

(प्रथम आचारांग अ० ६ उ० १ गा० ११)

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध प्राक्रम छे ते ससार नो कारण छे । पिण निर्जरा नो कारण नथी (पिण शुद्ध प्राक्रम तो निर्जरा

तेहने आदेशे आगार ५ अटवी कान्तार ने विष आगार ६ ए छव छण्डी आगार राख्या तो पोता री कमाई जाणी ने राख्या ।

(उपाशक दशाँग अ० १)

३ तथा रूप जे असयती ने फासू अफासू सूझतो असूझतो असनादिक दीधा एकान्त पाप निर्जरा, नथी ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारे । जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म खपावा ने उदेरी ने तप करे । तो हूं लोच ब्रह्म-चर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न सहूं । एतले मुझ ने वेदना सम भावे न सहता, एकान्त पाप कर्म हुवे तो वेदना समभावे सहता, एकान्त निर्जरा हुवे ।

(ठाणांगठाणे ४ उ० ३)

५ साधु नो हेला निन्दा करतो असनादि देवे तिहा 'पडिलाभित्ता" पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(क) तथा साधु ने वदना नमस्कार करतो-थको

(क) वलि श्रावक पिण विप्र जिमाडे तिण ऊपर वालमर्ण थो थनता नर्क ना भाव । तेहनो न्याय ।

(भगवती श० २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसे तेहने छ काय नो वध नो वञ्छणहार कह्यो । अने वर्त्तमान काले निषेधे त्याने अन्तराय नो पाडणहार कह्यो । ते माटे साधु ने वर्त्तमान मे मौन राखिवे कही ।

(सुयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवे लेवे, इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण कहणो नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरीने पोतारी बावडी मेंज डेडको थयो ।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान प्ररूप्या । (सावद्य निर्वद्य ओलखणा) ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओल खणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक लोकोत्तर विहु जाणवा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२४ भात माणी थी मोप्या धमाधम नो न्याय ।

(उपाशकदशा अ० १)

२५ तुगिया नगरी ना श्रावका नौ उघाडा वारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत ।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडांग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिण में अव्रत ने भाव शस्त्र कह्यो।

(ठाणांग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यां अने देशथकी पचखाण कीधा तिणे करी देवता थाय । पिण अव्रत थी देवता न हुवे ।

(भगवती श० १ उ० ८)

२९ साधु ने सामायक में वहिरायां सामायक न भागें तेहनो न्याय ।

(भगवती श० ८ उ० ५)

३० श्रावक जिमावे तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना साधु नो न्याय मिले नहीं ।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १९)

३१ अमोघा केवली, अन्यलिंगी थका पोते तो दोम्या

न देवे। पिण अनेरा पासे दोष्यां सिवा नो उपदेश करे।

(भगवती श० १ उ० ३१)

१२ अभिग्रहधारी अने परिहार विशुद्ध चारित्रियों कारण पड्या अनेरा साधु ने अशनादि देवे।

(वृहत्कल्प उ० ४ बोल २७)

१३ गृहस्थादिक ने देवो साधु ससार भ्रमण नो हेतु आख्यो छोडो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १ गा० ४३)

१४ गृहस्थी ने दान दिया अने देता नै अनुमोद्या चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १५ बोल ७४ ३१)

१५ आनन्द ने सथारा में पिण गृहस्थ कह्यो।

(उपासकदशा अ० १)

१६ गृहस्थ नो व्यावच किया, कराया, वलि अनुमोद्या २८ मो अणाचार कह्यो।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

१७ इग्यारमी पडिमा में पिण प्रम बधण तुट्यो नथी।

(दशाश्रुत स्कन्ध अ० ६)

१८ पडिमाधारी रे कल्प ऊपर अम्बड सन्यासी ना कल्प नो न्याय।

(उववाइ प्रश्न १४)

३९ अनेरा सन्यासी नो काल्प।

(उववाई प्रश्न १२)

४० वर्ण नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवी अभिग्रह धार्यो—कल्पै मुझने जे पूर्वे हणे तेहने हणवो। जे न हणे तेहने न हणवो।

(भगवती श० ७ उ० ९)

४१ जे एकीक अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देश व्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व व्रते करी प्रधान।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ श्रावक नो आत्मा अधिकरण कह्यो छै। अधिकरण ते छवकाय नो शस्त्र जाणवो।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी के घोड़े ने रुचि की उपमा दीधी तिमहिज श्रावक ने समथ भुया' कह्यो पिण ते देशथकी उपमा जाणवी।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ च्यार व्यापार कह्या—मन, वचन, काया और उपकरण। ए च्यारु व्यापार सन्नी पचेन्द्रियरे कह्या। ए च्यारु भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक सन्नी पचेन्द्रियरे कह्या। अने ए च्यारुं भला व्यापार तो संयती मनुष्यांरेइज कह्या।

(ठाणांग ठाणे ४ उ० १)

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करै पिण अनेरा नी अनुकम्पा न करै ।

(ठाणांग ठाणे ४ उ० ४)

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलानै साधु मार्ग बतावे तो चौमासो प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० १३ बोल २५)

२५ हिन्सादिक अकार्य करता देखो, धर्मउपदेश देई समझावणो तथा अणबोल्यो रहै तथा उठी एकान्त जावणो कह्यो ।

ठाणांग ठा० ३ उ० ३)

२६ साधु अनेरा जीवा ने भय उपजावे, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११ बोल ६४)

२७ गृहस्थ नी रचा निमित्ते मन्त्रादिक क्रिया वलि अनुमोदा चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १३ बोल १४)

२८ चुलणीपिया, पोषा मे माता ने बचाविवा उठ्यो तो व्रत नियम भाग्या कह्या ।

(उपासकदशा अ० ३)

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रति बतावणो नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० १)

३० साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधे बंधावे तथा बांधतै प्रते भलो जाणे तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोडे, छुडावे छोडतै ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १२ बोल १२)

३१ साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधे बंधावे अने छोडे छुडावे तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १७ बोल १२)

३२ जे साधु पचखाण भांगे अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो ।

(निशीथ उ० १२ बोल १४)

३३ गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा आणी तेलादि मर्दन करे तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

३४ हरिणगमेषी सुलसा नी अनुकम्पा कीधी ।

(अन्तगड़ वर्ग ३ अ० ८)

३५ कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाडी ।

(अन्तगड़ वर्ग ३ अ० ८)

३६ हरिकेशी नी अनुकम्पा आणी यक्ष विप्रा ने ऊंधा पाड्या ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ स २५ तांइ)

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमता अशनादिक खाया ।

(ज्ञाता अ० १)

३८ अभयकुमार नी अनुकम्पा आणी देवता मेह वरसायो ।

(ज्ञाता अ० १)

३६ जिन ऋषि करुणा आणी रयणा देवी रे साहमो जोयो ।

(ज्ञाता अ० ६)

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १)

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित परिणामे करि हण्यो ।

(ज्ञाता अ० ६)

४२ सूयाभ देवता री नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसणी)

४३ यक्षे छात्रा ने ऊन्धा पाड्या ते हरिकेशीनी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने बचायो तिहा 'अणुकम्पणट्टाए' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १५)

लब्धि अधिकारः

१ वैक्रिय तथा तैजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणापद ३६)

२ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

३ आहारिक लब्धि फोड़े तिणने प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।

(भगवती श० १६ उ० १)

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी विना आलोयां मरे, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० २० उ० ६)

५ वैक्रिय लब्धि फोड़े तिणने मायी कह्यो अने आलोयां बिना मरे, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० ४)

६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली जाणीजे ।

(ठाणांग ठाणे ७)

७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी सौ घरां

पारणो कीधो तो लोका ने विस्मय उपजायवा भणी ।

(उववाई प्रश्न १४)

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११)

प्रायश्चित्ताऽधिकारः ।

१ सीहो अणगार मोटे २ शब्दे रोयो ।

(भगवती श० १५)

२ अइमुत्ते साधुपाणी में नावी तराई ।

(भगवती श० ५ उ० ४)

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोल्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८)

४ धर्मघोषना साधा नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में हेली निन्दी ।

(ज्ञाता अ० १६)

५ सेलक ऋषि ने उसन्नो पासत्थो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

१४ सर्व भयी जीव मोक्ष जास्ये ।

(भगवती श० १२ उ० २)

१५ पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

गोशालाऽधिकारः ।

---

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम । गोशाले तोने कह्यो तुम्हे माहरा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तेवासी शिष्य । तिवारे में अङ्गीकार कीधु ।

(भगवती श० १५)

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला । तोने भगवान मूंड्यो । तोने भगवान प्रव्रज्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूं इज मिथ्यात्व पडिवज्यो छै ?

(भगवती श० १५)

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला । में तोने प्रव्रज्या दीधी ।

(भगवती श० १५)

४ गोशाला ने शिष्य कह्यो ।

(भगवती श० १५)

गुणाऽर्पनाऽधिकारः ।

१ गणधरा भगवान ना गुण किया ।

(आचाराग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गाथा ८)

२ भगवान, साधा ना अनेक गुण किया ।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कोणक ने माता पिता नो विनोत कह्यो ।

(उववाई)

४ श्रावका ने धर्म ना करणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ गौतम ना गुण कह्या ।

(भगवती श० १ उ० १)

लेश्याऽधिकारः ।

१ छद्मस्थ तीर्थङ्कर में कषाय कुशील नियण्ठो कह्यो ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

२ कषाय कुशील नियण्ठा में छ लेश्या पावे ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

३ सामायक चारित्र छेदोस्थापनीय चारित्र में छ लेश्या पावे ।

(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छ लेश्या ना लक्षण ।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु मे पिण कृष्ण लेश्या कही छै ।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्या मे च्यार ज्ञान नी भजना कही ।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु मे हुवे ।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवे ।

(भगवती श० १ उ० २)

९ सयती मे पिण कृष्ण लेश्या हुवे ।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकारः ।

---

१ यक्ष छात्रा ने ऊ धा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूयाभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

३ भगवान ना दाढ़ोपाढ़ ना हाड भक्ति करी देवता ग्रहण करै ।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४ बीस बोल करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधे ।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवे इम कहे ते आर्य मार्ग थी अलगो । समाधि मार्ग थी न्यारो । जिन धर्म री हिलणा रो करणहार । अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार । ए असत्य पक्ष अण छांडवे करी मोक्ष नहीं । लोह वाणिया नी परे घणो झूरसी ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६ ७)

६ पांच स्थानके करी श्रमण निग्रन्थ ने महा निर्जरा हुवे । सिक्ष कुल गण संघ साधर्मी साधु ने कह्या ।

(ठाणांग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच साधु रै इज कही ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

८ पुन दश प्रकार नी व्यावच साधु रै इज कही ।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१० सावद्य व्यावच पर भिक्षुगणिराज कृत वार्तिका कही छै।

११ साधु नो अर्श छेदे तिण वैद्य ने क्रिया कही।

(भगवती श० १६ उ० ३)

१२ साधु अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावे तथा कोई अनेरा साधुनो अर्श छेदता अनुमोदे तो मासिक प्रायश्चित आवे।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधु रो गूमडो गृहस्थ छेदै तो साधु ने मने करी अनुमोदनो नहीं तथा वचन अने काया करी करावे नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः।

---

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधु ना पञ्च महाव्रत ते साधु नो विनय मूल धर्म अने श्रावक ना १२ व्रत तथा ११ पडिमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म।

(ज्ञाता अ० ५)

२ पाडुराजा अने पाच पाण्डव माता कुन्ता सहित नारद से विप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो घणो विनय कियो ।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिम पाडु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद नो विनय कियो ।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वादतो थको अशनादिक जाचे नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड ने चेला धर्माचार्य कही नमोत्थुण गुण्यो ।

(उववाई अ० १३)

६ धर्माचार्य ने साधु कह्या ।

(रायप्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थङ्कर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थङ्कर ने इन्द्र नमोत्थुण गुण नमस्कार करे ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

९ इन्द्र एहवू कह्यो जे तीर्थङ्कर नो जन्म महिमा करू ते म्हारो जीत आचार छे पिण ये महिमा धर्म हेतु करू इम नथी कह्यो ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति

१० तीर्थङ्कर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करे।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

११ अरिहन्तादिक पांच पदांने ज नमस्कार करवो कह्यो।

(चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २)

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाला ने श्रमण माहण नो हिज विनय करतो कह्यो।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्त्ते तेहने माहण कह्यो।

(सूयगडांग अ० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधु रो हिज कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर जीवां ने न हणे तेहने माहण कह्यो तथा और भी अनेक लक्षण माहण ना बताया।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १९ से २९ तांई)

१६ श्रमण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एहवा नामे च्यारे बोलावो कह्यो— १ श्रावक। २ उपासक। ३ धार्मिक। ४ धर्म प्रिय। एहवा नामा च्यारे बोलावणा कह्या।

(आचारांग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

पुण्याऽधिकारः ।

१ धर्म में धर्म तप नहीं कह्यो ।

(दशवैकालिक अ० १ गा० ४)

२ माठा पुत्र न धरे तो प्रायश्चित पश्चात्ताप करे ।

(उत्तराध्ययन अ० ११ गा० ३१

३ पुण्यवद् ज्ञाननो ध्यान अनुत्तरों देवता जोंवी ।

(उत्तराध्ययन अ० १८ गा० १४)

४ अज्ञानपुत्र ना धर्म धर्म ज्ञानजो प्रमाद करे ते संसार में भ्रमण करे ।

(प्रश्नव्याकरण अ० ५)

५ धर्म नो हेतु तप संयम कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १६)

६ आत्मा ने अयश अर्थात् असंयम करी जीव नरक में उपजे ।

(भगवती श० ४१ उ० १)

७ नरक ना हेतु ने नरक कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ८)

८ मृग मारिमा अज्ञानी ने मृग कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५)

१० क्रोधादिक ने भाव सयोगी कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१२ अकुशल मनने रूंधवो कह्यो ।

(उववाई)

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक खपे ।

(अनुयोग द्वार)

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कह्या ।

ठाणाङ्ग ठाणे ६)

सम्वराऽधिकारः ।

१ पच सम्वर द्वार परूप्या ।

(ठाणांग ठाणे ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५)

२ जीव रा ज्ञानादिक छव लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११ १२)

३ चारित्र ने जीव गुण परिणाम कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

४ सम्वर ने आत्मा कही ।

(भगवती श० १ उ० ६)

आज्ञाऽधिकारः ।

वीतराग ना पग थकी जीव मुवां इर्यावहि क्रिया कही ।

(भगवती श० १८ उ० ८)

सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइ ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ५)

(क) तीन उदक ना लेप लगावे तिणने सबलो दोष कह्यो ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० २)

पांच मोटी नदी एक मास में बे वार अथवा तीन वार उतरवो कल्पे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ४)

साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

(आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० २)

पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ६)

रात्रि में भिक्षार्थादिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पे ।

(बृहत्कल्प उ० १)

नित्य आहाराऽधिकारः ।

१ टगडा आहार भोगवणो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२)

२ भगवन्त ठगडा आहार लीधा कह्या ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४)

३ धन्न अणगार न्हाखिता आहार लियो ।

(अनुत्तर उववाई)

अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो ।

सारा न दप न करिवा ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १०)

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

साधनदृज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ७)

साधु सूत्र भणो तिण री मर्यादा कही ।

(व्यवहार उ० १०)

अन्य तीर्थी न तथा गृहस्थी न साधु सूत्र रूप वाचणी देवे तथा देता न अनुमोदे तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १९)

४ आचार्य उपाध्याय नी अणदीधी वाचणी ग्रहे, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १६)

५ तीन जणा वाचणी देवा अयोग्य कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ३ उ० ४)

६ श्रावका ने अर्थ रा जाण कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

७ निग्रन्थ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या ।

(सूयगडाग श्रु० २ अ० २)

८ साधुनेइज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणहार कह्या ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २४)

९ अभाजन ने सूत्र सिखावे त्याने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलङ्घनहार कह्या ।

(सूर्य प्रज्ञप्ति पाहु० २०)

१० अर्थ ने पिण सूय धम्मे' कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१२ पचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

(पन्नवणा पद २३ उ० २)

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

१ अठारह पाप सूं निवत्या कल्याणकारी कर्म बंधे।
(भगवती श० ७ उ० १०)

२ वन्दना करता नीच गोत्र खपावे ।
(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल १०)

३ धर्मकथा सूं शुभ कर्म बंधे ।
(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल २३)

४ व्यावच किया तीर्थङ्कर गोत्र बंधे ।
(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल ४३)

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधे ।
(भगवती श० ५ उ० ६)

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधे ।
(ठाणांग ठाणे १०)

७ अठारह पाप सेव्यां कर्कश वेदनीय कर्म बंधे अने १८ पाप सूं निवत्यां अकर्कश वेदनीय कर्म बंधे ।
(भगवती श० ७ उ० ६)

८ बीस बोलां करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधे ।
(ज्ञाता अ० ८)

९ प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख न दियां साता वेदनी कर्म बंधे ।

१० आठ कर्म निपजावा नी करणी जुदी २ कही ।

(भगवती श० ८ उ० ९)

११ धर्म रुचि अणगार ने तुम्बो परठवा नी आज्ञा दीधी ।

(ज्ञाता अ० १६)

१२ भगवान साधां ने गोशाले सूं चर्चा करने की आज्ञा दीधी तथा सर्वानुभूति ने विनीत कह्यो ।

(भगवती श० १५)

१३ गुरु नी आज्ञा आराधे तिण ने विनीत कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारः ।

१ साधु प्रासुक आहार भोगवे तो ७ कर्म ढीला पाडे ।

(भगवती श० १ उ० ९)

२ ज्ञान दर्शन चारित्र वहवा ने अर्थे साधु आहार करे ।

(ज्ञाता अ० २)

३ साधु मोक्ष ने अर्थे आहार करे ।

(ज्ञाता अ० १८)

४ साधु जयणा सूं आहार करै तो पाप कर्म बंधे नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ९२)

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावे।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ छव स्थानकी करी साधु आहार करै तो आज्ञा उलंघे नहीं।

(ठाणांग ठा० ६)

निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः।

१ साधु रै यत्नाइ करी सोवता पाप बंधे नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ काइक सुतो कांइक जागतो स्वप्न देखे।

(भगवती श० १६, उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पौरसी में निद्रा मूके।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

५ पाणी ने किनारे निद्रादिक कार्य करना कल्पे नहीं।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल ११)

६ अन्तर घर में निद्रा लेणी कल्पे नहीं।

(वृहत्कल्प उ० ३ बोल २१)

७ साधु ने भाव निद्राइ करी जागतो कह्यो।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

एकाकि साधु-अधिकारः।

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवे तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सन्नायादिक में विषे घणा निकाल पैसार हुवे तिहां अगड़सुया ते निशीथ ना अजाण त्याने एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जुदा २ निकाल हुवे तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल ११)

१० राग द्वेष ने अभावे एकलो आभो रहै पिण मिथ्यात्वा में उलझो न जाय ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३३)

११ राग द्वेष ने अभावे एकलो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

१२ जे हूं राग द्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं इम विचारी दीक्षा लेवे ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

१३ घर छांडी राग द्वेष ने अभावे एकलो विचरै ।

(उत्तराध्ययन अ० १० गा० १६)

१४ तीन मनोरथ में चितवे जे किवारे हूं एकलो थई दशविधि यति धर्म धारी विचरस्यूं तेह नो न्याय ।

१५ गुरु कह्यो—हे शिष्य । तोने एकलपणो म होज्यो ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार पासवणाऽधिकारः ।

---

१ बड़ी नीति या लघु नीति परठी ने वस्त्रे करी पूंछे नहीं तथा पूंछता ने अनुमोदे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ४ बोल ३०)

२ उचार पासवण परठी काष्टादिमें करी पूछै प्रायश्चित ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३८)

३ उचार पासवण परठी ने शुचि न लिवे अथवा तठेहीं उचार ऊपर शुचि लिवे अथवा अति दूर जाईं शुचि लिवे तो प्रायश्चित आवे ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३९ से १४१)

४ दिवसे तथा रात्रि तथा विकाले पोता ना पाते तथा अनेरा साधु ने पाते उचार पासवण परठवीं सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हाखे तो दण्ड आवे ।

(निशीथ उ० ३ बोल ८२)

५ धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाईं उचार पासवण परठ्यो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० २)

कल्पिताऽधिकारः ।

---

१ तीर्थङ्कर ना जेतला साधु हुइ ते ४ बुद्धिई करी तेतला पइन्ना करै ।

(नन्दी पइन्नाना वर्णन)

२ मतिज्ञान ना दोय भेद १ श्रुत निश्रित २ अश्रुत निश्रित। तिहां जे सूत्र विना ही ४ बुद्धिइं करी सूत्र सूं मिलती अर्थ ग्रहण करै, सूत्र विना ही बुद्धि फेलावै ते अश्रुत निश्रित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै। वली कह्यो पूर्वे दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करै ते उत्पात नी बुद्धि अश्रुत निश्रित मतिज्ञान नो भेद कह्यो।

(साख सूत्र नन्दी)

३ जे भारत रामायणादिक मिथ्या दृष्टिना कीधा ते मिथ्या दृष्टि रै मिथ्यात्व पणे ग्रह्या अने सम्यग्दृष्टि रै सम्यक्त पणे ग्रह्या।

(साख सूत्र नन्दी)

४ च्यार प्रकार ना काव्य कह्या १ गद्यबन्ध २ पद्यबन्ध ३ कथाकरी ४ गायवेकरी।

(ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४)

५ गाथाइं करी वाणी करो, वाणी कथी एहवु कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२)

६ बाजा रै लारै ताल मेली गाया दण्ड कह्यो।

(निशीथ उ० १७ बोल १४०)

अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

१ जो श्रावक साधु ने सचित अने असूझतो देवे, तो अल्प पाप बहु निर्जरा हुवे तेह नो न्याय ।
(भगवती श० ८ उ० ६)

२ साधु ने अप्राशुक अणेषणीक आहार दीधा अल्पायुष बान्धे ।
(भगवती श० ५ उ० ६)

३ साधु रे अशुद्ध आहार अभक्ष कह्यो ।
(भगवती श० १८ उ० १०)

४ श्रावक ने प्राशुक एषणीक ना देवणहार कह्या ।
(उववाई प्रश्न २०)

५ आनन्द श्रावक कह्यो कल्पे मुझ ने श्रमण निग्रन्थ ने प्राशुक एषणीक अशनादिक देवो ।
(उपासक दशा अ० १)

(क) आधा कर्मी अने असूझतो आहार ए निर्वद्य छै एहवो मन में धारे तथा प्ररूपे ते बिना आलोया मरे तो विराधक कह्यो ।
(भगवती श० ५ उ० ६)

(ख) जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधु ने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधि पावे ।
(भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोश साधी ने तो पाप न लागे।

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ५ गा० ८ १)

(क) वीतराग जोयर चाले तेहथी कुकुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेह ने तिण पाप न लागे। पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु इर्याइ करी चालता जीव हणीजे तो तेहन तिण पाप न लागे। हणवारो कामी नहीं ते माटे।

(सूयगडाग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छे जिहां ते स्थानके साधु ने आहार करवो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

९ अल्प प्राण बीजादिक होवे तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो।

(आचारांग श्रु २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवे तो महा-सावद्य क्रिया लागी। दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

अने गृहस्थ पोता रे अर्थे कीधो उपाश्रयो साधु भोगवै तो एक शुद्ध पक्ष रो सेवणहार कह्यो अने अल्प सावद्य क्रिया कही।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० २)

कपाटाऽधिकारः।

१ किमाड सहित स्थानक मन करी ने पिण वाछणो नहीं।

(उत्तराध्ययन अ० ३५)

२ थोडो उघाड्यो पिण किमाड घणो उघाड्यो हुवै तेह ने पिण 'मिच्छामि दुक्कड' देवै।

(आवश्यक अ० ४)

३ जागा न मिलै तो सूनाघरने विषे रह्यो साधु किमाड जडे उघाडे नहीं।

(सुयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३)

४ कण्टक बोदिया ते कांटा नी साखा करी बारणो ढक्यो हुवै तो धणी नी आज्ञा मागी ने पूजकर द्वार उघाडणो।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

५ एहवो स्थानक साधु ने रहिवो नहीं जे उपाश्रय माहीं लघु नीति तथा बडी नीति परठण री

आगा न हुवे घमे गृहस्थ बारला किमाड जडता हुवे तिवारे रात्रि मे विधि थवाधा पीडता किमाड खोलना पडे ते खुला देखि माहे तस्कर आवे बताया न बताया घवगुण उपजता कह्या सर्व दोष में प्रथम दोष किमाड खोलने को कह्यो तिण कारण साधु ने किमाड खोलनो पडे एहवे स्थान के रहिवो नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० २)

६ साध्वी ने उघाडे बारने रहिवो नहीं किमाड न हुवे तो पोता नो पछेवडी बांधी ने रहिवो, पिण उघाडे बारने रहिवो नहीं कल्पे शीतादि निमते किमाड जडवो अने साधु ने उघाडे बारने रहिवो कल्पे ।

(वृहत्कल्प उ० १)

॥ इति सम्पूर्णम् ॥



तपस्वी हुलासमलजी स्वामी को

चौढालियो ।

॥ दोहा ॥

शासन नायक वीर जिन, श्री गोयम गणधार ।
नमस्कार तसु करि कहूं, तपसी गुण अधिकार ॥१॥
श्री भिक्षु पट अष्टमें, कालू गणि सिरताज ।
तास प्रसादे प्रारभ्या, सिद्ध होत सब काज ॥२॥
इण दुषम कलिकालमें, उत्तम जीव उदार ।
अल्प अवसरै भाग्यवश, सफल करण संसार ॥३॥
रटत स्याम सो मन थकी, कटत तास अघगाम ।
घटत दुःख भवभव तणा, पटत सुख अभिराम ॥४॥
आड कमी नहीं इण विध, सघ भक्ति वर ज्ञान ।
इण कारण उत्साह दिल, करत मुनि गुणगान ॥५॥

॥ ढाल पहली ॥

([illegible])

प्रात उठी नित समरियै, कांई मुनि हुलास गुण-
ग्राम । थिर मन चित थी ध्यावां, कांई पामे अविचल

ध्यान। अवर तप धारीजी, विम्या गुण भारीजी। होजी ए तो सेखत स्मरण होत घनो अणगारीजी, साहस दृढ धारीजी ॥१॥ उगणीसे सैंतालीस में, सुद कार्तिक दशमी धन। सिद्ध योग सिद्ध लगन में, कांई परसव्यो पुत रत्न ॥ स्वाम० ॥ २ ॥ बैंगाणी कुल तिलक सम कांई तात हजारीमल। मात तीजा उर उपना कांई लाडनू पुण्य प्रबल ॥३॥ रतनचन्दजी गोलछा धी मालू संग शुभ लग्न। इकसठ माह सुद पंचमी, दम्पति सम देख मगन ॥ ४ ॥ लघु वय विरक्त मणे रह्या, कांई बाल सम्बन्ध जिम घाय। कर्म बंध भय अति घणो कांई गृहस्थ पणारे माय ॥ ५ ॥ बैठ दुकान विक्री करे, कांई कलकत्ता महा बाजार। दोस होम कारी टालता, कांई छेडयो न हो अघभार ॥ ६ ॥ समयसार जाणी करी, कांई करता धार्मिक वैराग। घडी दे घडी ना बहु दफा कांई श्रावक पायो ना त्याग ॥ ७ ॥ लही अवसर जिन धर्म नो, कांई मर्म कहे समभाय। कर्मचार्य अगदेशना, लसु वैमाणे दिल माय ॥८॥ चन्दणमल कुन्नास मल, कांई कार्म नाम विख्यात। स्वार्थमय संसारथी, रह विरक्त भाव उर थाय ॥ ९ ॥ एकदा देशबी आवतां कांई रेल दुर्घटना देख। हठ चितधारी शीलनी कांई आयो वैराग विशेष ॥ १० ॥ यौवन वय विहुं इर्यनो,

पाधमे जी, काई मारणा तेवीस थाय। मिलिया द्रव्य दश सूझताजी, लई एक द्रव्य मुनिराय ॥ ४ ॥ चिणा सेक्योडा होला गहूजी, काई भीजी चिणा की दाल। घाट मको खिच बाजरोजी, पुन चावल मूग मिसाल ॥ ५ ॥ फलका जो घक गेहूं तणाजी, काई ढोकला यूलो निहाल। एह दश द्रव मिल्या तकाजी, लिया दोषण जुग कर टाल ॥ ६ ॥ सावन शुक्ला चौथ मे जी, काई पारणो पाच नो थाय। रात्रे गर्म प्रयोग थी जी, काई वेदन उत्पती थाय ॥७॥ बहुल पणे अचेतनाजी, काई दोय दिना रे माय। लही चेतना स्वाम भणेजी, मम औषधि नाहि देवाय ॥ ८ ॥ पूरव पुण्य उदय थकी जी, सुभ छठ दिन दर्शन थाय। अभिलाषा बहु दिन तणीजी, थई पूरण चित्त विकसाय ॥९॥ स्वाम सुपार्श्व कह्या थकाजी, स्वामी सुभ वन्दणा स्वीकार। पूछे गणपति गण तणाजी, काई प्रेम धरी समाचार ॥ १० ॥ कहे सिद्ध तप दृढ माननी जी, काई कारण थाह आन्तरिक। पिण ते नहीं दिसे होवतो जी, काई सुभ मन एह अधिक ॥ ११ ॥ भावे बहु विध भावनाजी, काई एकत्व परभव दिष्ट। औषधि ना लहे दृढ मनेजी, काई तपत आप निज इष्ट ॥ १२ ॥ कछु साता पिण दसरोजी, काई कारण अधिको थाय। पिण माहसिक

पधो पधोजी, काई देखत जन मन भाय ॥ १३ ॥ सावन सुद एकादशी जी काई पारणो पट दिन जाव। आहार लेत तन वेदनाजी, देखी कोध च्यार पचखावें ॥ १४ ॥ बारस दिन उगयां पहलेजी, कह्यो पाचोरामजी ने सोय। आया प्रतें पूछो तुमेजी, एह उगमी तिथी कुण होय ॥ १५ ॥ दिन उदय सह जन प्रतेजी, स्वामी दर्श दिये हितकाज। नरनारी सह हर्ष थी जी, काई सेव्या मुनि गुण विहाज ॥ १६ ॥ सावन सुक्ला द्वादशी जी, बजे प्रात सात अनुमान। जन्म सिंह लग्न आयो पंडाजी, स्वामी पहुंता स्वर्ग विमान ॥ १७ ॥ नागरिक जन स्व परमतीजी, काई सह गुण जय जयकार। एहवो तपसी दुर्लभजी, काई उपजयो पंचम आर ॥ १८ ॥ मांडी खण्ड इकसठ तणीजी काई बाणो देव विमान। राज समाज सह मम ययाजी, जन पशीमी अनुमान ॥ १९ ॥ च्यार बजे गद मुलसनेजी, काई देखत बहुजन वृन्द। दाग अन्दन घृत खोपराजी, काई ससारिक एह द्वन्द ॥ २० ॥ तुम गुण प्रतिबिम्ब सह तणोजी, काई चकित दिल उरमान। पण्डित मरण थयो भलो जी, एह तीजी ढाल में जान ॥ २१ ॥

भावे लग विरला शूर। व्रत रस दिव्य रावता, रह्या कर्म रज थी दूर ॥ ७ ॥ वैराग्य मय उद्यान में, कांई विचर्‌या मुनि शुभ ध्यान। सज्झाय ध्यान सरोवरे, कांई झुल्या महामतिमान ॥ ८ ॥ विनय विवेक विचारना, कांई आप तणो सिरोकार। पाल्यो अधिक वैराग सूं खा, कांई व्रतराज ब्रह्मचार ॥ ९ ॥ आगम अर्थ नी धारणा, बहु वाचणा मन आन्तरिक। जाण्या सार सुख मुक्तना थी, कांई अनित्य जाण्या पुद्गलीक ॥१०॥ वचन रचन ईर्या विषे, कांई थर सीखो उपयोग। विगय बहुल पणे छोडताजो, कांई काटण भवभव रोग ॥ ११ ॥ ध्यावे जे तुम अहो निशाजी, कांई तेह परवल पुण्य जोग। चूरण चिन्तामणि समोजी कांई पूरण आश मनोग्य ॥ १२ ॥ श्रीजिन वीर वखाणियो, कांई धन धन्नो अणगार। गणि गुण तुम अनुमोदना कांई करो मन अधिक उदार ॥ १३ ॥ आनन्द करण शरण भलो, तुम जीवन पर उपगार। मन्त्राचर जिम नाम तुम, कांई भगत जने सुखकार ॥ १४ ॥ बालक मन जिम मात में, कांई लोलुप धन अभिलाष। पतिव्रता पिउ मन बसे, जिम स्वाम नाम उरवास ॥ १५ ॥ चातक स्वाती बुन्द नो, कुञ्जक दृढ और न मन। स्मरण मन मल ध्यावता, जिम कुञ्जर कदली वन ॥ १६ ॥ देखो

ध्यार कहि भलीजी, काई चाहत आत एक थाल।
शहर कलकत्ता मायनेजी, काई ए कही चौथी ढाल
॥ १७ ॥ पोह सुद दूज छियासिये, धुर तीस अयेजी
आज। सरस हर्ष गुण गाविया तुम मामाङ्गज नमराज
॥ २१ ॥



॥ धन्ना आप की सज्झाय । ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नन्दन। मनडे तो मानी रे नन्दन ताहरे ॥ १ ॥ तू अतहि वैरागी रे धन्ना धरमनो रागी मोरा नन्दन। म्हारो तो मनडो रे किम पतीआवसू ॥ २ ॥ दश दिशि दीसै रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नन्दन। अनुमति देता रे खोभ थई नहीं ॥ ३ ॥ बत्तीस नारी हो धन्ना, अतहि पियारो मो०। वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥४॥ बालक तो रमणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०। गजगति चाले रे चाल सुहामणी ॥ ५ ॥ ए घर मन्दिर हो धना, ए सुख सज्या, मो०। छोड बत्तीस धननो तू धणी ॥ ६ ॥ ए धन माणो रे धन्ना, वय पिण जाणो, मो०। भोगवी लिज्यो रे भोग सुहामणा ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहि छै सोहिलो, मो०। सुगम नहीं छै रे साध कहावणो ॥ ८ ॥ घर २ री भिक्षा हो धन्ना, गुरु तणी शिक्षा, मो०। कहणी रे रहणी नहीं